04 - बाल अपराध और सोशल मीडिया

05 - बांग्लादेश से आए लोगों को 'पहचान' का मामला

06 - आंधी-तूफान और बारिश का कहर : खेतों में भरा पानी, कटाई कार्य प्रभावित...

07- अब तो मैं भी लिखूंगा

A Daily News Magazine
भोपाल
सोमवार, 21 अक्टूबर, 2024

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष -22 अंक-53 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

पहली बात

मुफलिसी की सनसनी पर 'सोने' का सुनहरा सम्मोहन

उमेश त्रिवेदी
संपादक

9893032101

इन दिनों, जबकि सोने के भाव सातवें आसमान पर हैं, रोजमर्रा की जिंदगी में सोने की कही-अनकही कहानियों के कथानक में नए आयाम जुड़ते जा रहे हैं। प्राचीन काल मे भारत को 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था। यह नाम स्वतः सोने की महत्ता का स्थापित करने के लिए पर्याप्त है। भारत सहित सभी देशों की संस्कृतियों में सोना शुद्धता, सुन्दरता और उच्चतर सभ्यता का प्रतीक माना जाता है। यह प्यार और सम्मान का परिचायक है। मनुष्य के सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन में इसकी महती भूमिका के अलावा वैज्ञानिक अनुसंधान के क्षेत्र में भी इसकी उपयोगिता महत्वपूर्ण मानी जाती है। कई अनोखे गुणों वाला सोना एक असाधारण धातु है, जिसकी सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक महत्ता अदभुत और असंदिग्ध है। इसके अनोखे गुण इसे दुनिया में सबसे महत्वपूर्ण धातु के रूप मे अतुलनीय और अपूरणीय बनाते हैं।

अंतरिक्ष अन्वेषण से लेकर इलेक्ट्रॉनिक्स तक बड़े पैमाने पर सोनेका इस्तेमाल किया जाता है, क्योंकि यह बिजली का अच्छा संचालन करता है। स्मार्ट फोन से लेकर सैटेलाइट घटकों तक, सभी प्रकार के उपकरणों के निर्माण में प्रयुक्त होने वाली यह आदर्श धातु है। यह सबसे अधिक अध्ययन किए जाने वाले नैनोमटेरियल में शुमार होता है। इसे कई उत्पादों और उपकरणों के निर्माण में इसका उपयोग किया जाता है। सोने के नैनो कणों का उपयोग सालाना उत्पादित होने वाले अरबों रैपिड मेडिकल डायग्नोस्टिक परीक्षणों में किया जाता है। जिसमें कोविड-19 एंटीजन और एंटीबॉडी परीक्षण भी शुमार हैं।

इतिहास में दिखाया गया है कि भू-राजनीतिक संकटों के दौरान सोना की महत्ता और मोह में जबरदस्त इजाफा होता है, क्योंकि सोना सबसे ज्यादा सुरक्षित संपदा माना जाता है। वर्ष 1990-91 के दौरान खाड़ी युद्ध की अवधि में कुछ समय के दरम्यान सोने के भावों में काफी उछाल आया था। इसी तरह 2003 में इराक युद्ध की शुरूआत में पीले रंग का चमकदार सोने की कीमतें तेज कुलांचे भरने लगी थीं। फरवरी 2022 में रूस-यूक्रेन के बीच शुरू युद्ध की घटनाएं भी सोने की कीमतों को आसमान पर पहुंचाने के लिए जिम्मेदार मानी जाती हैं। इसी बीच इजरायल और ईरान के युद्ध ने सोने के भावों में आग लगाने का काम किया है। नतीजतन भारत में सोने की कीमतें सातवें आसमान पर है, भारत मे प्रति दस ग्राम सोना 75 हजार रूपये की सीमाओं को लांघकर अस्सी हजार तक पहुंचने के लिए लालायित है।

आसमानी भावों के बावजूद देश मे सोने की मांग में कोई कमी नजर नहीं आ रही है। भारत का बहुसंख्यक भौगोलिक इलाका कुल आबादी की 95 फीसदी जनता गरीबी और मुफलिसी में कराहों के आर्त्तनाद में डूबा है। इस परिप्रेक्ष्य में आम जनता के मनोमस्तिष्क में सोने की प्रगाढ़ चाह अनबुझे विरोधाभासों की इंगित करती महसूस होती है। ऐसे में सुलगती भूख की लपटों के सामने सोने की मादकता और जुनून भारत की सामाजिक और सांस्कृतिक संरचना के अजीबोगरीब चेहरे को उजागर करता है। इन विरोधाभासों को समझ पाना मुश्किल है कि किन परिस्थितियों और परिवेश में सोना मुफलिसी के कगार पर बैठी आम जनता की सामाजिक प्रतिष्ठा से जुड़ा मसला बन गया। यह प्रतिष्ठा ही सोने की कीमतों में बेशुमार उछाल का सबब है। देश का निर्धनतम व्यक्ति भी अपने घर में कुछ सोना रखना चाहता है। भले ही उसकी मात्रा एक ग्राम ही क्यों न हो? शायद इसी वजह से भारत में सोने की वार्षिक खपत कभी कोई कमी नहीं आती है।

देश की सामाजिक रगों में सोने के चमकीले गहनों की झंकार के तीव्र अंतर्प्रवाह चौंकाते हैं। भारत के गहरे अतीत में झांकने पर स्पष्ट होता है कि अनादि काल से सोना सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक रहा है। हिंदू परम्पराओं में महत्वपूर्ण माने जाने वाले 16 संस्कारों के तहत व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक सोने की महत्ता मानी जाती है। शादी-विवाह और सभी मांगलिक अवसरों पर सोने का दान या उपयोग पुण्य और प्रतिष्ठित कर्म माना जाता है।

22 कैरेट सोने के प्रति आसक्ति और भाव विव्हलता के वैश्विक इंडेक्स में भारत का स्थान काफी ऊंचा है। दुनिया के कुल दस देशों की रिजर्व बैंकों सोने के भंडारों के मामले मे भारत नौंवे क्रम पर आता है। किसी भी देश का स्वर्ण भंडार उस देश की आर्थिक मजबूती का परिचायक माना जाता है। इसके अलावा 'वर्ल्ड गोल्ड कौंसिल' के अनुसार भारत की महिलाएं दुनिया के कुल गोल्ड का 11 फीसदी हिस्सा आभूषणों के रूप मे पहनती हैं। भारत की महिलाओं के पास गहनों के रूप में 25 हजार टन से ज्यादा सोना जमा है। यह दुनिया के सबसे बड़े खजानों के रूप में माना जाता है।

सोने की खरीदी के मामले में भारत का क्रम दूसरा है। दुनिया सोने का सबसे बड़ा खरीदार चीन है। आजादी के समय भारत में प्रति 10 ग्राम सोने का भाव 88.62 रूपये था। सन् 2024 में सोने का भाव 80 हजार के पार जाने को लालायित हैं। आजाद भारत में सबसे सस्ता सोना वर्ष 1963 में 63.25 रूपये प्रति 10 ग्राम के भाव से बिका था

2024 की पहली तिमाही में सालाना आधार पर सोने की मांग में आठ प्रतिशत इजाफा आंका गया है। वर्ष 2023 की पहली तिमाही में भारत में सोने की मांग 126.3 टन थी, जो 2024 की पहली तिमाही में बढ़कर 136.6 टन हो गई थी। इस दरम्यान भारत में 95.5 टन सोने के गहने-आभूषण बने, जो पिछले वर्ष की पहली तिमाही की तुलना में चार प्रतिशत ज्यादा थे। याने इस बीच भारत के लोगों ने 91.9 टन सोने के गहने खरीदे थे।

सोने के व्यापार-व्यवसाय का यह आकार समाज में सोने की ललक को रेखांकित करता है। बेइंतिहा महंगाई के बावजूद देश और दुनिया में सोने का जादू बरकरार है। प्रति दस ग्राम अस्सी हजार के आसपास भावों की श्रृंखला दिवाली पर होने वाले सोने के व्यवसाय का आकार दर्शाने वाली है। धन-तेरस और दिवाली पर भारत में बेशुमार सोना बिकता है। पिछले साल 2023 में धनतेरस पर 42 टन सोना बिका था। इस दिन तीस हजार करोड़ रूपये का कारोबार हुआ था। सन् 201-22 में देश में धन तेरस पर 41 टन सोने का कारोबार हुआ था।

स्वर्ण व्यवसाय का यह वृहताकार अपने आप में काफी कुछ बयां करता है। महलों और तख्तों को ललकारती मुफलिसी के कैनवास में सोने की सुनहरे रंगों का सम्मोहन भारत के जनमानस की अवधारणाओं का अद्भुत रेखांकन है। यह मनोविज्ञान अमीरी-गरीबी के बीच पनपते विरोधाभासों को उत्प्रेरित और उद्वेलित करता सा महसूस होता है। इसके लिए भारत में रगों में दौड़ते स्वर्ण-प्रवाह के सांस्कृतिक और सामाजिक अधिमान्यताओं की परवरिश को भी समझना जरूरी है।

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

आग़ को दबाना उतना ही ठीक है
कि आग पर चढ़ा दी जाए इतनी सी
राख
थोड़ासा खंखोर दें और सुबह
जल जाएँ चूल्हा
यह सबसे बड़ी भूल होगी कि
राख पर खड़ी कर दें राख की
परत–दर–परत
कि राख पत्थर हो जाए और राख पर
खड़ा हो जाए राख का
सख्त पहाड़
राख में राख ही नहीं होती
राख की कोख में दबी होती है आग़
राख की परिभाषा इतनी भर नहीं
कि आग़ बुझ गई और हो गये राख
राख की बिरादरी में भी शामिल है
ज्वालामुखी।

– वसंत सकरगाए

प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में भारतीय सेना का मनोबल बढ़ाः मुख्यमंत्री डॉ. यादव

- शहीद की बहन–बेटी की शादी में सरकार देगी 51 हजार
- विदेशी हथियारों पर भारतीय सेना की निर्भरता को किया कम
- मध्यप्रदेश का इतिहास वीरता और साहस का इतिहास : एडमिरल दिनेश त्रिपाठी
- 3 ईएमई सेंटर में भूतपूर्व सैनिक सम्मान कार्यक्रम को किया संबोधित

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय सेना का मनोबल बढ़ा है। सेना को नवीन तकनीक के नवीनतम हथियार उपलब्ध कराए जा रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने विदेशी हथियारों पर भारतीय सेना की निर्भरता कम करते हुए स्वदेशी लड़ाकू विमान और हथियार निर्माण पर विशेष ध्यान दिया है। अब हम सिर्फ युद्ध का जवाब ही नहीं देते बल्कि घर में घुसकर मारते हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव 3 ईएमई सेंटर भोपाल में भूतपूर्व सैनिक सम्मान कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भूतपूर्व सैनिकों की देश भक्ति और समर्पण में वर्तमान सेना की नींव रखी है। जब भी मौका पड़ा आप सभी ने वीरता और शौर्य का परिचय देकर भारतीय लोकतंत्र की रक्षा की है। भारत के साथ और भी देश आजाद हुए थे। लेकिन वर्तमान समय में विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र यदि जीवित है तो यह भारतीय सेना के कारण ही संभव हुआ है। सेना ने देश की सीमाओं की रक्षा कर लोकतंत्र को जीवित रखा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने भारतीय सेना के भूतपूर्व सैनिकों के अविस्मरणीय योगदान के लिए प्रदेश की जनता की ओर से अभिनंदन किया।

मध्यप्रदेश सैनिक कल्याण में सदैव अग्रणी– शहीद की बहन-बेटी की शादी में सरकार देगी 51 हजारः भूतपूर्व सैनिकों की रैली में सीएम ने की घोषणा- मां को भी प्रतिमाह 10 हजार देंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश सैनिक कल्याण में सदैव अग्रणी रहा है। यहाँ सेवारत एवं सेवानिवृत्त सैनिकों के लिये विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का सफल संचालन हो रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सेना और उनके परिवारों के लिए कल्याणकारी निर्णयों की जानकारी देते हुए बताया कि युद्ध एवं सैनिक कार्रवाई में शहीद होने वाले सेना/केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल के शहीदों के आश्रितों को एक करोड़ रुपये की सहायता राशि और एक आश्रित को शासकीय सेवा में विशेष नियुक्ति दी जाएगी।

भूतपूर्व सैनिकों को शासकीय नौकरियों में आरक्षण

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा किप्रदेश में पूर्व सैनिकों के बच्चों को मेडिकल, इंजीनियरिंग, टेक्निकल एजुकेशन, लॉ सहित विभिन्न कोर्सेस में आरक्षण दिया जाता है। सभी सरकारी विभागों के ग्रुप सी एवं डी पदों पर भूतपूर्व सैनिकों को आरक्षण के साथ जिला सैनिक कल्याण कार्यालयों में सहायक ग्रेड-3 स्तर पर कर्मचारियों के पदों में वृद्धि करने कानिर्णय लिया गया है। शासन की योजनाओं के अंतर्गत जमीन के लिए सैनिकों को आरक्षण दिया जाता है।

राजस्थान के धौलपुर में भीषण सड़क हादसा

12 की मौत, तेज रफ्तार बस ने टेंपो को मारी टक्कर

- शादी समारोह से लौट रहा था परिवार

धौलपुर (एजेंसी)। धौलपुर में नेशनल हाईवे-11बी पर तेज रफ्तार बस ने टेंपो को टक्कर मार दी है। हादसे में 12 लोगों की मौत हो गई, जबकि 1 बच्चा घायल हो गया। उसे धौलपुर जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जानकारी के अनुसार, सभी लोग शादी समारोह से लौट रहे थे।

मरने वालों में 8 बच्चे शामिल हैं। हादसा इतना भीषण था कि टेंपो के परखच्चे उड़ गए। बस का भी आगे का हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया। मौके पर पहुंची पुलिस ने सभी डेड बॉडी को बाड़ी अस्पताल की मॉर्च्युरी में रखवाया। हादसा शनिवार रात करीब 11 बजे बाड़ी उपखंड में हुआ। जानकारी के मुताबिक, बाड़ी शहर की करीम कॉलोनी, गुमट के रहने वाले परिवार के करीब 15 लोग सरमथुरा इलाके के बरौली में बहन के घर भात भरने गए थे। शादी समारोह में शामिल होकर देर रात को सभी टेंपो से बाड़ी लौट रहे थे। रात करीब 11 बजे नेशनल हाईवे-11 बी पर सुन्नीपुर गांव के पास धौलपुर से जयपुर जा रही तेज रफ्तार बस ने टेंपो को टक्कर मार दी। हादसे के बाद मौके पर चीख पुकार मच गई। इस दौरान हाईवे से गुजर रहे दूसरे वाहन सवार मौके पर रुके और पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने टेंपो सवार लोगों को बाड़ी अस्पताल पहुंचाया।

म.प्र. में बीजेपी अध्यक्ष पद के लिए शुरू हुई रेस !

- दावेदारों में पूर्व गृहमंत्री समेत कई दिग्गज के चल रहे नाम
- बीजेपी ने विवेक शेजवलकर को नियुक्त किया चुनाव प्रभारी

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में वीडी शर्मा की जगह कौन लेगा? इस सवाल का जवाब खोजने के लिए बीजेपी ने संगठन चुनाव के लिए ग्वालियर के पूर्व सांसद विवेक शेजवलकर को प्रदेश चुनाव अधिकारी नियुक्त किया है। बीजेपी के सदस्यता अभियान का दूसरा चरण 15 अक्टूबर को समाप्त हो गया है। सदस्यता अभियान के बाद अब संगठन चुनाव को लेकर अटकलें शुरू हो गई हैं। विवेक शेजवलकर की नियुक्ति के बाद माना जा रहा है कि संगठन चुनाव के लिए प्रक्रिया जल्द शुरू की जाएगी। वीडी शर्मा की जगह लेने के लिए बीजेपी के कई कद्दावर नेता लॉबिंग कर रहे हैं। दावेदारों में कई सांसद और पूर्व गृहमंत्री का भी नाम शामिल है। संगठन चुनाव के लिए बीजेपी ने विवेक शेजवलकर को प्रदेश चुनाव अधिकारी नियुक्त किया है। वहीं, जीतू जिराती, अर्चना चिटनीस, रजनीश अग्रवाल और डॉ प्रभुलाल जाटवा को

सह चुनाव अधिकारी नियुक्त किया है। 31 अक्टूबर तक बीजेपी का सक्रिय सदस्यता अभियान पूरा होगा। उसके बाद यह कमेटी राज्य की बूथों पर बूथ समितियों का गठन करेगी। इसके बाद मंडल अध्यक्षों का चुनाव होगा फिर जिला अध्यक्ष और उसके बाद प्रदेश अध्यक्ष का चुनाव कराया जाएगा।

ममता की डॉक्टरों से अपील

अनशन खत्म करें

कोलकाता (एजेंसी)। कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज में ट्रेनी डॉक्टर के रेप-मर्डर के विरोध में अनशन कर रहे डॉक्टरों से बंगाल सीएम ममता बनर्जी ने अनशन खत्म करने की अपील की है। उन्होंने कहा कि डॉक्टरों की अधिकतर मांगें पूरी कर दी गई हैं, हालांकि लेकिन स्वास्थ्य सचिव को हटाने की मांग को अस्वीकार कर दिया। ममता ने कहा- हर किसी को विरोध का अधिकार है, लेकिन इससे स्वास्थ्य सेवाएं प्रभावित नहीं होनी चाहिए। किसी विभाग में हर किसी को एक साथ हटाना संभव नहीं है। हमने पहले ही DHS और DME को हटा दिया है, इसलिए राजनीति से ऊपर उठकर काम पर लौटें। ट्रेनी डॉक्टर के लिए न्याय और मेडिकल सुविधाओं में सुधार की मांग करते हुए जूनियर डॉक्टर पिछले 15 दिनों से भूख हड़ताल पर हैं।

कश्मीर मैराथन में सीएम उमर 2 घंटे में 21 किमी दौड़े

- कहा-स्ट्रेस मिटाने के लिए ड्रग्स की जरूरत नहीं, दौड़ काफी है

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर यूनियन टैरिटरी के पहले मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के 4 दिन बाद रविवार को उमर अब्दुल्ला कश्मीर हाफ मैराथन रेस में दौड़े। श्रीनगर के पोलो स्टेडियम से मैराथन को हरी झंडी दिखाने के बाद उन्होंने 21 किलोमीटर की दौड़ 2 घंटे में पूरी की। उमर अब्दुल्ला ने एक्स पर लिखा। आज खुद से खुश हूं। स्ट्रेस मिटाने के लिए ड्रग्स की जरूरत नहीं होती है। एक अच्छी दौड़ उत्साह और जोश से भरने के लिए काफी होती है, चाहे वह एक किलोमीटर की दौड़ हो या एक मैराथन हो। नशा मुक्त जम्मू और कश्मीर के लिए दौड़ना शुरू करना चाहिए।

उमर ने कहा- 21 किलोमीटर की दौड़ 5 मिनट 54 सेकेंड प्रति किलोमीटर की औसत गति से पूरी की। अपने जीवन में कभी 13 किलोमीटर से ज्यादा नहीं दौड़ा था। आज मैं बस चलता रहा, अपने जैसे दूसरे शौकिया स्प्रिटंर्स के उत्साह से प्रेरित होकर दौड़ता रहा। कोई ट्रेनिंग नहीं थी। कोई प्लानिंग नहीं थी। रास्ते में सिर्फ एक केला और एक-दो खजूर खाए। उमर बोले- कश्मीर में दिल्ली से एयर क्वालिटी बेहतर पोस्ट में दिल्ली में हुई हाफ मैराथन को लेकर जानकारी दी गई थी। उस पोस्ट में एक शख्स कहते नजर आ रहा था कि दिल्ली में काफी प्रदूषण है।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 36.3 °c

न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ सोमवार,21 अक्टूबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

पराली जलाने पर हरियाणा सरकार का सख्त ऐक्शन

चंडीगढ़ (एजेंसी)। हरियाणा में कृषि और किसान कल्याण विभाग ने 38 किसानों को अगले 2 खरीद सत्रों में एमएसपी पर फसल बेचने से रोक लगा दी है। पराली जलाने पर अंकुश लगाने के मकसद से ये कड़ा कदम उठाया गया है। विभाग के निदेशक की ओर से जारी सर्कुलर के बाद यह कार्रवाई शुरू की गई, जिसमें फसल अवशेष

जलाने वालों के खिलाफ सख्त कदम उठाने का निर्देश दिया गया है। इन किसानों के मेरी फसल, मेरा ब्योरा रिकॉर्ड में रेड एंट्री दर्ज की गई है। इससे ई-खरीद पोर्टल के जरिए फसल बेचने पर रोक लग जाएगी, जो एमएसपी पर खरीद सुनिश्चित करती है। विभाग की ओर से जो सर्कुलर जारी किया गया, उसमें कड़ी कार्रवाई की जरूरत पर जोर दिया गया है। इसमें पराली जलाने वाले किसानों के खिलाफ एफआईआर दर्ज करना और 2 सत्रों के लिए खरीद प्रक्रिया से बाहर करने की खातिर चिह्नित करना शामिल है। ऐसी घटनाओं को रोकने में लापरवाही करने वाले सरकारी अधिकारियों को नतीजे भुगतने की चेतावनी दी।

इजरायल-ईरान युद्ध से पंजाब के किसान परेशान!

- पंजाब से बासमती चावल के निर्यात पर असर, हो रहा भारी नुकसान

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पंजाब के बासमती चावल निर्यातकों के लिए ईरान और इजरायल के बीच चल रहा संघर्ष एक बड़ी मुसीबत बन गया है। इस वजह से बड़े ऑर्डर रुक गए हैं और बासमती 1509 के दाम पिछले कुछ हफ्तों में काफी गिर गए हैं। ईरान ने अपनी स्थानीय फसल को समर्थन देने के लिए 21 अक्टूबर से 21

दिसंबर तक बासमती चावल के आयात पर रोक लगा दी है। साथ ही, भारत में बीमा कंपनियों ने ईरान को होने वाले निर्यात को कवर करना बंद कर दिया है। इस अनिश्चितता के कारण चावल निर्यातकों ने ऑर्डर कम कर दिए हैं और इसका खामियाजा किसानों को भुगतना पड़ रहा है। बासमती के दाम लगभग 800 रुपये प्रति क्विंटल गिर गए हैं। कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण के अनुसार, भारत के 48,000 करोड़ रुपये के बासमती निर्यात में पंजाब का हिस्सा 40 फीसदी है। इसमें से लगभग 25 फीसदी बासमती ईरान को निर्यात की जाती है। 1718 किस्म के चावल की आवक शुक्रवार को माजा क्षेत्र की अनाज मंडियों में शुरू हो गई।

बारामूला और उरी में सेना ने चलाया बड़ा ऑपरेशन

श्रीनगर (एजेंसी) जम्मू-कश्मीर के उरी सेक्टर में आतंकियों की घुसपैठ नाकाम करने के बाद अब सेना ने बारामुला और उरी में सर्च ऑपरेशन लॉन्च कर दिया है। चिनार कॉर्प्स ने बताया है कि खुफिया इनपुट्स से एलओसी से सटे इलाके में घुसपैठ की कोशिश की जानकारी मिली थी। इसके बाद सेना और जम्मू-कश्मीर पुलिस ने इस इलाके पर बड़े स्तर पर सर्च ऑपरेशन चलाया है।

संदिग्ध गतिविधियों का पता चलने के बाद जब सुरक्षाबलों ने ललकारा तो आतंकियों ने फायरिंग भी शुरू कर दी। सुरक्षाबल आतंकियों की गोलीबारी का मुंहतोड़ जवाब दे रहे हैं। बता दें कि इससे पहले घुसपैठिए एलओसी के कमलकोट इलाके में घुसने के फिराक में थे। सेना को खुफिया इनपुट्स से इसकी जानकारी मिल गई थी। सुरक्षाबलों ने आतंकियों को मार गिराया। 18 अक्टूबर को शोपियां में आतंकियों ने एक गैर कश्मीरी को निशाना बनाया था। यहां आतंकियों ने गोली मारकर युवक की हत्या कर दी थी।

चीन के दबदबे को खत्म करने की तैयारी में भारत

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत ने अमेरिका के साथ खनिज साझेदारी समझौते की पेशकश की है, जिससे इलेक्ट्रिक वाहन जैसे उद्योगों को अमेरिकी बाजार में कुछ लाभ मिलेगा। वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने

अमेरिका के साथ की खनिज साझेदारी समझौते की पेशकश

यह जानकारी दी। भारत ने इस महीने की शुरुआत में मंत्री की यूएस यात्रा के दौरान यह मुद्दा उठाया था। साथ ही, दोनों देशों ने अहम खनिज आपूर्ति श्रृंखला में सहयोग बढ़ाने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। कोबाल्ट, तांबा, लिथियम, निकल और

दुर्लभ पृथ्वी जैसे महत्वपूर्ण खनिज पवन टर्बाइन से लेकर इलेक्ट्रिक कारों तक, स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकियों में बड़ी भूमिका निभाते हैं। खनिज क्षेत्र में चीन के बढ़ते दबदबे पर लगाम लगाने के मकसद से इसे काफी अहम माना जा रहा है। भारत और अमेरिका के अलावा ऑस्ट्रेलिया व जापान भी महत्वपूर्ण खनिजों के सप्लाई चेन को सुरक्षित करने पर काम कर रहे हैं। इसमें खनिजों के भंडार, उनकी खुदाई और प्रॉसेसिंग से लेकर फाइनल यूज तक की प्रक्रिया शामिल है। फिलहाल प्रोडक्शन फैसिलिटी पर चीन का कंट्रोल है।

अमेरिका से इजराइल की खुफिया जानकारी हो गई लीक

- इनमें ईरान पर इजराइली पलटवार से जुड़े सीक्रेट डॉक्यूमेंट, टेलीग्राम पर एक चैनल ने पोस्ट किए, आईडीएफ हुई अलर्ट

वाशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका से इजराइल के सीक्रेट डॉक्यूमेंट लीक हो गए हैं। इसमें ईरान पर हमले की प्लानिंग थी। आईडीएफ की रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिका ने इस मामले में जांच भी शुरू कर दी है। एजेंसी ने एक अमेरिकी अधिकारी के हवाले से लिखा कि इस तरह से डॉक्यूमेंट का लीक होना अमेरिका के लिए गहरी चिंता का विषय है। इन डॉक्यूमेंट पर 15 और 16 अक्टूबर की तारीख लिखी हुई है। इन्हें 18 अक्टूबर, शुक्रवार को टेलीग्राम पर मिडिल ईस्ट स्पेक्टेटर नाम के चैनल ने पोस्ट किया है। इन पर टॉप सीक्रेट लिखा हुआ है। साथ में ये भी बताया गया कि ये डॉक्यूमेंट सिर्फ अमेरिका और उसके सहयोगी देश ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, न्यूजीलैंड और ब्रिटेन के लिए हैं। ये सभी देश खुफिया नेटवर्क फाइव आइज का हिस्सा हैं। ईरान ने इजराइल पर 1 अक्टूबर को 180 मिसाइलों से हमला किया था।

असम में 6 करोड़ रुपए की हेरोइन जब्त, 2 गिरफ्तार

मादक पदार्थों की तस्करी वाले गिरोह का हुआ भंडाफोड़

दिसपुर (एजेंसी)। असम पुलिस के स्पेशल टास्क फोर्स ने मादक पदार्थों की तस्करी करने वाले गिरोह का भंडाफोड़ किया है। इनके पास से 6 करोड़ रुपये मूल्य की हेरोइन की जब्ती की गई है। साथ ही, 2 लोगों की गिरफ्तारी भी हुई है। बताया गया कि मणिपुर और असम के बीच इनका नेटवर्क काम करता था। गुप्त सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए एसटीएफ ने ऑपरेशन चलाया। मणिपुर के कांगपोकपी से असम के निचले जिलों में ले जाई जा रही ड्रग्स की खेप बरामद कर ली गई। रिपोर्ट के मुताबिक, गुवाहाटी में मुर्तजा अहमद उर्फ भुलू को डिलीवरी के लिए ये खेप भेजी जा रही थी जिसे शनिवार रात

पकड़ लिया गया। पुलिस सूत्रों के अनुसार, भूलू को टाटा नेक्सन से यात्रा करते समय अमीनगांव में पकड़ लिया गया था। जांच करने पर हेरोइन से भरे 49 साबुन के डिब्बे बरामद किए गए, जिनका वजन कुल 637 ग्राम था। इन नशीले पदार्थों की बाजार में कीमत 6 करोड़ रुपये आंकी गई है। भुलू की गिरफ्तारी के बाद डोकमोका के ट्रक चालक प्रशांत टोप्पो का पता लगाया गया और फिर उसे भी हिरासत में ले लिया गया। आरोप है कि टोप्पो ने ही मणिपुर से हेरोइन ट्रांसपोर्ट किया था। हिरासत में लेने के दौरान वह कामरूप जिले के चांगसारी में एक पार्किंग फैसिलिटी पर था।

प्रियंका 23 को वायनाड में दाखिल करेंगी नामांकन

वायनाड (एजेंसी)। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा 23 अक्टूबर को वायनाड लोकसभा सीट से नामांकन दाखिल करेंगी। इस दौरान राहुल गांधी भी मौजूद रहेंगे। नामांकन के बाद प्रियंका रोड शो भी निकालेंगी। यह प्रियंका गांधी का पहला लोकसभा चुनाव होगा। उनके खिलाफ भाजपा ने नाव्या हरिदास को उतारा है। लोकसभा चुनाव 2024 में राहुल गांधी ने वायनाड और यूपी की रायबरेली लोकसभा सीट से जीत हासिल की थी। उन्होंने गांधी परिवार की पारंपरिक रायबरेली सीट को चुना था और वायनाड छोड़ी थी।

एआई से मिलिट्री ऑपरेशन में क्रांति की क्षमता:रक्षा मंत्री

राजनाथ बोले- इनके पास डिसीजन मेकिंग सिस्टम

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) में मिलिट्री ऑपरेशन में क्रांति लाने की क्षमता है। एआई पहले से अनुमान लगाकर विश्लेषण कर सकता है।

उसके पास स्वतंत्र डिसीजन मेकिंग सिस्टम भी है। राजनाथ सिंह शनिवार को दिल्ली में आयोजित 62वें राष्ट्रीय रक्षा महाविद्यालय पाठ्यक्रम दीक्षांत समारोह में बोल रहे थे। उन्होंने कहा- आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआई) में आप (जनता) लीडर होंगे, जिन्हें ये तय करना होगा कि इस तकनीक का फायदा कहां और कैसे उठाया जाए। आज की परस्पर जुड़ी दुनिया में मिलिट्री लीडर्स को जियो-पॉलिटिक्स, इंटरनेशनल रिलेशन और ग्लोबल सिक्योरिटी अलायंस की परेशानियों की मजबूत समझ होना बहुत जरूरी है। सिंह ने कहा कि मिलिट्री लीडर्स के लिए गए फैसलों के दूरगामी रिजल्ट हो सकते हैं, जो युद्ध के मैदान से आगे बढ़कर डिप्लोमेसी, इकोनॉमिक्स, इंटरनेशनल लॉ के दायरे में भी फैल सकते हैं। ऐसे में इन क्षेत्रों में पॉलिटिकल सीख बहुत जरूरी है।

स्वयंभू ज्योतिर्लिंग की प्रमाणिकता के लिए सर्वे जरूरी

- ज्ञानवापी के बंद तहखानों के सर्वे कराने पर फैसला सुरक्षित

वाराणसी (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश में वाराणसी की ज्ञानवापी मस्जिद के बंद तहखानों समेत पूरे परिसर, खासकर केंद्रीय गुंबद के नीचे टनल बनाकर एएसआई से सर्वे कराने की हिंदू पक्ष की अर्जी पर शनिवार को सुनवाई पूरी हो गई। करीब छह महीने तक सुनवाई चली। अदालत ने आदेश के लिए 25 अक्टूबर की तिथि नियत की है। सिविल जज (सीनियर डिविजन, फास्ट ट्रैक) युगुल शंभू की अदालत में बंद तहखानों समेत पूरे परिसर का एएसआई से सर्वे कराने की अर्जी पर शनिवार को हुई सुनवाई में अंजुमन इंतजामिया मसाजिद कमिटी के अधिवक्ताओं ने हिंदू पक्ष यानी वाद मित्र की

ओर से उठाए गए बिंदुओं पर पक्ष रखा। अधिवक्ता रईस अहदम, एखलाक अहमद और मुमताज अहमद ने कहा कि अदालत के पूर्व आदेश के अनुपालन में एएसआई ने आराजी नंबर 9130 का सर्वे कर रिपोर्ट दाखिल कर दी है। ऐसे में अतिरिक्त सर्वे की मांग का औचित्य नहीं है। इस मुकदमे में हाईकोर्ट ने भी अपने आदेश में अतिरिक्त सर्वे का निर्देश नहीं दिया है। एएसआई सर्वे रिपोर्ट पर हिंदू पक्ष ने न कोई आपत्ति दाखिल की है और न ही अभी तक अदालत में इस पर सुनवाई हुई है। पहले हुए सर्वे रिपोर्ट के डिस्पोजल के बिना अतिरिक्त सर्वे कराने की हिंदू पक्ष की ओर से अर्जी देना कानूनन गलत है। एजेंसी यह साफ कर चुकी है कि 50-60 फीट गहराई तक सर्वे किया जा सकता है। ऐसे में केंद्रीय गुंबद के नीचे सौ फीट गहराई में सर्वे का सवाल नहीं उठता है।

यूएन में भारत के लिए रूस ने फिर दिखाई दोस्ती

मॉस्को (एजेंसी)। रूस ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता का समर्थन किया है। रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने कहा है कि भारत को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य होना चाहिए। रूसी मीडिया से बात करते हुए उन्होंने इसे वैश्विक बहुमत और समावेश के लिए जरूरी बताया। रूसी विदेश मंत्री ने कहा, भारत और ब्राजील जैसे देशों और अफ्रीका के प्रतिनिधियों को लंबे समय से सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य होना चाहिए था। वैश्विक बहुमत का प्रतिनिधित्व और समावेश सुनिश्चित करने के लिए यह आवश्यक है।

अब जयपुर में भी एमपी और यूपी वाला ऐक्शन

- मंदिर में संघ कार्यकर्ताओं पर हमला करने वालों के घर गरजा बुलडोजर

जयपुर (एजेंसी)। जयपुर के मंदिर में 10 आरएसएस कार्यकर्ताओं पर चाकू से वार करने के मामले के बाद बुलडोजर ऐक्शन सामने आया है। पुलिस ने आरोपी पिता-पुत्र के घर पर बुलडोजर चला दिया है। पुलिस ने मामले के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि एक मंदिर में जागरण प्रसाद वितरण का कार्यक्रम चल रहा था। इसी दौरान पास में रहने वाले पिता-पुत्र आए और कुछ देर चाकूसे हमला कर दिया। उन्हें देर रात चल रहे कार्यक्रम से परेशानी थी। इस वारदात के बाद अब अवैध अतिक्रमण को हटाने के लिए आरोपी नसीब चौधरी के घर पर बुलड़ोजर चल रहा है। इस मामले में नसीब और उसका बेटा पहले ही गिरफ्तार हो चुके हैं। बताया जा रहा है कि उन्होंने मंदिर की जमीन पर कब्जा कर 2 कमरों का घर बना लिया था। इसी अवैध अतिक्रमण को हटाने के लिए बुलडोजर ऐक्शन लिया गया है। बता दें, जयपुर में करणी विहार इलाके के एक मंदिर में खीर वितरण कार्यक्रम के दौरान कुछ लोगों के हमले में आरएसएस से जुड़े 10 लोग घायल हो गए थे। पुलिस ने बताया कि इस संबंध में दो लोगों को हिरासत में लिया गया है। उसने बताया कि गुरुवार रात शरद पूर्णिमा के अवसर पर मंदिर में जागरण के बाद जब श्रद्धालुओं के बीच प्रसाद के रूप में खीर वितरित की जा रही थी, तभी पड़ोस में रहने वाले दो लोगों ने देर रात कार्यक्रम करने पर आपत्ति जताई। पुलिस ने बताया कि इस मामले पर कहा-सुनी होने के बाद आरोपियों ने अन्य लोगों को बुलाया और वहां मौजूद लोगों पर हमला कर दिया।

देश में विस्फोटक बनाने वाली कंपनियों की बम-बम

दुनियाभर में बढ़ गई गोला-बारूद की मांग, भारत की बल्ले-बल्ले

नागपुर बम मार्केट में जबरदस्त उछाल, हजारों करोड़ का है ऑर्डर

नागपुर (एजेंसी)। दुनियाभर में कई देशों के बीच चल रहे तनाव और युद्ध का फायदा विस्फोटक और गोला-बारूद बनाने वाली कंपनियों को मिल रहा है। नागपुर में भी विस्फोटक बनाने वाली कंपनियों की चांदी हो गई है। इन कंपनियों को 3 हजार करोड़ का ऑर्डर मिला है और अब तक 1 हजार करोड़ का माल सप्लाई भी हो चुका है। खास बात यह है कि यहां खरीदार रूस और यूक्रेन नहीं बल्कि बुल्गारिया, स्पेन, जर्मनी, दक्षिण अफ्रीका, वियतनाम, ब्रीजील, पोलैंड और सऊदी अरब जैसे देशों के लोग हैं। हालांकि यह भी हो सकता है कि खरीदने के बाद इस गोला बारूद और हथियारों की सप्लाई कहीं और की जाती हो। इस मार्केट में सबसे ज्यादा मांग 155एमएम, होवित्जर गन, 40 एमएम शोल्डल फायर्ड रॉकेट की है। एक रिपोर्ट के मुताबिक पिछले तीन महीने में नागपुर से 900 करोड़ से ज्यादा के कारतूस, रॉकेट और बम

सप्लाई हो चुके हैं। इसके अलावा 3 हजार करोड़ से ज्यादा का ऑर्डर मिला है। इसमें कच्ची बारूद का ऑर्डर भी शामिल है। वहीं नागपुर की कंपनियों का दावा है कि यहां से एक कारतूस भी युद्धग्रस्त देशों को सप्लाई नहीं हुआ है। दूसरे देशों के खरीदार एंड यूज सर्टिफिकेट जारी करते हैं जिसके आधार पर ही भारत में निर्माताओं को सरकार से गोला-बारूद और हथियार बेचने का लाइसेंस मिलता है। वहीं कुछ देशों में इन सामानों का निर्यात प्रतिबंधित भी है। नागपुर के निर्माताओं ने कहा कि युद्धग्रस्त देशों से मुनाफा कमाने की नीति भारत के उद्योग की नहीं है। नागपुर से निर्यात होने वाले नए हथियारों में बम और ग्रेनेड शामिल हैं। रिपोर्ट के मुताबिक अप्रैल से जून तक नागपुर से 770 करोड़ के बम सप्लाई किए जा चुके हैं। पिछले वित्त वर्ष में चंद्रपुर जिले से 458 करोड़ के गोला-बारूद सप्लाई किए गए थे। इस जिले से अप्रैल से जून तक 171 करोड़ के बम बाहर भेजे जा चुके हैं। यांत्रा इंडिया लिमिडेड ने बोफोर्स गन का प्रोडक्शन बढ़ा दिया है। वहीं दूसरी सरकारी कंपनी म्यूनिशन्स इंडिया लिमिटेड ने विस्फोटक, कारतूसों का प्रोडक्शन बढ़ाया है। बड़ी मात्रा में कच्चा माल भी सप्लाई कर रही हैं।

आयुक्त ने नगर निगम से पूछा

कलियासोत के कैचमेंट में निर्माण पर क्या किया; विधानसभा में मंत्री दे चुके हैं कार्रवाई का आश्वासन

भोपाल (नप्र)। कोलार में कलियासोत नदी के 33 मीटर दायरे में प्रतिबंध के बावजूद हुए निर्माणों को बिल्डिंग परमिशन देने वाले नगर निगम की बिल्डिंग परमिशन शाखा के जिम्मेदारों के खिलाफ कार्रवाई की जानी है। लेकिन, अब तक नहीं की गई है। जबकि, कार्रवाई करने का आश्वासन विभागीय मंत्री 2022 में विधानसभा में दे चुके हैं। ऐसे में राजस्व विभाग की ओर से नदी के दायरे का सीमांकन किया गया। इस दौरान 250 से ज्यादा निर्माण प्रतिबंधित क्षेत्र में पाए गए। अब खुद आयुक्त नगरीय विकास भरत यादव ने नगर निगम कमिश्नर हरेंद्र नारायण को पत्र लिखकर सात दिनों में कार्रवाई की जानकारी उपलब्ध कराने को कहा है। 15 अक्टूबर को जारी यह पत्र 16 अक्टूबर को नगर निगम में रिसीव किया गया। अब बिल्डिंग परमिशन शाखा में इससे संबंधित जानकारी जुटाई जा रही है।

इसलिए मांगी जा रही जानकारी-विधानसभा सत्र के दौरान दिए गए किसी भी आश्वासन का उत्तर विधानसभा में शासकीय आश्वासनों संबंधी समिति की बैठक में प्रस्तुत किया जाता है। यही वजह है कि नगर निगम की ओर से बिल्डिंग परमिशन जारी करने वाले अधिकारियों के खिलाफ की गई कार्रवाई के संबंध में जानकारी मांगी गई है।

रहवासियों का सवाल हमारी क्या गलती?

कलियासोत नदी के 33 मीटर दायरे में बिल्डरों ने मल्टी बनाकर फ्लैट बेचे हैं। बिल्डरों ने नगर निगम समेत तमाम जरूरी अनुमतियां दिखाकर इन फ्लैट की बिक्री की। जब सीमांकन किया तो ये फ्लैट कार्रवाई की जद में आ गए। ऐसे में लोगों ने तर्क दिया कि जब उन्होंने फ्लैट खरीदे तो तमाम परमिशन देखकर खरीदे। अगर परमिशन ही गलत दी गई तो इसमें हमारी क्या गलती है।

मामले में क्या स्टेटस है, पता कर रहे हैं

इस मामले में क्या स्टेटस है, इसकी जानकारी जुटाई जा रही है। नगर निगम कोई भी परमिशन देता है, वह टीएनसीपी की परमिशन के बाद ही देता है। ऐसे में यह देखना है कि क्या टीएनसीपी की परमिशन के पहले तो परमिशन नहीं दी गई।

- अनूप गोयल, सीसीपी, नगर निगम

सर्वे कराया, अगले महीने होंगे शुरू

शहर में सांची दूध सप्लाई के लिए 5 नए रूट बनेंगे

भोपाल (नप्र)। शहर की हर कॉलोनी व इलाके में सांची दूध की सप्लाई के लिए भोपाल दुग्ध संघ पांच नए रूट बनाएगा। यह नए रूट शहर चारों दिशाओं से सटे इलाकों के लिए बनाए जाएंगे। दुग्ध संघ के मुख्य कार्यपालन अधिकारी आरपीएस तिवारी ने बताया कि हमने इसके लिए बाकायदा सर्वे कराया है। पिछले तीन-चार साल में शहर से सटे इलाकों में 100 से ज्यादा नई कॉलोनियां डेवलप हुई हैं।

इन सभी कॉलोनी के रहवासियों को समय पर दूध उपलब्ध कराना हमारी पहली प्राथमिकता है। इन पांच नए रूट में नीलबड़, रातीबड़ के आगे एक रूट, नरेला शंकरी, कोकता इलाके से आग दो रूट, न्यू जेल रोड से आगे एक रूट, भैंसाखेडी से एक रूट मिलाकर पांच रूट बनाए जाएंगे। इसके लिए तैयारी की जा रही है। पहले से तय जो पुराने रूट हैं, उनसे सटे नए रूट पर दूध सप्लाई की मात्रा बढ़ाई जाएगी। ये अगले महीने से शुरू हो जाएंगे।

दीपावली पर प्रदूषण नियंत्रण का एक्शन प्लान

ग्रीन पटाखे और पानी के छिड़काव से सुधारेंगे शहर की हवा

भोपाल (नप्र)। भोपाल में प्रदूषण नियंत्रण के लिए पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड (एमपीपीसीबी) के साथ 5 अन्य विभाग मिलकर काम करेंगे। खासकर दीपावली के समय। दरअसल, बीते महीने एयर क्वालिटी इंडेक्स की रैंकिंग में भोपाल एक पायदान खिसककर 5वें से छठवें में आ गया है। इसके चलते चिंता का विषय यह रहा कि पीएम-10 को कम कैसे किया जाए।

नतीजतन 5 विभागों ने मिलकर एयर क्वालिटी सुधारने के लिए एक्शन प्लान बनाया है। इन विभागों का प्रमुख काम होगा सड़क पर वाहनों का दबाव कम करना, ग्रीन पटाखों को बढ़ावा देना और जगह-जगह पानी का छिड़काव कर पीएम-10 को नियंत्रित रखना। 2019 में शुरू हुए नेशनल क्लीन एयर प्रोग्राम के तहत किए गए छोटे-छोटे प्रयासों से स्थिति में सुधार की कवायद जारी है।

इसके लिए केंद्र ने नगरीय निकायों को ग्रांट भी दी है ताकि एक्यूआई सामान्य बना रहे। सड़क किनारे उड़ने वाली धूल को नियंत्रित करने के लिए पेविंग ब्लॉक लगाने के साथ अधिक प्रदूषण वाले इलाकों में पानी का छिड़काव किया जाएगा। ई रिक्शा और सीएनजी वाहनों का उपयोग बढ़ाया जाएगा।

7 स्थानों पर एयर क्वालिटी की निगरानी की जाएगी

अक्टूबर से वायु प्रदूषण बढ़ता है। नवंबर और दिसंबर में खतरनाक स्तर तक प्रदूषण पहुंच जाता है। दीपावली से पहले शहर में वायु प्रदूषण को कम करने के लिए इस बार विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। शहर के 7 स्थानों पर वायु गुणवत्ता की निगरानी की जाएगी, इसमें 4 स्थानों पर मैन्युअल निगरानी और 3 स्थानों पर कंटीन्युअस ऑटोमेटेड स्टेशन लगाए गए हैं।

प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड

आतिशबाजी पर निगरानी रखी जाएगी। तेज आवाज और प्रदूषण फैलाने वाले पटाखों पर प्रतिबंध लगाया जाएगा।

कम ध्वनि और कम धुएं वाले 'ग्रीन पटाखों' के उपयोग को प्रोत्साहित किया जाएगा।

यातायात पुलिस

सड़कों का चौड़ीकरण और प्रमुख सड़कों पर ट्रैफिक कम करने के लिए विशेष वैकल्पिक मार्ग बनाए जाएंगे।

पटाखों के उपयोग के दौरान सड़क सुरक्षा पर ध्यान दिया जाएगा, जिससे दुर्घटना न हो।

विंध्य क्षेत्र में औद्योगिक विकास के नए अवसरों का केंद्र बनेगा रीवा : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

रीवा में 23 अक्टूबर को होगी अगली रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि 23 अक्टूबर को रीवा में होने वाली प्रदेश की 5वीं रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव राज्य के साथ विंध्य क्षेत्र के औद्योगिक विकास को एक नई दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इस मंच से उद्योग, व्यापार, पर्यटन, और कृषि क्षेत्रों को सशक्त बनाने के लिए ठोस कदम उठाए जाएंगे। इससे राज्य एवं विशेष रूप से विंध्य क्षेत्र में औद्योगिक उन्नति और रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे, जो राज्य के समग्र आर्थिक विकास को सशक्त और सुदृढ़ करेगा।

कॉन्क्लेव में बिजनेस प्रमोशन सेंटर- रीवा इंडस्ट्री कॉन्क्लेव में व्यापारिक और औद्योगिक हितधारकों के लिए बिज़नेस प्रमोशन सेंटर की स्थापना की जा रही है, जहाँ 16 से अधिक प्रमुख सरकारी और निजी विभाग अपने उत्पादों, सेवाओं और नीतियों को प्रदर्शित करेंगे। इसका उद्देश्य व्यापार को सरल बनाने के साथ निवेशकों और उद्यमियों के बीच संवाद को बढ़ावा देना है, जिससे औद्योगिक वातावरण को सुदृढ़ किया जा सके।

व्यापारिक सुगमता और औद्योगिक विकास पर ध्यान- कॉन्क्लेव में एमपी इंडस्ट्रियल डेव्लपमेंट कॉरपोरेशन की प्रमुख भूमिका रहेगी, जो ईज ऑफ डूइंग बिजनेस के तहत व्यापारिक प्रक्रियाओं को सरल और सुगम बनाकर निवेशकों को व्यापार स्थापित करने में सहयोगी की भूमिका निभाएगा। एमपी स्टेट इलेक्ट्रॉनिक डेव्लपमेंट कॉरपोरेशन राज्य के आईटी एवं ईएसडीएम उद्योग में विकास और निवेश के अवसरों को साझा करेगा।

एमएसएमई विभाग सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों को प्रोत्साहन देने के लिए अपनी योजनाओं और सहायता कार्यक्रमों की जानकारी प्रदान करेगा, जिससे इन उद्यमों का राज्य के औद्योगिक ढाँचे में और भी मजबूत योगदान हो सके।

निर्यात और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को मिलेगी रफ्तार- अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और निर्यात को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाने के उद्देश्य से डायरेक्टोरेट ऑफ फॉरेन ट्रेड निर्यात के अवसरों पर मार्गदर्शन प्रदान करेगा, जबकि कस्टम विभाग आयात-निर्यात प्रक्रियाओं और नियमों पर जानकारी देगा। इस दिशा में ईसीजीसी द्वारा निर्यातकों के लिए क्रेडिट बीमा और वित्तीय सेवाओं पर भी व्यापक जानकारी दी जाएगी, जिससे राज्य के निर्यातकों को वैश्विक स्तर पर अपनी पकड़ मजबूत करने का अवसर मिलेगा।

पर्यटन और हस्तशिल्प उद्योग में निवेश के अवसर- कॉन्क्लेव में मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा राज्य के पर्यटन स्थलों और उद्योग में निवेश की संभावनाओं पर विशेष जानकारी दी जाएगी। इसके अलावा, हस्तशिल्प विकास निगम राज्य के हस्तशिल्प उद्योग को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से अपने उत्पादों को बाजार में लाने के नए तरीकों पर जानकारी देगा।

कृषि और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के लिए सुनहरे अवसर

कृषि और प्र-संस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण द्वारा कृषि उत्पादों के निर्यात के अवसरों की जानकारी दी जाएगी, जो राज्य के कृषि उद्योग के लिए अंतर्राष्ट्रीय बाजारों तक पहुँच को और अधिक सुगम बनायेगा। यह कॉन्क्लेव कृषि और खाद्य प्र-संस्करण क्षेत्र के उद्यमियों को वैश्विक निर्यात का हिस्सा बनने का सुनहरा मौका प्रदान करेगा।

बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं का समर्थन

बिजनेस और उद्योग को वित्तीय सहयोग प्रदान करने के लिए यूनियन बैंक एवं फेडरेशन ऑफ इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री बैंकिंग और वित्तपोषण से संबंधित सेवाओं की जानकारी देंगे। साथ ही इंजीनियरिंग एक्सपोर्ट प्रमोशन कॉउंसिल द्वारा इंजीनियरिंग उत्पादों के निर्यात और संबंधित सहायता कार्यक्रमों की जानकारी दी जाएगी।

रवींद्र भवन में श्रीराम के 36 गुणों का चित्र कथन

भारत के विभिन्न कलाकारों ने अलग-अलग शैलियों में किया वर्णन

भोपाल (नप्र)। मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम धरती के सबसे श्रेष्ठतम मनुष्य थे, वाल्मीकि रामायण के आरंभ में भगवान के 36 गुणों का जिक्र किया गया है, जिनके चित्र कथन की प्रदर्शनी इन दिनों भोपाल के रविन्द्र भवन के मुक्ताकाश मंच में लगाई गई है। जिसे देखने के लिए बड़ी संख्या में लोग पहुंच रहे हैं। राम के इन गुणों को भारत के विभिन्न कलाकारों ने अलग-अलग शैलियों में रचा है। प्रदर्शनी में सबसे पहले जनप्रिय श्रीराम के गुण को दर्शाया गया है, जिसमें श्रीराम का लक्ष्मण और सीता सहित वनगमन के लिए प्रस्थान करना। जिससे व्याकुल अयोध्या वासियों के साथ ही अन्य जीव-जन्तु भी दुखी हो जाते हैं।

सभासद द्वारा बताये गए श्रीराम के गुण

राजा दशरथ के सभासदों से पूछने पर कि मैं धर्मपूर्वक पृथ्वी का निरंतर पालन कर रहा हूँ, फिर मेरे रहते आप लोग श्रीराम को युवराज के रूप में क्यों देखना चाहते हैं? यह सुनकर सभासदों ने कहा- महाराज! श्रीराम में बहुत से कल्याणकारी सद्गुण हैं। नारद राम के गुणों का बखान करते हैं।

मध्यप्रदेश संस्कृति विभाग की ओर से रवींद्र भवन के मुक्ताकाश मंच में 18 से 24 अक्टूबर तक श्रीरामलीला उत्स्व का आयोजन किया जा रहा है। 7 दिनी उत्सव में श्रीरामकथा से जुड़े अलग-अलग प्रसंगों की लीलाएं प्रस्तुति की जाएंगी। जनजातीय संग्रहालय के क्यूरेटर (प्रभारी) अशोक मिश्रा ने बताया कि राम के 36 गुणों को भारत के अलग अलग कलाकारों द्वारा अलग अलग शैलियों में रचा गया है, जिसकी प्रदर्शनी यहां लगाई गई है। श्रीमद वाल्मीकि रामायण में इस बात का जिक्र किया गया है कि भगवान राम के वो 36 गुण क्या हैं जिसके कारण वो इस धरती के श्रेष्ठतम मनुष्य हैं। मिश्रा ने आगे बताया कि भगवान के एक एक गुण एक एक गुण अलग अलग कलाकारों को भेजकर स्थानीय चित्र शैली में अभिव्यक्त कराया गया है। मूल रुप से सारा संग्रह ओरछा श्रीरामराजा सरकार मंदिर परिसर में है, उसकी प्रतिकृति की प्रदर्शनी यहां लगाई गई है।

डेंगू का प्रकोप

जिलों में अब नई व्यवस्था, अस्पतालों में आइसोलेशन वार्ड बनेंगे

भोपाल (नप्र)। प्रदेश में डेंगू के मामले इस साल तेजी से बढ़ रहे हैं। ग्वालियर और इंदौर 2024 में सबसे ज्यादा प्रभावित जिलों में हैं। जनवरी से अक्टूबर तक ग्वालियर में 988 और इंदौर में 437 डेंगू पॉजिटिव केस रिपोर्ट हुए हैं। ये 2023 के मुकाबले क्रमशः दोगुने और 167 अधिक हैं। भोपाल में पिछले साल के मुकाबले 31 नए केस दर्ज किए गए हैं। प्रदेश में इस साल अब तक 6116 केस आ चुके हैं, जबकि पिछले साल अब तक संख्या 2831 ही थी।

अब राज्य में डेंगू की रोकथाम के लिए सरकारी अस्पतालों में खास प्रबंध किए जा रहे हैं। सैंपल टेस्टिंग अब जिले स्तर पर दिन में दो बार होगी, 12 घंटे के भीतर रिपोर्ट उपलब्ध कराई जाएगी। अस्पतालों में आइसोलेशन वार्ड बन रहे हैं।

डॉक्टरों को प्रशिक्षण, कंट्रोल रूम भी बना- डेंगू प्रोटोकॉल के तहत इलाज की बेहतर समझ के लिए अब डॉक्टरों को भी विशेष प्रशिक्षण भी दिया जाएगा। साथ ही मरीजों को समय पर मदद देने के लिए कंट्रोल रूम बनाया गया है। इसका हेल्पलाइन नंबर 0755 2660636 है।

निजी अस्पतालों से सहयोग की अपील... सरकार ने निजी अस्पतालों और लैब्स से समय पर सही आंकड़े साझा करने का अनुरोध किया है ताकि सभी मरीजों को सही समय पर उपचार मिल सके।

जल्द बदलेगा बीजेपी संगठन का नेतृत्व

शेजवलकर चुनाव अधिकारी नियुक्त, वीडी की जगह प्रदेशाध्यक्ष के आधा दर्जन दावेदार

भोपाल (नप्र)। 2 सितंबर से 15 अक्टूबर तक बीजेपी का सदस्यता अभियान दो चरणों में पूरा हो चुका है।15 अक्टूबर से सक्रिय सदस्यता अभियान 31 अक्टूबर तक चलेगा। वहीं इसके बाद अब संगठन चुनाव की प्रक्रिया भी शुरू हो जाएगी। संगठन चुनाव के लिए ग्वालियर के पूर्व सांसद विवेक शेजवलकर को प्रदेश चुनाव अधिकारी नियुक्त किया है। प्रदेश उपाध्यक्ष और पूर्व विधायक जीतू जिराती, विधायक अर्चना चिटनीस, प्रदेश मंत्री रजनीश अग्रवाल और डॉ प्रभुलाल जाटवा को सह चुनाव अधिकारी नियुक्त किया है। ये चुनाव अधिकारी बूथ समितियों से लेकर मंडल अध्यक्ष, जिला अध्यक्ष और प्रदेश अध्यक्ष का चुनाव कराएंगे।

सक्रिय सदस्यता के बाद बूथ समितियां होंगी गठित- 31 अक्टूबर को सक्रिय सदस्यता का अभियान पूरा होने के बाद प्रदेश के लगभग 65 हजार बूथों पर बीजेपी की बूथ समितियों का गठन होगा। जिसके बाद बाद मंडल अध्यक्षों का चुनाव होगा। वहीं जिला अध्यक्ष और फिर प्रदेश अध्यक्ष का निर्वाचन कराया जाएगा। जिला अध्यक्ष के चुनाव के साथ ही एक प्रदेश प्रतिनिधि हर जिले से नॉमिनेट किया जाएगा, जो प्रदेश अध्यक्ष के चुनाव में हिस्सा लेगा।

23 नवंबर के बाद ही चुनाव के आसार- ऐसा माना जा रहा है कि बीजेपी के संगठन चुनाव के काम में 23 नवंबर को झारखंड और महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव परिणाम आने के बाद तेजी आएगी। बीजेपी के कई सीनियर लीडर दोनों राज्यों के चुनाव में व्यस्त रहेंगे। ऐसे में संभावना है कि सभी बूथ समितियों का गठन करा लिया जाए। उसके बाद मंडल और जिलों और प्रदेश अध्यक्ष के चुनाव की शुरुआत हो।

आज दिल्ली में होगी बैठक- 21 अक्टूबर को दिल्ली में बीजेपी के संगठन चुनाव को लेकर विशेष बैठक बुलाई गई है। इस बैठक में बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा, संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा के अलावा प्रदेश चुनाव अधिकारी और चारों सह चुनाव अधिकारी भी शामिल होंगे। इस बैठक में संगठन चुनाव की डेडलाइन मिल सकती है।

वीडी की जगह नए अध्यक्ष की होगी नियुक्ति- बीजेपी के वर्तमान प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा दूसरे कार्यकाल में काम कर रहे हैं। वीडी के कार्यकाल में संगठन के कामों में प्रदेश अव्वल रहा।

सरकार जुटाएगी जानकारी, आप क्या खाते हैं?

2025 की जनगणना में मोबाइल धारकों के बारे में भी रिपोर्ट होगी तैयार

भोपाल (नप्र)। अगले साल होने वाली जनगणना के दौरान केंद्र सरकार एमपी समेत हर राज्य के नागरिकों के खान-पान की भी जानकारी जुटाएगी। यह जानकारी इस रूप में होगी कि लोग खाने में कौन सा अनाज इस्तेमाल करते हैं। इसके अलावा सरकार यह भी पता करना चाहती है कि देश और प्रदेश में मोबाइल यूजर्स का प्रतिशत कितना है?

बदलते दौर में मिलेट्स के उत्पादन और उपयोग को बढ़ावा दे रही केंद्र सरकार 2025 में होने वाली जनगणना के लिए लोगों के खान-पान की जानकारी भी जुटाएगी। इसके लिए फॉर्मेट में एक कॉलम इसी के लिए तय किया गया है कि जिस घर का सर्वे किया जा रहा है, उस घर के लोग किस तरह के अन्न का उपयोग भोजन में करते हैं।

सूत्र बताते हैं कि मोबाइल क्रांति के बाद भी सरकार यह मानकर चल रही है कि अभी भी 100 प्रतिशत लोग मोबाइल यूज नहीं करते हैं। ऐसे में खासतौर पर ग्रामीण इलाकों में मोबाइल यूजर्स की संख्या जानने के लिए मोबाइल धारकों का सर्वे किया जाएगा। इसके माध्यम से विकास कार्यों को लेकर आगामी योजनाओं के स्वरूप तय किए जाएंगे।

35 के बजाय 34 कॉलम होंगे

घर-घर जाकर सर्वे करने वाले प्रगणक (सर्वे कर्मचारी) से 2011 की जनगणना के दौरान 35 कॉलम में जानकारी एकत्र कराई जा रही थी लेकिन इस बार एक कॉलम कम कर दिया गया है। 34 कॉलम में ही जानकारी जुटाई जाएगी। महिला और पुरुष की जानकारी एक साथ सब कॉलम के रूप में दर्ज होगी और एक अन्य कॉलम में थर्ड जेंडर की मैपिंग प्रगणक से कराई जाएगी।

एक प्रगणक को 150 घर मिलेंगे

जनगणना के लिए जो व्यवस्था तय की गई है उसके अनुसार एक प्रगणक (सर्वे करने वाले कर्मचारी) को 150 घरों का सर्वे करना होगा। यह कर्मचारी तय अवधि में सर्वे पूरा कर निर्धारित फॉर्मेट में जनगणना निदेशालय को रिपोर्ट देंगे। 150 घरों के आधार पर सर्वे करने वालों के नए एरिया तय कर मैपिंग की जाएगी ताकि घर रिपीट नहीं हों।

1.52 लाख कर्मचारियों की लगेगी ड्यूटी, ऑनलाइन होने से जल्दी हो सकता है काम

जनगणना के काम की शुरुआत होने पर मध्यप्रदेश के सभी 55 जिलों में घर-घर जाकर जानकारी जुटाने के लिए जनगणना निदेशालय प्रदेश के 1.52 लाख कर्मचारियों की ड्यूटी लगाएगा। ये कर्मचारी भारत सरकार की प्राथमिकता वाले कामों की जानकारी घर-घर जाकर जुटाएंगे। बताया जाता है कि चूंकि इस बार जो जनगणना होनी है, वह ऑनलाइन फॉर्मेट में होगी। इसलिए पिछले सालों की तरह अगले साल होने वाली जनगणना में समय कम लगने की उम्मीद है।

मुझे टिकट मिले इस मंशा से कभी काम नहीं किया

शिवराज के बेटे कार्तिकेय बोले- बुधनी के लोगों के पास जाने के लिए मुझे टिकट की जरूरत नहीं

भोपाल (नप्र)। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान की परंपरागत विधानसभा सीट बुधनी से बीजेपी ने विदिशा के पूर्व सांसद रमाकांत भार्गव को उम्मीदवार बनाया है। इस सीट पर टिकट की रेस में शिवराज के बेटे कार्तिकेय का नाम सबसे आगे चल रहा था। अब भार्गव को टिकट मिलने के बाद कार्तिकेय की प्रतिक्रिया सामने आई है। कार्तिकेय ने कहा कि, दादा रमाकांत भार्गव पार्टी के वरिष्ठ नेता हैं। पार्टी ने उन्हें टिकट देकर सही फैसला किया है।

भोपाल में कार्तिकेय सिंह चौहान ने मीडिया से कहा, मैंने कभी भी इस मंशा के साथ काम नहीं किया कि मुझे कभी टिकट मिले। बुधनी के लोगों के पास जाने के लिए मुझे किसी टिकट की आवश्यकता नहीं है। मैंने पहले एक आम कार्यकर्ता के रूप में उनके लिए काम किया है।

व्यक्तिगत इच्छाएं मायने नहीं रखतीं- कार्तिकेय ने कहा- हम लोग एक विचारधारा से जुड़े हुए लोग हैं। यहां पर व्यक्तिगत इच्छाएं मायने नहीं रखती। अगर कुछ मायने रखता है तो वह है विचार... जो पार्टी के प्रत्येक कार्यकर्ता को एक माला की तरह पिरोकर रखता है। इसी विचार के लिए हम लोग काम कर रहे हैं और करते रहेंगे।

मेरे नाम को पैनल तक पहुंचाया यही बड़ी बात- कार्तिकेय ने कहा- मेरे लिए सच में इससे बड़ा कोई सौभाग्य नहीं हो सकता कि पार्टी के मेरे उन सभी कार्यकर्ताओं ने मेरे नाम को आगे बढ़ाया और पैनल तक पहुंचाया। इससे ज्यादा मेरे लिए खुशी की बात नहीं हो सकती है। मेरे लिए इतना ही काफी है। मैं एक वचन देना चाहता हूं। जिस प्रकार से बुधनी का चुनाव शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में पार्टी लड़ती आई है। उसमें जरा सी भी कमी नहीं होगी। उससे ज्यादा ताकत के साथ रमाकांत भार्गव के नेतृत्व में बुधनी विधानसभा का चुनाव हम लड़ेंगे और हम लोग जीतेंगे।

दादा को टिकट मिलने से तीन-तीन इंजन लगे

कार्तिकेय सिंह चौहान ने कहा- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा एक वैभवशाली, शक्तिशाली और ऐसे देश का निर्माण करने जा रही है। जिसे दुनिया देख रही है। डबल इंजन की सरकार का नेतृत्व एक तरफ जहां नरेंद्र मोदी कर रहे हैं। वहीं दूसरी तरफ मोहन यादव मध्य प्रदेश में नेतृत्व कर रहे हैं। ऐसे में टिकट दादा रमाकांत भार्गव को जब मिल जाता है तो ये तीन-तीन इंजन लग जाते हैं।

मेरे जन्म से पहले पार्टी भार्गव के नेतृत्व में चुनाव लड़ती आई है

कार्तिकेय ने कहा- रमाकांत भार्गव भाजपा के वरिष्ठ नेता हैं। उनके नेतृत्व में हमने कई चुनाव लड़े हैं। मेरे जन्म से पहले भी पार्टी चुनाव लड़ती आई है। वे अनुभवी व्यक्ति और अनुभवी राजनेता हैं। मैं मानता हूं कि बुधनी का जो फैसला किया है। वह एकदम उचित है। उनके साथ-साथ कई हमारे ऐसे नेता हैं। जो मुझसे ज्यादा योग्य हैं। जो मुझसे ज्यादा डिजर्विंग हैं। मैं यह भी जानता हूं कि वो सब दादा के नाम की घोषणा के साथ-साथ स्वयं जुटने वाले हैं।

पहले की तरह ताकत से काम करूंगा

दादा मेरे लिए पिता तुल्य हैं। मेरे लिए तो सचमुच में कोई अंतर ही नहीं है। जैसे पहले मैं चुनाव में काम करता आया हूं। वैसे अब भी मैं उसी ताकत और ऊर्जा के साथ लगूंगा। मेरा यह लक्ष्य है कि, कैसे मेरी विचारधारा, भारतीय जनता पार्टी की विचारधारा और भारत की विचारधारा को लोगों तक पहुंचाएं। उपचुनाव के तारीखों की घोषणा हो चुकी है। 13 तारीख को वोटिंग है। मैं सभी कार्यकर्ताओं से आह्वान करना चाहता हूं कि हम सब जुट जाएं और दादा के नेतृत्व में एकजुट होकर चुनाव लड़ें।

संपादकीय

पर इसके लिए जिम्मेदार कौन है?

अक्सर कटाक्ष और व्यंग्यात्मक टिप्पणियों के जरिए अपनी बात कहने वाले केन्द्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने अपनी इसी शैली में भारतीय सड़क निर्माण तंत्र की बहुत बड़ी खामी और जवाबदेही की कमी को उजागर किया है। भोपाल के रवींद्र भवन में आयोजित पीडब्ल्यूडी और इंडियन रोड सेमीनार को सम्बोधित करते हुए गडकरी ने देश की खराब गुणवत्ता वाली सड़कों के बारे में कहा कि विभाग का मंत्री होने के नाते अच्छे काम का क्रेडिट हमें मिलता है लेकिन जब सड़क पर गड्ढे होते हैं तो डिसक्रेडिट भी मिलता है। सोशल मीडिया में लोग हमें ठोंकते हैं। आगे-पीछे कुछ नहीं देखते। गडकरी ने कहा कि खराब और गलत सड़कों के बारे में जब वो विभागीय इंजीनियरों से सवाल करते हैं कि यह गड़बड़ी कैसे और क्यूं हुई तो जवाब मिलता है कि सर डीपीआर (डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट) ही गलत थी। यानी सारी जिम्मेदारी प्लानर की है। गडकरी ने गलत डीपीआर बनाने वालों पर तंज कसते हुए कहा कि इसमें से एक-एक को पद्मश्री और पद्म भूषण मिलना चाहिए। इतने गंदे काम हो सकते हैं इंजीनियरिंग प्वाइंट ऑफ व्यू से सोचिए जरा। इसी संदर्भ में गडकरी ने सवाल उठाया कि अगर डीपीआर गलत है तो हमारे इंजीनियर क्या करते हैं? उनकी क्या जवाबदेही है? गडकरी ने एक किस्सा सुनाते हुए कहा कि मैं बेंगलुरू से चेन्नई एक्सप्रेस वे हाईवे हेलिकॉप्टर से देख रहा था। तीन बड़े-बड़े टॉवर रोड पर दिखे। उसको हटाने के लिए तीन-चार सौ करोड़ खर्च कर रहे हैं। मेरे साथ रहे मध्यप्रदेश के अधिकारी कहा कि आपने तो आईआईटी पास किया है। आपकी समझ में नहीं आया कि ये टावर रास्ते से सरका देते तो चार सौ करोड़ रू. क्यों खर्च होते? अधिकारी ने कहा कि सर आप सही हैं। यह गलती डीपीआर बनाने वालों की है। गडकरी ने कहा कि आजकल तो गूगल सर्च करके ही डीपीआर बन जाती है। वह कितनी सही और प्रामाणिक है, कोई नहीं देखता। इसी संदर्भ में गडकरी ने मप्र के मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव को सलाह दी कि आप अपने यहां के इंजीनियरिंग कॉलेजों के छात्रों से पहले डीपीआर चेक करवाएं। इससे विद्यार्थियों का अनुभव भी बढ़ेगा और डीपीआर का क्रॉस चेक भी होगा। निर्माण कार्यों को लेकर विभिन्न सरकारी विभागों के बीच तालमेल की कमी को रेखांकित करते हुए गडकरी ने तंज कसा कि कि हमारे रूल ऑफ बिजनेस में लिखा है- एक अधिकारी को दूसरे से बात नहीं करना। चर्चा नहीं करना। रेलवे अलग ब्रिज बना रहा है। पीडब्ल्यूडी अलग बना रहे हैं। तीसरा और चौथा कोई और बना रहा है। उन्होंने कहा कि मप्र के सीएस अनुराग जैन का देश के लिए योगदान यह है कि उन्होंने जो गति शक्ति सॉफ्टवेयर का प्लेटफॉर्म खड़ा किया अब इसके कारण हम सब समझ जाते हैं। केन्द्रीय मंत्री गडकरी ने कहा था कि हमारे प्रशासन तंत्र की गंभीर खामियां है। लेकिन सौ टके का सवाल यह है कि इन खामियों को कौन दूर करेगा और यह किसकी जिम्मेदारी है? ऊंचे-ऊंचे पदों पर बैठे और कमीशन खाने में व्यस्त अधिकारी अगर डीपीआर की एक्युरेसी भी चेक नहीं कर सकते तो फिर वो तनख्वाह किस बात की ले रहे हैं? अगर उनकी कोई जवाबदेही नहीं है तो क्या उन्हें भ्रष्टाचार के हाथ मजबूत करने के लिए रखा जाता है? यह अहम सवाल है। यह कोई छुपा राज नहीं है कि सभी सरकारी विभागों में बगैर तगड़े लेन-देन के कोई काम नहीं होता। डीपीआर बनाने का ठेका किसे मिलेगा, किसे नहीं, इसके पीछे भी बड़ा खेल है। ऐसे में डीपीआर बनाने काम भी कमीशन देकर ही मिलना है तो गडकरी किससे सुधार की आस लगाए बैठे हैं?

बाल अपराध और सोशल मीडिया

नजरिया

रघु ठाकुर
लेखक समाजवादी चिंतक हैं।

25 सितम्बर के अखबार और मीडिया पर चार खबरें बलात्कार या बच्चियों के साथ अपराध की चर्चा में हैं। इन सभी अपराधों की शिकार होने वाली बच्चियां कम उम्र और अधिकांश में अपराधी भी कम उम्र वाले हैं। ऐसी ही एक और खबर सोशल मीडिया पर आई है कि मध्यप्रदेश के सागर जिले में किसी स्कूल के एक छात्र ने छात्रा के साथ बलात्कार किया।

पहली तीन खबरों का जो जिक्र मैंने किया है, वे मध्यप्रदेश में मुरैना, नर्मदापुरम और हरदा की हैं। आमतौर पर अपराध की घटनाएं अखबार में राज्य के पन्ने पर छपती हैं। इसलिए प्रदेश के बाहर अन्य प्रदेशों में हुई घटनाओं के बारे में सूचना कम मिल पाती है। अगर सारे देश के अखबार देखे जायेंगे तो शायद ही कोई प्रदेश बचेगा जहां ऐसी घटनाएं न घट रही हों। ये घटनाएं सूचनाएं भी हैं, साथ ही समाज व देश की राजनीतिक व्यवस्था व न्यायपालिका के लिए भी गहरा संदेश हैं। मैं नहीं जानता कि समाज, न्यायपालिका व राजसत्ता ने इन घटनाओं को मात्र एक अपराध के रूप में देखा है या फिर इनके गहरे निहितार्थ को समझने का प्रयास भी किया है।

यह जानना भी कठिन है क्योंकि इन तीनों के साथ किसी का भी कोई सीधा संवाद सम्भव नहीं है। इनकी प्रतिक्रिया जानना भी कठिन है। लगभग हर मीडिया, चैनल और अखबारों के एक दो पेज या बड़ा हिस्सा धर्म के नाम पर, कर्मकांड और उपदेश के लिए सुरक्षित रहता है जिनमें धर्मगुरुओं के भारी भारी शब्दों के उपदेश भी मोटे अक्षरों में छपते हैं। परंतु ये खबरें इन धर्मगुरुओं के ऊपर कोई प्रभाव डालती नहीं दिखतीं।

कई बार ऐसा लगता है कि ये धर्मोपदेशक शायद अपना ही उपदेश पढ़ते हैं और अपनी ही फोटो देखते हैं। इन गंभीर अपराधों की खबरों को जो धर्म और समाज दोनों से जुड़ी हैं वे या तो पढ़ते नहीं हैं या फिर पढ़ कर उन्हें दृष्टि से ओझल कर देते हैं। उन पर प्रतिक्रिया करना तो दूर की बात है। शायद वे जानते हैं कि निर्गुण धार्मिक उपदेश देना सुरक्षित कार्य और सगुण बोलना सत्ता, व्यवस्था और समाज की नाराजगी को मोल लेना है। एक अलिखित समझौता सा धर्मगुरुओं, राजनेताओं और समाज के बीच है कि जो होता है वह होता रहे, तुम अपनी गति से आगे बढ़ो, हम अपने उपदेश देते रहेंगे।

शायद यह साहस गांधी में ही था कि वे अपनी प्रार्थना-सभाओं में उन घटनाओं पर सगुण टिप्पणी करते थे जो समाज, देश और दुनिया को किसी न किसी रूप में प्रभावित करती थी। मेरी राय में इस पर भी विचार होना चाहिए कि आखिर इन घटनाओं के पीछे क्या कारण हैं। वे क्यों हल नहीं की जा सकतीं। मेरी वर्षों से यह राय बनी है कि समाज में निरंतर बढ़ रहे अपराध के पीछे आबादी की वृद्धि -व्यवस्था की असफलता या पक्षधरता-और नई मशीनी सभ्यता और तकनीक भी बड़े कारण हैं। आबादी की चर्चा इसलिए कि आबादी की वृद्धि का बोझ देश और प्रकृति पर इतना बढ़ चुका है कि वह इंसान की मानवीय जरूरतों की पूर्ति करने में भी असफल हो रही है। आज अगर देश में कुछ वर्षों में ही सामाजिक मान्यता के बगैर लड़के और लड़कियों का सहजीवन, जिसे लिव इन रिलेशनशिप कहा जाता है, लाखों की संख्या में पहुंच चुका है तो क्या इसका एक कारण

आबादी की वृद्धि नहीं है? जवान बच्चों के पास अगर अपनी मानवीय जरूरतों की पूर्ति के लायक स्थान नहीं होंगे, वे विधिवत शादी और विवाह के बाद रहने के लिए जरूरी स्थान भी नहीं पा सकेंगे तो यह सहजीवन का चलन बढ़ेगा। भले ही समाज की बहुसंख्या अभी इसे अस्वीकार करे।

शारीरिक संबंध बनाने की इंसानी भूख और स्थानाभाव ने एक विकृत रूप लेना शुरू कर दिया है। बड़े शहरों के सार्वजनिक पार्क, होटल और यहां तक कि सार्वजनिक यातायात के वाहन, मेट्रो आदि भी अब भयावह रूप ले रहे हैं। मेरे कई सुशिक्षित मित्रों ने बताया कि दिल्ली के मेट्रो में चलना अब इसलिए कठिन हो रहा है कि भीड़ के अलावा लड़के लड़कियों के संबंध की अवस्था विकृत हो रही है।

पूना के एक सार्वजनिक पार्क में मैंने स्वयं ऐसे दृश्य देखे हैं और पार्क के मुख्य दरवाजे पर जो रजिस्टर प्रतिक्रियाओं के लिए रखा था उसमें लिखा था कि इसका नाम बदल कर श्कुत्ता पार्क्य रखा जाये ताकि कम से कम उन महापुरुषों का सम्मान बना रहे। जिनके नाम पर पार्क बनाया गया है।

आजकल जो बाल अपराध हो रहे हैं उनमें एक बड़ा कारण पोर्न-साइट्स का भी है। सोशल मीडिया पर जितने समूह हैं, विशेषतः जो विज्ञापनों से चलते हैं, उनमें अधिकांश विज्ञापन अश्लील और नग्नता के होते हैं। यहां तक कि कुछ समूह जो वैचारिक संदर्भों या नाम से हैं, उनके भी समाचारों के अंदर के समाचारों में ऐसे ही चित्र नजर आते हैं। यह बाजार का व्यापारिक कौशल है या विज्ञापनदाताओं की आवश्यकता, या समूह चलाने वालों की आर्थिक लाचारी है, इसका ठीक उत्तर तो उन्हीं से मिल सकता है। पर यह निर्विवाद है कि बढ़ते बाल अपराधों में पोर्न-साइट्स और चाइल्ड पोर्नोग्राफ़ी बड़ी हद तक जवाबदेह हैं। डिजिटल कम्पनियां भी अपने व्यापार के लिए पोर्नोग्राफ़ी को न केवल बढ़ावा दे रही हैं बल्कि बड़े पैमाने पर बेच रही हैं।

यूनिसेफ के अनुसार भारत के 43 करोड़ बच्चे नाबालिग हैं। छोटे घरों में जब वे अपने माता-पिता को यौन संपर्कों में देखते हैं तो उनके बाल-मन पर जो असर होता है वह भी उन्हें यौन क्रिया और संबंधों के बारे में प्रेरित करता है। एक अध्ययन के मुताबिक स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों में से 97 फीसदी बच्चे औसतन 43 मिनट स्कूल में भी मोबाइल देखते हैं। सम्भव है कि इस समय में भी वे अधिकांश तौर पर ऐसे ही चित्र देखते हों। आजकल बच्चों में भी ड्रग्स का व्यापार बढ़ा है। ड्रग्स भी पोर्नोग्राफी के साथ बाल-अपराध का बड़ा कारण बन गई हैं। कहने को निजी कवच के विज्ञापन में गूगल ने औसतन पंद्रह अरब स्पैम और फिशिंग मैसेज को ब्लॉक किया है। गूगल एंड्रायड एप्स के दो सौ अरब स्कैनिंग के दावे किए हैं। परंतु इन दावों की कोई प्रामाणिकता नहीं है।

भारत सरकार ने जो आईटी रूल्स 2011 व 2021 के तहत जो नये नियम बनाये हैं उनके अनुसार इंटरनेट कंपनियों को अपनी साइट्स पर से पोर्नोग्राफिक मैसेज हटाना चाहिए।

यह नियम बनाना तो आसान था परंतु इन साइट्स पर से ये मैसेज हटाये गए या नहीं, इनका नियंत्रण व अध्ययन कैसे सम्भव हो सकता है। इसका कोई इलाज या तो इंटरनेट के मालिक खोज सकते हैं, उनकी कम्पनियों के शोधकर्ता तथा तकनीकी विशेषज्ञ खोज सकते हैं या फिर थोड़ा बहुत समाज, राजसत्ता या धार्मिक जमातें कर सकती हैं।

अगर नाबालिग बच्चों पर पूर्णतः मोबाइल की पाबंदी लगाई जाये तो यह भी सम्भव और व्यावहारिक नहीं लगता क्योंकि अब तो अनेक शैक्षणिक-सुरक्षात्मक कार्यों के लिए मोबाइल जरूरी हो गया है। दूसरे, अपनी नासमझी के तहत या कुछ लाचारी और अभ्यास के चलते मातायें खुद बच्चों को साल दो साल की उम्र से मोबाइल पकड़ा देती हैं। मैं अमूमन यात्राओं में देखता कि बच्चों को खाना खिलाने के लिए माताएं उन्हें मोबाइल देती हैं। मोबाइल देखते हुए बच्चे को खाना खिलाते हुए वह बहुत प्रसन्नता के साथ बताती हैं कि वह बिना मोबाइल देखे खाना नहीं खाता। वे अपने बच्चों में मोबाइल की लत पैदा कर रही हैं। अपने ही बच्चे के भविष्य को बर्बादी की ओर ले जा रही हैं।

मेरी राय में बाल अपराधों व यौन अपराधों को रोकने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए जा सकते हैं -

1- सरकार और समाज, आबादी नियंत्रण पर प्रमुखता से ध्यान दें, वरना स्थितियां दिनों-दिन भयावह होंगी।

2- भारत सरकार को भारत में ऐसी इंटरनेट व्यवस्था शुरू करनी चाहिए जिनमें मशीनी तौर पर ही पोर्नोग्राफी, स्पैम या फिशिंग मैसेज के माध्यम से अश्लील दृश्य न आ सकें।

3- समाज व धार्मिक संस्थाओं को यह समझना होगा कि अब यह मामले केवल आपराधिक नहीं बल्कि समाज के विकृत होने के प्रमाण हैं।

4-क्या राजनेता, सामाजिक नेता व धर्मगुरु यह खुले तौर पर कहने का व स्वीकारने का साहस करेंगे कि यह उनके लिए भी कसौटी है?

5-न्यायपालिका के निर्देश व आदेश कुछ आए हैं। परंतु यह बहुत स्पष्ट या कारगर हैं ऐसा नहीं लगता।

तमिलनाडु न्यायपालिका ने इस पर रोक लगाने की याचिका के संबंध में जो निर्णय दिया था वह कानून की परिभाषा की दृष्टि से तो मैं नहीं कहता पर समाज जीवन की परिभाषा के अनुसार नितांत गलत था। इसके खिलाफ अपील में सर्वोच्च न्यायालय ने फैसला देकर उच्च न्यायालय तमिलनाडु के निर्णय को रोका है। परंतु सर्वोच्च न्यायालय का जो निर्णय है कि चाइल्ड पोर्नोग्राफी संबंधी कंटेन्ट न कोई साझा करेगा , न डाउनलोड करेगा, यह भी बहुत प्रभावी निर्णय नहीं है। मान लें थोड़ी देर के लिए देश के अस्सी करोड़ मोबाइल चलाने वालों मे से दो-चार-पांच करोड़ लोग ऐसी साइट्स को शेयर करते हैं या डाउनलोड करते हैं तो उस पर कोई भी सरकार या न्यायपालिका कार्रवाई कैसे करेगी? अगर कुछ चंद लोगों पर कोई कार्रवाई भी हुई तो उससे क्या प्रभाव पड़ेगा? यह तो कैंसर की बीमारी में जुकाम की दवा देने जैसा हुआ।

अब तो साफ तौर पर यह निर्णय करना होगा कि अगर इंटरनेट और डिजिटल कंपनियां ही इसके निर्माण, प्रसारण व विज्ञापन पर रोक नहीं लगातीं तो इनको ही पूर्णतः प्रतिबंधित किया जाये। भले ही उस समय देश को कुछ परेशानी या तकलीफ उठानी पड़े। उसके लिए भी समाज को तैयार रहना होगा। तथा भारत सरकार व तकनीकी विशेषज्ञों को कुछ ऐसे उपाय के साथ इंटरनेट का विकास करना होगा कि ऐसी सामग्री भेजी न जा सके। क्या इंटरनेट का कोई तकनीकी सुरक्षा कवच बन सकता है। यह अभी से चिंता व शोध का विषय होना चाहिये।

वैश्विक जलचक्र असंतुलन से जुड़ी चुनौतियों की गंभीरता

पर्यावरण

ललित गर्ग
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

असंतुलित जलचक्र के कारण समूची दुनिया के समुख पानी एक बड़ी गंभीर एवं चुनौतीपूर्ण समस्या बन रही है। पृथ्वी के चारों ओर पानी के घूमने की प्रणाली को जल-चक्र कहा जाता है, जीवन को संचालित करने के लिए जिसका सुचारु होना आवश्यक होता है। पूरी दुनिया में पीने के पानी की भारी समस्या है और उसके अधिक विकराल होने की संभावनाओं की चेतावनी लम्बे समय से दिये जाने के बावजूद हम नहीं चेत रहे हैं। पानी के दुरुपयोग, जल संसाधनों के कुप्रबंधन, बदलते जलवायु, भूमि के बढ़ते उपयोग और वन क्षेत्रों में कटौती ने समूचे जल-चक्र को असंतुलित कर दिया है। कहते हैं कि पानी की असल अहमियत वही शख्स समझता है, जो तपते रेगिस्तान में एक बूंद पानी की खोज के लिए मीलों भटका हो। वह शख्स पानी की कीमत क्या जाने, जो नदी के किनारे रहता है। भारत के कई राज्यों में पीने के पानी की भारी समस्या है और उसके अधिक विकराल होने की संभावनाएं व्यक्त की जा रही है। नीति आयोग ने अपनी एक रिपोर्ट में अगले ही साल 21 शहरों में भूजल खत्म होने की आशंका व्यक्त करते हुए एक बार फिर चेताया है।

नीति आयोग की रिपोर्ट बड़े खतरे का संकेत दे रही है। अब जलचक्र के असंतुलित होने का असर भारत पर भी पड़ना निश्चित है। इसलिये भारत में जल-समस्या जीवन-संकट बन सकती है। भारत में पुराने जमाने में तालाब, बावड़ी और नलकूप थे, तो आजादी के बाद बांध और नहरें बनाई। वक्त के बदलने के साथ-साथ सोच भी बदली, अति भोगवाद, सुविधावाद बढ़ा तो प्रकृति एवं पर्यावरण के प्रति उपेक्षा भी घनघोर होती गयी। संयम का सूत्र छूट गया। आधुनिक सभ्यता की सबसे बड़ी मुश्किल यही है कि वह प्रकृति में निहित संदेश को हम सुन नहीं पा रहे हैं। जलसंकट पूरी मानव जाति को ऐसे कोने में धकेल रही है, जहां से लौटना मुश्किल हो गया है।

समय-समय पर प्रकृति चेतावनियां देती है पर आधुनिकता के कोलाहल में हम बहरा गये हैं। आज देश का कोना-कोना जल समस्या से ग्रस्त है। वर्ष 2018 में कर्नाटक ने अभूतपूर्व बाढ़ देखी थी, किंतु अब 2019 में उसके 176 में से 156 तालुके सूखाग्रस्त घोषित हो चुके हैं। महाराष्ट्र, बिहार, उत्तरप्रदेश, झारखंड, राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ भयंकर जल समस्या का सामना कर रहे हैं।

विश्लेषकों द्वारा तृतीय विश्वयुद्ध की आशंका पानी के लिए व्यक्त की जाती रही है। निकट भविष्य में पानी का प्रयोग अस्त्र रूप में भी संभावित है। कुछ समय पहले पाकिस्तान से तनाव हो जाने पर भारत द्वारा सिंधु नदी के प्रवाह को रोक कर पानी की उपलब्धता बाधित करने की चेतावनी दी गई थी। जबकि देश में ही पानी की अनुपलब्धता की समस्या पूरे राष्ट्र में पिछले 10-15 साल से चल रही है। इसके मूल में नियमित रूप से वर्षा का न होना तथा सूखा पड़ते रहना तथा सरकार की गलत नीतियां भी हैं। पानी की उपलब्धता की स्थिति को देखते हुए यह लगने लगा है कि विश्वयुद्ध हो या न हो, पर हर गली- मोहल्ले में, शहर -शहर में, गांव- गांव में पानी के लिए 10-15 वर्ष में ही युद्ध होंगे और भाईचारे के साथ रह रहे पड़ोसी पानी के लिए आपस में लड़ेंगे।

भारत सहित दुनिया के अधिकांश देश जल-समस्या से पीड़ित है। पृथ्वी पर तीन अरब लोग पहले से जल संकट का सामना कर रहे हैं। अब जल-चक्र असंतुलन से न जाने और कितने लोग संकट में आ जाएंगे। बड़ी चिंता यह भी कि इससे दुनिया की जीडीपी को आठ से पंद्रह प्रतिशत तक नुकसान हो जाएगा। दरअसल, प्रकृति की उपेक्षा के साथ-साथ सिर्फ अपना लाभ देखने की दुष्प्रवृत्ति ही इस स्थिति के लिए जिम्मेदार है। जल की बर्बादी, वन क्षेत्रों का खात्मा, पेड़-पौधों का लगातार काटना, ओजोन परत को नुकसान, ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु संकट और इन सब के कारण अंततः जीव-जंतुओं के अस्तित्व पर ही आती आंच के रूप में इसके दुष्परिणाम सामने है। एक तथ्य यह भी है कि इन दुष्परिणामों की चिंता तो खूब होती रही है, लेकिन सरकारें एवं आमजन इस समस्या के प्रति उतना गंभीर नहीं है, जितनी अपेक्षा है। देश के जो क्षेत्र जल संकट की भयावह स्थिति का सामना कर रहे हैं, उन क्षेत्रों में एक घड़े पानी की कीमत व्यक्ति या मनुष्य के जीवन से अधिक है। वहां गर्मी में तो महिलाएं प्रातःकाल से ही जल की व्यवस्था में जुट जाती हैं।

बदलते जलवायु परिवर्तन का आलम यह है कि देश में जहां सूखा पड़ता था, अब वहां बाढ़ आ रही है। चरम जलवायु घटनाओं का स्वरूप बदल रहा है। जल चक्र पर भी इसका असर पड़ रहा है। बीते समय में चरम घटनाओं और प्राकृतिक आपदाओं में तेजी से बढ़ोतरी हुई है। इन्हीं घटनाओं से होने वाले नुकसान को कम करने और इसका मुकाबला करने के लिए मोदी सरकार ने मिशन मौसम शुरू किया है। 'मिशन मौसम' के तहत सरकार टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करके मौसम की भविष्यवाणी को बेहतर बनाने का काम करेगी। हर साल चक्रवात, बाढ़, सूखा और हीटवेव जैसे जलवायु परिवर्तन से उपजी आपदाओं के चलते करीब 10,000 लोगों की मौत हो जाती है। 'मिशन मौसम' की अहमियत का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि मौसम की सटीक भविष्यवाणी से इनमें से कई लोगों की जान बचाई जा सकती है। सरकार ने 'मिशन मौसम' के लिए 2,000 करोड़ रुपए का बजट रखा है। इतना ही नहीं ये सरकार को आपदा के आने से पहले तैयार होने और उसके बाद जनजीवन को जल्द से जल्द सुचारु करने में भी मदद करेगा। मिशन 'मौसम प्रबंधन' तकनीकों का पता लगाएगा और इसमें कृत्रिम रूप से बादलों को विकसित करने के लिए एक प्रयोगशाला बनाना, रडार की संख्या में 150 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि करना और नए उपग्रह, सुपर कंप्यूटर और बहुत कुछ जोड़ना शामिल है। भारतीय मौसम वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि अगले पांच सालों में उनके पास इतनी विशेषज्ञता होगी कि वे न केवल बारिश को बढ़ा सकेंगे बल्कि कुछ क्षेत्रों में ओलों और बिजली के साथ-साथ इसे भी रोक सकेंगे।

अंतरराष्ट्रीय मंचों पर जलचक्र के असंतुलित होने से उत्पन्न समस्याओं को लेकर भी आवाज बुलंद होती रही हैं, पर जैसे हालात बनते जा रहे हैं इन चिंताओं का असर ढाक के तीन पात जैसा ही है। इससे भी गंभीर बात यह कि जल-चक्र बिगड़ने से दुनिया का आधा खाद्य उत्पादन ही खतरे में आ गया है। तब उन देशों का क्या होगा, जो पहले से खाद्यान्न संकट को झेल रहे हैं। जाहिर है, संकट में शामिल देशों की सूची बढ़ती ही जाएगी। कहना न होगा कि अब भी नहीं संभले और विकास का वैकल्पिक रास्ता नहीं खोजा, तो भयावह स्थिति को कोई नहीं रोक सकता। जलचक्र के असंतुलन की स्थिति का आकलन कोरी कल्पना पर आधारित नहीं है। विशेषज्ञों के समूह 'ग्लोबल कमीशन ऑन द इकोनॉमिक्स ऑफ वॉटर' ने तथ्यों और परिस्थितियों के गहन वैज्ञानिक अनुसंधानों और विश्लेषणों के माध्यम से भयावह हालात की ओर आगाह किया है। हालात चिंताजनक इसलिए हुए हैं क्योंकि सभी संसाधनों के क्षरण की गति बेतहाशा बढ़ गई है। समस्या न केवल वैश्विक है बल्कि एक-दूसरे से जुड़ी हुई है, इसलिए वैश्विक स्तर के प्रयासों से ही जल-चक्र के असंतुलन से उत्पन्न परिस्थितियों के समाधान की राह तलाशनी होगी।

नीति आयोग के एक ताजा सर्वे के अनुसार भारत में 60 करोड़ आबादी भीषण जल संकट का सामना कर रही है। अपर्याप्त और प्रदूषित जल के उपभोग से भारत में हर साल 2 लाख लोगों की मौत हो जाती है। यूनिसेफ द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के अनुसार भारत में दिल्ली और मुंबई जैसे महानगर जिस प्रकार पेयजल संकट का सामना कर रहे हैं, उससे लगता है कि 2030 तक भारत के 21 महानगरों का जल पूरी तरह से समाप्त हो जाएगा और वहां पानी अन्य शहरों से लाकर उपलब्ध कराना होगा। जल से जुड़ी चुनौतियां एवं जलचक्र के असंतुलित होने की स्थितियों को स्वीकार कर हम भारतीयों को संकल्पित होना होगा इन चुनौतियों एवं समस्याओं से जूझने के लिये।

लापता ईमान की तलाश

कटाक्ष

राजेंद्र बज
लेखक व्यंग्यकार हैं।

अपने बचपन के दिनों में बड़े बुजुर्गों से सुना करता था कि उनके जमाने में आदमी बात का धनी हुआ करता था। पेट में रोटी, तन पर लंगोटी और सोने के लिए खटिया ही उसके लिए पर्याप्त हुआ करती थी। एक प्रकार से आदमी के कुछ करने का यही एक मकसद था। यदि किसी को जरूरत से ज्यादा धन-संपत्ति मिल जाती थी तो बाकायदा उसे घर की सीढ़ी या दीवारों में दफन कर दिया जाता था। ताकि भावी पीढ़ी बैठे-बैठे खा सकें। गरज यह कि ज्यादा धन-संपत्ति मन का सुकून चाहे दे सकती थी, लेकिन व्यवहार में उसकी प्रत्यक्ष रूप से विशिष्ट भूमिका नहीं थी। ज्यादा धन तो आखिरकार मिट्टी की अमानत था।

आदमी बाजार में भी निकलता, तो उसे कहीं कोई शॉपिंग मॉल, शोरूम और बड़ी-बड़ी दुकानों में जमाने भर के उपयोग एवं उपभोग के लिए दिल पर डोरे डालने वाली सामग्रियां नहीं हुआ करती थी। ज्यादा धन संपत्ति होने पर बहुत से बहुत आदमी इतना करता कि हवेली तान लेता। जिसके चलते सैकड़ों लोगों को रोजगार का साधन मिल जाया करता था। अलग-अलग इलाके में नगरसेठ हुआ करते थे, जिनकी सेठई का यह अंदाज था कि अपने होते किसी को भूख से बिलबिलाने नहीं देते थे। एक प्रकार से परोपकार को अपना धर्म समझते थे। खैर।

मुद्दे की बात यह कि बड़े बुजुर्गों की बातें बचपन से ही मेरे मन में घर कर गई थी। मुझे लगता था कि यह जो दौर चल रहा है यह भी उस दौर की भांति होगा। दरअसल मैं गहरे मुगालते में था। हुआ यूं कि आज के अखबार में एक खबर का शीर्षक था कि 'फलाने ने ईमानदारी का परिचय दिया', इस खबर ने मेरे मन में उथल-पुथल मचा दी। सुना था कि अखबार में खबर के नाम पर वह खबर छपती है जो परंपरा और लीक से हटकर होती है। यानी कि आदमी को कुत्ता काटे, तो कोई खबर नहीं लेकिन आदमी कुत्ते को काट खाए, तो यह सुर्खियों में प्रकाशित होने वाली खबर हुआ करती है।

इसके चलते ईमानदारी का परिचय देना एक खबर है तो साफ जाहिर है कि जमाना बेईमान हो चला है। इसी सोच के चलते मैंने वास्तविक स्थिति जानने के लिए अलग-अलग क्षेत्र में ईमान को ढूंढने की खोजबीन प्रारंभ कर दी। मुझे नहीं पता था कि देखते ही देखते वह लापता हो गया है। कुछ लोग इस खोजबीन को पागलपन करार देते थे। लेकिन मैंने कहीं सुना था कि आज भी ईमान जिंदा है और सही सलामत है। वैसे मैंने भरसक प्रयास किए। कहां कहां उसे नहीं खोजा? राजनीति में, शासन-प्रशासन में, समाज में, विभिन्न शहरों में और बीच बाजार में। लेकिन सारे के सारे प्रयास निरर्थक सिद्ध हुए।

आखिरकार इस नतीजे पर पहुंचा कि आजकल के जमाने में ईमान की डुंडी जरूर पीटी जाती है लेकिन असल में उसकी धुन पर कोई नहीं थिरकता। ईमान के आवरण में बेईमानी का खेल खेलना आदमी की आदत में शुमार होता जा रहा है। कई एक धंधे तो ऐसे हैं जिसमें ईमानदारी के चलते घर फूंक तमाशा देखने वाली स्थिति हो जाती है। यानी कि बिना उल्टा-सीधा किए अपना और अपने परिवार का पेट पालना लगभग नामुमकिन होता है। वैसे भी आम आदमी की अनिवार्य आवश्यकताओं वाली सूची दिन पर दिन लगातार लंबी होती चली जा रही है।

जाहिर तौर पर जिस प्रकार सोने और चांदी के वर्क में लिपटी हुई मिठाई, वास्तव में सोने और चांदी की नहीं होती, ठीक वैसे ही आजकल आदमी के लिए ईमान का वर्क भी उपयोग आने लगा है। जिसके चलते हर कोई धोखा खाता है। लेकिन ऐसा धोखा खाते ही उसे ऐसे दिव्यज्ञान की प्राप्ति हो जाती है कि फिर वह जमाने में कहीं मात नहीं खा सकता। बोलचाल की भाषा में ऐसी शख्सियत को 'प्रैक्टिकल आदमी' के तौर पर जाना जाता है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सत्ता प्राप्ति का कालजयी पंथ

व्यंग्य

डॉ. प्रदीप मिश्र
लेखक व्यंग्यकार हैं।

> **राजनीतिक-विशेषज्ञों को पार्टियों ने किराए पर लिया कि, 'कोई ऐसा अस्त्र ढूंढिए,जो राजनीति में धर्म का विकल्प बन सके ।' विशेषज्ञों ने शास्त्रों का अध्ययन किया। काफी सोच-विचार किया। फिर कुछ विशेषज्ञ इस बात से सहमत हुए कि, 'धर्म के मंत्र, जब प्रभावी नहीं हों तो राजनीति में उनके स्थान पर यंत्र अर्थात् ईव्हीएम का, विकल्प के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।' अन्य विशेषज्ञों ने वीटो लगाते हुए कहा, 'यंत्र के प्रयोग का फायदा सिर्फ सत्ताधारियों को मिलेगा। हम चाहते हैं कि विकल्पश ऐसा हो जिससे व्यापक राजनीतिक-हित सध सकें।' विशेषज्ञों का यह समूह, तंत्र को राजनीति में धर्म का विकल्प बता रहा था।**

तरह-तरह के धर्म, प्राचीन काल से ही सत्ता-
साधकों की साधना में सहयोग करते रहे हैं। धर्मों
ने सदैव ही यह कार्य,निष्ठा और ईमानदारी से
किया है। लेकिन कुछ दशकों से यह कार्य करने में
वे असहाय नजर आ रहे थे। ऐसे में राजनीतिक-
जगत का चिंताकुल होना स्वाभाविक था। तत्काल
विकल्प ढूंढे जाने लगे। राजनीति में धर्म की जगह
कौन? इस प्रश्न पर नेता मौन हो गए। उनके सारे
तिकड़म गौण हो गए? विकल्प को,धर्म के ही जैसा
दीर्घकालिक सशक्त सत्ता-प्रदायक होना चाहिए।यही
एकमात्र अनिवार्य गुण चाहिए था।
राजनीतिक-विशेषज्ञों को पार्टियों ने किराए पर लिया
कि, 'कोई ऐसा अस्त्र ढूंढिए,जो राजनीति में धर्म
का विकल्प बन सके।' विशेषज्ञों ने शास्त्रों का
अध्ययन किया। काफी सोच-विचार किया। फिर
कुछ विशेषज्ञ इस बात से सहमत हुए कि,' धर्म के
मंत्र, जब प्रभावी नहीं हों तो राजनीति में उनके
स्थान पर यंत्र अर्थात् ईव्हीएम का,विकल्प के रूप
में प्रयोग किया जा सकता है।' विशेषज्ञों ने वीटो
लगाते हुए कहा, 'यंत्र के प्रयोग का फायदा सिर्फ
सत्ताधारियों को मिलेगा। हम चाहते हैं कि विकल्प
ऐसा हो जिससे व्यापक राजनीतिक-हित सध
सकें।' विशेषज्ञों का यह समूह, तंत्र को राजनीति में
धर्म का विकल्प बता रहा था।
विशेषज्ञों को किसी निश्कर्ष में नहीं पहुँचता देख,
नेताओं ने विमर्श की बागडोर अपने हाथ में ली।
और गहन चिंतन के उपरांत, धर्म के एक चमत्कारी
विकल्पं का आविष्कार कर लिया। सभी पार्टियों के
सभी नेता, इस विकल्प को देख मंत्र-मुग्ध थे।
कुछ तो यूरेका-यूरेका कहकर नृत्यन भी कर रहे थे।
वह अद्भुत, अविश्वसनीय और अकल्पनीय विकल्प
था...जाति।
फिर सभी दलों के नेताओं ने राष्ट्रहित में
सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया कि अब
राजनीति में धर्म की जगह जाति का प्रयोग
आधिकारिक रूप से होगा। सत्ता-मार्ग के
निर्माण में जुटे ठेकेदार, इसे सत्ता प्राप्ति का
कालजयी पंथ मान रहे हैं।
पर वे यंत्र के नियंत्रण से सहमत नहीं थे। में निपुण और
जब बात कुछ कम बनी तो राजनीति ने एक नया
आविष्कार किया। इन दिनों जातियों के वोट-बैंक
चलन में हैं। वोट-बैंक है जिसका भारी, करे सत्ता
की तैयारी। हमें तो जातियों ने मारा धर्मों में कहां
दम था.. मेरी तो हार वहां जहां मेरी जाति का वोट
अधिकतम था।

कानून और न्याय

सर्वोच्च न्यायालय का फैसला-1

विनय झैलावत

(पूर्व असिस्टेंट सॉलिसिटर जनरल एवं वरिष्ठ अधिवक्ता)

बांग्लादेश से आए लोगों को 'पहचान' का मामला

सर्वोच्च न्यायालय ने नागरिकता कानून की धारा 6ए की संवैधानिकता को बरकरार रखा है। सर्वोच्च न्यायालय ने चार-एक के बहुमत से इसे सही ठहराया है। इसका मतलब यह हुआ कि जनवरी 1966 से पहले बांग्लादेश से असम में आए लोग भारतीय नागरिक बने रहेंगे। साथ ही 1966 से 1971 के बीच आए बांग्लादेशी भारतीय नागरिकता के लिए आवेदन कर सकेंगे।

नागरिकता कानून धारा 6ए की संवैधानिकता पर सर्वोच्च न्यायालय ने अपना फैसला सुना दिया है। सर्वोच्च न्यायालय की पांच जजों की संवैधानिक बेंच चार-एक से धारा 6ए की संवैधानिकता को बरकरार रखा है। मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ की अगुवाई वाली बेंच में न्यायमूर्ति सुर्यकांत, न्यायमूर्ति एमएम सुरेश, न्यायमूर्ति जेबी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा शामिल थे। खंडपीठ के एकमात्र न्यायमूर्ति जेबी पारदीवाला ने ही धारा 6ए को असंवैधानिक माना है। सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि असम अकॉर्ड अवैधानिक प्रवासियों की समस्या का राजनीतिक समाधान था, जबकि धारा 6ए एक विधायी समाधान था। न्यायालय ने यह भी कहा कि असम की स्थानीय आबादी को ध्यान में रखते हुए यह प्रावधान सही था।

बहुमत से फैसला सुनाते हुए सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि बांग्लादेश के साथ सीमा साझा करने वाले राज्यों में से असम को अलग तरह से देखना सही था। क्योंकि, यहां कि नीय आबादी में अप्रवासियों का प्रतिशत ज्यादा है। पश्चिम बंगाल में 57 लाख अप्रवासी है। जबकि, असम में 40 लाख अप्रवासी बसे हैं। फिर भी असम की कम आबादी को देखते हुए ऐसा करना सही था। क्योंकि, बंगाल की तुलना में असम का जमीनी इलाका काफी कम है। कोर्ट ने माना कि 25 मार्च 1971 की कट-ऑफ डेट भी सही थी। 1979 में असम से अवैध प्रवासियों को बाहर निकालने की मांग को लेकर ऑल असम स्टूडेंट्स यूनियन ने आंदोलन शुरू किया था। लगभग छह साल तक चले आंदोलन के बाद 1985 में एक समझौता हुआ, जिसे 'असम अकॉर्ड' कहा जाता है।

यह समझौता केंद्र सरकार, असम सरकार और आंदोलनकारियों के बीच हुआ था। असम अकॉर्ड का चरण पांच यह कहता है कि जो भी विदेशी 1 जनवरी 1966 से 24 मार्च 1971 के बाद असम में आए विदेशियों की पहचान करने की प्रक्रिया जारी रहेगी और उन्हें वापस भेजा जाएगा। असम अकॉर्ड के बाद ही 1955 के नागरिकता कानून में संशोधन कर धारा 6ए जोड़ी गई। धारा 6 ए के मुताबिक, 1 जनवरी 1966 से पहले बांग्लादेश से आए भारतीय मूल के व्यक्तियों को ही भारतीय नागरिक माना जाएगा। वहीं, जो लोग 1 जनवरी 1966 से 24 मार्च 1971 के बीच आए होंगे, उन्हें अपना रजिस्ट्रेशन करवाना होगा। इनके द्वारा दस

साल असम में रहने के बाद भारतीय नागरिकता मांगी जा सकेगी। हालांकि, इस दौरान वो वोट नहीं डाल सकते। 25 मार्च 1971 के बाद आए लोगों की पहचान की जाएगी और उन्हें कानूनी रूप से निर्वासित किया जाएगा यानी वापस भेजा जाएगा।

'असम संमिलिता महासंघ' नाम के सिविल सोसायटी ग्रुप ने धारा 6ए को भेदभावपूर्ण, मनमाना और गैरकानूनी मानते हुए विरोध किया। इस संस्था ने इसकी संवैधानिकता को चुनौती देते हुए याचिका प्रस्तुत कर कहा कि अवैध प्रवासियों को नियमित करने के लिए अलग-अलग कट-ऑफ़ डेट का प्रावधान करना सही नहीं था। इस धारा को संविधान के अनुच्छेद 6 के आधार पर भी चुनौती दी गई। अनुच्छेद 6 कहता है कि जो कोई भी 19 जुलाई 1948 से पहले पाकिस्तान से भारत आया होगा, उसे नागरिकता दी जाएगी। लेकिन, धारा 6ए जोड़कर असम के लिए ये कट-ऑफ़ डेट 1 जनवरी 1966 तय कर दी गई। याचिका में दलील दी गई कि इससे असम में अवैध प्रवासियों को बढ़ावा दिया गया।

उन्होंने सर्वोच्च न्यायालय में इसकी संवैधानिकता को चुनौती देते हुए मांग की कि 24 मार्च 1971 से पहले की वोटिंग लिस्ट की बजाय 1951 की एनआरसी के आधार पर असम की एनआरसी को अपडेट करने का आदेश दिया जाए। इसके बाद धारा 6ए को चुनौती देते हुए और भी कई याचिकाएं दायर हुई। 2014 में जब इस मामले की सुनवाई शुरू हुई तो न्यायमूर्ति आरएफ नरीमन ने इसे संवैधानिक बेंच के पास भेज दिया। अप्रैल 2017 में पांच जजों की संवैधानिक बेंच बनी। जजों के रिटायरमेंट की वजह से कई बार बेंच को फिर से गठित किया गया। आखिरकार मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ की अगुवाई में गठित हुई पांच जजों की बेंच ने पिछले साल 5 दिसंबर को सुनवाई शुरू की।

12 दिसंबर को इस पर फैसला सुरक्षित रखा गया था। मुख्य न्यायाधीश चंद्रचूड़ सहित न्यायमूर्ति सूर्यकांत, न्यायमूर्ति एमएम सुरेश और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा ने धारा 6ए की संवैधानिकता को बरकरार रखा। न्यायालय ने कहा कि जो लोग 25 मार्च 1971 या उसके बाद बांग्लादेष से असम आए हैं, उन सभी की पहचान की जानी चाहिए और निर्वासित किया जाना चाहिए। चूंकि, सर्वोच्च न्यायालय ने धारा 6ए की संवैधानिकता को बरकरार रखा है, इसलिए बांग्लादेष से आकर असम में बसे लोगों पर इसका असर नहीं होगा। 1 जनवरी 1966 से पहले आए लोग अब भी भारतीय नागरिक ही माने जाएंगे। 1 जनवरी 1966 से 24 मार्च 1971 के बीच बांग्लादेश से आए लोग भारतीय नागरिकता के लिए आवेदन कर सकते हैं, जबकि 25 मार्च 1971 के बाद आए अप्रवासियों की पहचान करने का काम जारी रहेगा और उन्हें वापस भेजा जाएगा।

यदि धारा 6ए का अवैध घोषित कर दिया जाता तो 1966 से पहले बांग्लादेश से आकर असम में बसे लोगों की भारतीय नागरिकता चली जाती और उन्हें विदेशी माना जाता। असम समझौते के मामले सर्वोच्च न्यायालय ने कहा किसी भी राज्य में केवल विभिन्न जातीय समूहों की उपस्थिति स्थानीय आबादी के सांस्कृतिक अधिकारों का उल्लंघन नहीं करती। नागरिकता अधिनियम, 1955 की धारा 6ए की संवैधानिक वैधता को बरकरार रखते हुए, जिसने असम समझौते को मान्यता दी, सर्वोच्च न्यायालय (चार-एक) ने इस तर्क को खारिज कर दिया कि बांग्लादेशझ से प्रवासियों को नागरिकता प्रदान करना संविधान के अनुच्छेद 29 के तहत गारंटीकृत असमिया के सांस्कृतिक और भाषाई अधिकारों का उल्लंघन है। सर्वोच्च न्यायालय ने भारत के मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ के फैसले के माध्यम से इस तर्क को खारिज कर दिया कि किसी राज्य में केवल विभिन्न जातीय समूहों की उपस्थिति अनुच्छेद 29 के तहत अपनी संस्कृति और भाषा के संरक्षण के लिए स्थानीय आबादी के अधिकारों का उल्लंघन करेगी।

याचिकाकर्ताओं का तर्क था कि धारा 6ए अनुच्छेद 29 का उल्लंघन है। इस पर उनका मुख्य तर्क यह था कि बांग्लादेश से असम में प्रवासियों को नागरिकता प्रदान करने से असम में बंगाली आबादी बढ़ेगी। दूसरा, बंगाली आबादी में वृद्धि असमिया आबादी की संस्कृति को प्रभावित करती है। अनुच्छेद 29 (1) के अनुसार, भारत के राज्य क्षेत्र या उसके किसी भाग में रहने वाले नागरिकों के किसी भी वर्ग को अपनी अलग भाषा, लिपि या संस्कृति रखने का अधिकार होगा।

(शेष अगले कॉलम में)

साहित्य

हेमलता म्हस्के

लेखक स्तंभकार हैं।

शाकाहार की समर्थक को साहित्य का नोबेल

नोबेल पुरस्कार समिति' ने पहली बार पशुओं की क्रूरता के खिलाफ अपने लेखन में आवाज बुलंद करने और अहिंसा के सौंदर्य की वकालत करने वाली दक्षिण कोरिया की 53 वर्षीय लेखिका हान कांग को 2024 का साहित्य का नोबेल पुरस्कार उनकी कृति 'इंटेंस पोएटिक प्रोज' के लिए देने की घोषणा की है। स्वीडिश अकादमी की नोबेल समिति के सचिव मैट्स माम ने स्टॉकहोम में कहा है कि हान कांग का लेखन आघातों से टकराने और मानवीय जीवन की कोमलता को उजागर करता है।

हान अपने गहन लेखन और मानवीय भावनाओं को गहराई से प्रस्तुत करने के लिए जानी जाती हैं। हान कांग ने 2016 में 'द वेजिटेरियन' नामक एक विचलित करने वाले उपन्यास के लिए अंतरराष्ट्रीय 'बुकर पुरस्कार' जीतकर शाकाहारी प्रवृत्ति को मानवीय सौंदर्य बताकर खूब प्रसिद्धि बटोरी थी, जिसमें एक महिला के मांस खाने से इनकार करने के निर्णय के विनाशकारी परिणाम होते हैं। उनके लिए यह पुरुस्कृत उपन्यास अंतरराष्ट्रीय लेखिका के रूप में पहचान पाने का टर्निंग प्वाइंट भी साबित हुआ। अपने इस उपन्यास के बारे में हान कांग का कहना है कि उनका यह उपन्यास केवल कोरिया की पितृसत्ता के लिए नहीं है, वह समस्त मानव जाति के लिए है।

सिर्फ़ भोजन के लिए किसी जानवर को मारना, जबकि तमाम शाक-सब्जी उपलब्ध हैं। मात्र भोजन के लिए किसी खूबसूरत शरीर को क्यों नष्ट करना! किसी और ने भी पूछा है कि अगर आप जानवर मार सकते हैं तो मानव-भक्षण क्यों नहीं? भोजन के लिए आदमी को मारना क्यों गलत है? आदमी की माँ का माँस तो आदमी के शरीर के लिए और अधिक मुफ़ीद होगा, लेकिन हम ऐसा नहीं करते क्योंकि यह संवेदनशीलता का मामला है। हान कांग के अनुसार 'द वेजीटेरियन' मनुष्य की मूल प्रवृति से जुड़ा प्रश्न है। यह उसकी कोमलता और निर्मलता का प्रश्न है। यह उसके दोहरे मापदंडों का प्रश्न है।

पिछले वर्ष एक साक्षात्कार में हान कांग ने बताया था कि 'द वेजिटेरियन' का लेखन उनके जीवन का एक कठिन दौर था, जहां उनके सामने यह प्रश्न खड़ा हो गया था कि क्या उन्हें उपन्यास पूरा करना चाहिए या फिर एक लेखक के रूप में जीवित रहना चाहिए। उनकी चर्चित किताबों में 'द वेजीटेरियन,' 'द व्हाइट बुक,' 'ह्यूमन एक्ट्स' और 'ग्रीक लेसंस' शामिल है।

नोबेल समिति ने कहा है कि शरीर और आत्मा, जीवित और मृत्यु के बीच संबंधों पर लेखन में हान कांग को महारत हासिल है। वह उसके बारे में और प्रयोगात्मक शैली के कारण एक नव-प्रवर्तक बन गई हैं। हान कांग का कहना है कि उपन्यास लिखना मेरे लिए सवाल पूछने का एक तरीका है। मैं लेखन से अपने सवालों को पूरा करने की कोशिश करती हूं।

हान के नोबेल पुरुस्कार जीतने से नोबेल समिति की जिन बातों को लेकर आलोचना की जाती रही है उसका खंडन भी हुआ है। नोबेल साहित्य सम्मान की लंबे समय से आलोचना होती रही है कि इसमें कहानियों से ज्यादा शैली पर जोर दिया जाता है। यह यूरोपीय और उत्तरी अमेरिकी लेखन पर बहुत अधिक केंद्रित है। इसके साथ ही इस सम्मान के पुरुष प्रधान होने का भी आरोप लगता रहा है। अब तक 119 लेखकों को यह सम्मान दिया गया है, जिनमें महिलाओं की संख्या नहीं के बराबर है।

हान कांग 18 वीं महिला हैं, जिनको यह पुरुस्कार 10 दिसंबर को दिया जाएगा। इसी के साथ हान कांग नोबेल साहित्य पुरुस्कार जीतने वाली पहली एशियाई महिला और पहली दक्षिण कोरियाई लेखिका बनने के साथ दूसरी दक्षिण कोरियाई नागरिक भी बन गई हैं। इससे पहले कोरिया के दिवंगत पूर्व राष्ट्रपति किम डे जंग ने 2000 में शांति के लिए नोबेल पुरुस्कार जीता था।

उनके जीवन की कहानी भी प्रेरणादायक है। हान का जन्म 1970 में दक्षिण कोरिया के ग्वांगजू शहर में हुआ था। उनके पिता भी एक प्रतिष्ठित उपन्यासकार हैं। जब वे 9 साल की थीं तो परिवार सहित सियोल चली गई थीं। लेखन के साथ-साथ हान कांग ने खुद को कला और संगीत के लिए भी समर्पित कर दिया। हान ने 1993 में कविता लिखना शुरू किया। शुरू में पांच कविताओं को प्रकाशित कराया और साहित्यिक सफर की शुरुआत की।

उन्होंने 1994 में 'सियोल शिनमुन स्प्रिंग लिटरेरी प्रतियोगिता' जीती और खुद को एक उपन्यासकार के तौर पर स्थापित करना शुरू किया। 1995 में कहानी लेखन के क्षेत्र में उतरीं। इसी साल उनका पहला कहानी संग्रह 'येओसु' प्रकाशित हुआ। 1998 में 'आर्ट्स काउंसिल, कोरिया' के सहयोग से 3 महीने के लिए 'यूनिवर्सिटी आफ आयोवा इंटरनेशनल राइटिंग प्रोग्राम' में भाग लिया।

स्वीडिश अकादमी द्वारा एक ऐसे उपन्यासकार का चयन, जिसे 'ऐतिहासिक आघातों का सामना करने वाले और मानव जीवन की नजाकत को उजागर करने वाले उनके गहन काव्यात्मक गद्य के लिए' मान्यता दी गई है, किसी भी प्रकार की अंतर्राष्ट्रीय मान्यता के प्रति सचेत रहने वाले देश के गौरव की बात है। (सप्रेस)

विचार

विवेक कुमार मिश्र

लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

मगन रहने के लिए धन नहीं मन की जरूरत

आनंद सृजन की तो बात ही क्या करें...इनके लेखे सृजन कहां से होगा जब दूर दूर तक संतोष ही न हो, पता नहीं क्या पा लेने की होड़ हो तो भला आनंद कहां से प्रकट होगा ? आनंद तो दूर कहीं छिप जाता है और खिन्नता की विचित्र स्थितियों को लेकर घूमते लोगों को कहीं भी देखें दुःख ही प्रकट होता है । पर इसके ठीक विपरीत उन लोगों का आभार मानना चाहिए जो कुछ न होते हुए भी हमेशा अपने संवाद से , अपनी उपस्थिति से , अपने हर्षातिरेक से खुशी का एक नया ही रस पैदा कर देते हैं । आप बस इनके आस-पास आकर देखिए, इनके साथ थोड़ी देर बैठ जाइए , बस मन से इनकी बातें सुन लीजिए, फिर क्या ये तो मन , हृदय सब उड़ेल कर रख देते हैं । होता क्या है कि इन्हें अभावग्रस्त या फटेहाल मान कोई इनके आसपास या नजदीक आता नहीं, इनके मन में भाव भरा ही रहता है बस कोई एक क्षण के लिए रुक कर सुन तो लें ।

कुछ लोग आनंद लोक में होते हैं । आनंद की दशा को जीते हैं और रसदशा उनके आसपास ही होती है । रस इस बात का नहीं कि क्या मेरे पास है और क्या आपके पास है और जो आपके पास है वह मुझसे ज्यादा कैसे हो गया ? जो लोग इस तरह से सोचते हैं उनके पास न तो रस आता है न सुख आता है और न ही कभी आनंद का वास होता है । आनंद सृजन की तो बात ही क्या करें...इनके लेखे सृजन कहां से होगा जब दूर दूर तक संतोष ही न हो, पता नहीं क्या पा लेने की होड़ हो तो भला आनंद कहां से प्रकट होगा ? आनंद तो दूर कहीं छिप जाता है और खिन्नता की विचित्र स्थितियों को लेकर घूमते लोगों को कहीं भी देखें दुःख ही प्रकट होता है। पर इसके ठीक विपरीत उन लोगों का आभार मानना चाहिए जो कुछ न होते हुए भी हमेशा अपने संवाद से, अपनी उपस्थिति से , अपने हर्षातिरेक से खुशी का एक नया ही रस पैदा कर देते हैं । आप बस इनके आस-पास आकर देखिए, इनके साथ थोड़ी देर बैठ जाइए, बस मन से इनकी बातें सुन लीजिए, फिर क्या ये तो मन, हृदय सब उड़ेल कर रख देते हैं । होता क्या है कि इन्हें अभावग्रस्त या फटेहाल मान कोई इनके आसपास या नजदीक आता नहीं, इनके मन में भाव भरा ही रहता है बस कोई एक क्षण के लिए रुक कर सुन तो लें। यह सब सुनने समझने की स्थिति सबमें नहीं होती न ही सबमें इस तरह का धैर्य होता कि राह चलते किसी के लिए एक पल रुक जाएं। इस मामले में साथ में जब रामावतार सागर गज़लकार साथ रहते हैं तो आनंद का सोता फूटता रहता है । होता क्या है कि पास ही एक जूस का ठेला है, लोग बाग जूस पीते रहते हैं । हमलोग भी कभी कभार जूस पीने यहां आ जाते हैं, यहां जो जूस लाने वाला युवक है वह अद्भुत रंग में हमेशा ही रहता है । गाड़ी का कांच खुलवा कर जूस कि गिलास पकड़ायेगा और अति प्रसन्नता के साथ कह उठेगा कि वाह क्या ठंडक हो रही है साब! पसीना, गर्मी सब छूं । आनंद आ गया साब । आपको देख कर कलेजा में ठंडक आ जाती है । अरे दादा रे दादा क्या ठंडी है । अब आप जूस पीते रहिए आनंद के गोते में डूबते रहिए । यह संसार है और इसमें ऐसी अनंत आनंद की उर्मियां उठती ही रहती हैं । हंसते गाते आप चलते रहिए यह दुनिया है और इस दुनिया में तरह तरह से खुशी बिखरने वाले खुश लोग रहते हैं । इनके उपर चर्चा कर ही रहे थे कि रामावतार सागर जी ने कहा कि सर इनके पास कुछ भी खास नहीं है पर ये देखिए कितना मगन रहते हैं । हां मगन रहने के लिए धन की नहीं मन की जरूरत होती है । जिसके पास सुंदर मन होगा वह हर स्थिति में खुश रहेगा और औरों को भी अपनी उपस्थिति से खुशी देगा । ये लोग अलौकिक आनंद के धनी लोग हैं । ये हर समय अपने वर्तमान में रहते हैं, मन की दशा से आनंद की दशा में जाते हुए आत्मानंद हो जाते हैं। ये लोग अपनी आत्मा को जीते हैं । वैसे देखा जाए तो ज्यादातर समझदार लोग दुनिया को समझने और समझाने के लिए दुनिया को दिखाने के लिए ही जीते हैं । जिसमें स्वयं तो दुःखी रहते ही हैं दूसरों को भी बिना बात दुःखी किए रहते हैं । असली जिंदगी तो मन को साध लेने वाले ही जीते हैं । संसार का कोई भी कोना क्यों न हों हर जगह आनंद के ठीहे पर बैठे लोगों से मिलते जुलते चलिए हो सकता है कि आपको भी जीने की कुछ कला मिल जायेगी । समझ में ये बात कभी नहीं आई कि लोग-बाग क्यों इतना परेशान हैरान दिखते हैं और ज्यादातर की परेशानी का कारण वे स्वयं नहीं होते, दूसरे ही होते हैं कौन क्या कर रहा है? कौन कहां पहुंच गया? किसे कहां पुरस्कार मिल गया? किसकी कहां पहुंच है आदि आदि बातों को लेकर दुःखी मन घूमते फिरते बहुतेरे मिल जायेंगे। यदि आप अपने दुःख और कष्ट को लेकर परेशान हैं तो यह बात स्वाभाविक लगती है और यह भी तय है कि एक दिन चीजों के बदलने पर स्वाभाविक रूप से आप खुश हो सकते हैं पर यदि स्थाई भाव दुःख का बना लिया और वह भी अन्य के कारण तो इसका कोई उपाय नहीं है। फिर बने रहिए दुःखी और ऐसे दुःखी प्रसाद लोगों से दुनिया भरी है। पर संसार तो खुश रहने में ही चलता फिरता दिखता है। इसीलिए अलौकिक आनंद को जीने वाले लोगों का जब तब चक्कर लगा लीजिए दुनिया आसान हो जायेगी। यह आसान नहीं है पर प्रयोग करिए। हमारे यहां प्रयोगशाला की स्थिति केवल प्रायोगिक विषयों को मान लेने की है , जबकि प्रयोग और उपाय हर जगह किये जाते हैं और कुछ करिए या मत करिए पर अपने प्रयोगशाला में मनुष्य का परीक्षण भी करते रहिए उसके स्वभाव का विश्लेषण करते रहिए। आधी से ज्यादा बीमारियों की दवा तो लोगों के अध्ययन से ही दूर हो जाती है। इसलिए चलते चलते आनंद के ठीहे पर भी कभी कभार रुक लिया कीजिए। यहां अलौकिक आनंद को जीते लोग मिलेंगे। अलौकिक आनंद को जीना हर किसी के बस में नहीं होता और जो अलौकिक आनंद को जीता है उसके लिए दुनिया अपने आप ही आसान हो जाती है । ऐसे लोग हर दिशा में, हर दशा में आनंद में होते हैं । आनंद के लिए किसी तरह की पूंजी की जरूरत नहीं होती है । यहां बस मन की पूंजी होती है। यदि आपके पास मन की पूंजी है तो आपको आनंद की दिशा में जीना आसान हो जाता है । कोई कोई आदमी ऐसे मिल जाते हैं कि उन्हें देखकर लगता ही नहीं कि इनके पास ज़िंदगी में किसी तरह का आराम होगा , हो सकता है कि उनके पास ढ़ेले भर पैसा भी न हो पर ये लोग इस तरह दिखते हैं कि संसार में इनसे ज्यादा अमीर कोई नहीं हो सकता। आदमी की खुशियों का आधार कोई पद या पैसा भर नहीं होता वह यदि मन दशा से खुश हों और जीवन सामान्य ढ़ंग से चल रहा है तो वह हर दिशा में खुशी और आनंद का झरना लेकर चलता है ।

नाबालिग से दुराचार करने वाला आरोपी गिरफ्तार

बैतूल। दो महीने से फरार दुराचार के आरोपी को पुलिस ने रायसेन से गिरफ्तार किया है। आरोपी पर नाबालिग को बहला-फुसलाकर उसके साथ दुराचार किये जाने का आरोप था। घटना के बाद से आरोपी नंदू मर्सकोले फरार चल रहा था। पुलिस ने बताया कि अगस्त महीने में पीड़िता ने शिकायत दर्ज कराई थी। शिकायत के आधार पर आरोपी के खिलाफ पॉक्सो एक्ट और दुष्कर्म की धाराओं में मामला दर्ज किया था। घटना के बाद से आरोपी फरार था। नंदू की गिरफ्तारी के लिए पुलिस अधीक्षक निश्चल झारिया ने इनाम भी घोषित किया था। मुखबिर से सूचना मिलने पर कोतवाली पुलिस ने टीम गठित की, जिसमें एसआई दिनेश कुमरे, एएसआई जगदीश रैकवार, और अन्य पुलिसकर्मी शामिल थे। टीम ने रायसेन पहुंचकर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस आरोपी से पूछताछ कर रही है।

रेलवे ट्रेक पर मिला युवक का शव, शिनाख्त नहीं

बैतूल। गंज पुलिस ने एक अज्ञात युवक का शव रेलवे ट्रैक के पास से बरामद किया है। फिलहाल मृतक की पहचान नहीं हो सकी है। पुलिस द्वारा आसपास गुमशुदा की सूचना जुटाई जा रही है। बैतूल गंज टीआई रविकांत डहरिया के मुताबिक शनिवार थाना क्षेत्र के बरसाली में एक लाश पड़ी होने की सूचना मिली थी, जिस पर पुलिस दल को जांच के लिए मौके पर भेजा गया था। यहां नागपुर से इटारसी की ओर जाने वाले रेलवे ट्रैक पर शव मिला है। आशंका है कि व्यक्ति या तो किसी चलती ट्रेन से गिरा है, या उसके साथ कोई दुर्घटना हुई है। जानकारी मिलने पर आज शव मौके से बरामद कर जिला अस्पताल भेजा गया है। शव देखने में पांच-छह दिन पुराना लग रहा है। जिससे उसका शरीर डीकंपोज हो गया है। मृतक प्रिंटेड शर्ट और पेंट पहने हुए है। चेहरे पर स्किन ने होने की वजह से उसकी पहचान फिलहाल मुश्किल है। शव का परीक्षण कर मृत्यु का कारण जानने का प्रयास भी किया जा रहा है।

बीच-बचाव करने गये युवक को मारा चाकू

बैतूल। दो पक्षों के बीच विवाद में बीच-बचाव करने गये एक युवक पर ही चाकू से हमला कर दिया। जिसमें युवक को गंभीर चोटे आई। घायल को उपचार के लिए जिला अस्पताल में भर्ती किया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार शनिवार रात इंदिरा कालोनी में दो पक्षों के बीच विवाद हो रहा था। इसी बीच इलाके में रहने वाला गोलू विश्वकर्मा बीच बचाव करने पहुंचा, जहां एक आरोप ने गोलू पेट में चाकू घोंप दिया, जिसे परिजन तत्काल जिला अस्पताल लेकर पहुंचे। इलाज के बाद उसकी हालत खतरे से बाहर बताई जा रही है। घटना को लेकर गोलू ने बताया कि बीचबचाव करने के दौरान ही सलमान, बबलू, तनवीर और राजस्थान से आए एक अन्य युवक ने उसी पर हमला कर दिया। उसके पेट मे दाएं तरफ चाकू मारा गया है। घटना के बाद आरोपी मौके से फरार हो गए। इधर अस्पताल चौकी से गंज पुलिस को सूचना दी गई है। घायल युवक के बयान के आधार पर पुलिस ने मामला दर्ज कर आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है।

तूफान गाड़ी चोरी कर ले गये चोर, थाने में शिकायत

शाहपुर। क्षेत्र में लगातार चोरियों की घटनाएं बढ़ती जा रही है। जिससे आमलोगों में भय का माहौल बन गया है। हालत यह है कि अब चोर वाहनों को भी निशाना बनाने से नही चूक रहे है। प्राप्त जानकारी के अनुसार मोतीढाना शाहपुर निवासी दीपक खेड़ले ने बताया कि उनकी तूफान फोर व्हीलर गाड़ी जो गोल्डन कलर की है, बीती रात लगभग 2 बजे अज्ञात चोरों ने चोरी कर ली। गाडी को मोतीढाना से, पहले बंद हालत में घर से धक्का लगाकर मुख्य मार्ग पर ले गए और वहां पर गाड़ी को चालू किया। उसके बाद गाड़ी बैतूल दिशा की ओर लेकर फरार हो गए। जिसकी जानकारी सुबह पुलिस थाना शाहपुर को दे दी गई है। पुलिस इस मामले में जांच कर और चोरों का पता लग रही है।

वर्षावास के समापन पर शहर में निकली भव्य धम्म रैली

पंचशील बुद्ध विहार सदर से लल्ली चौक तक गूंजा धम्म संदेश

बैतूल। पंचशील बुद्ध विहार सदर में तीन महीने से चल रहे वर्षावास कार्यक्रम का रविवार को समापन किया गया। इस आयोजन की शुरुआत आषाढ़ी पूर्णिमा 21 जुलाई को हुई थी और 20 अक्टूबर तक यह धार्मिक साधना चली। कार्यक्रम का आयोजन वर्षावास समिति बैतूल द्वारा किया गया, जिसका मुख्य आकर्षण पूज्य भंते विनय रक्खिता और पूज्य भिक्कू संघ द्वारा की गई विशेष साधना रही। यह वर्षावास बैतूल जिले के लिए विशेष सौभाग्य की बात रही, क्योंकि इसके माध्यम से पूरे जिले का वातावरण बुद्धमय हो गया। कार्यक्रम में बुद्ध धर्म के अनुयायियों की बड़ी संख्या में उपस्थिति रही, जिससे शहर में धम्म और शांति का संदेश दिया गया।

रविवार को वर्षावास के समापन अवसर पर सुबह 9 बजे से 10.30 बजे तक भिक्कू संघ के नेतृत्व में कठिन चीवर दान की धम्म रैली का आयोजन किया गया। यह रैली पंचशील बुद्ध विहार से प्रारंभ होकर लल्ली चौक तक गई और वहां से पुनः वापस बुद्ध विहार आकर सम्पन्न हुई। इस धम्म रैली में बड़ी संख्या में अनुयायियों ने भाग लिया और भिक्कू संघ को चीवर दान करते हुए अपनी श्रद्धा व्यक्त की। पूज्य भंते विनय रक्खिता ने इस वर्षावास के दौरान बुद्ध की शिक्षाओं पर आधारित विभिन्न प्रवचन दिए। वर्षावास समिति के आयोजकों ने इस कार्यक्रम की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त की और भिक्कू संघ के प्रति आभार प्रकट किया। इस तीन महीने के आयोजन से बैतूल का वातावरण शांति, सद्भाव और आध्यात्मिक ऊर्जा से परिपूर्ण हो गया। यह कार्यक्रम जिले के इतिहास में महत्वपूर्ण अध्याय बन गया। भारतीय बौद्ध महासभा के अध्यक्ष संदीप पाटिल ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आने वाले वर्ष में भव्य रूप से कार्यक्रम किया जाएगा।

आंधी-तूफान और बारिश का कहर : खेतों में भरा पानी, कटाई कार्य प्रभावित, फसलों को भी नुकसान

स्कूल की उड़ी छत, पांच बच्चे और शिक्षक घायल, उपचार जारी

संजय द्विवेदी बैतूल। बारिश से जहां किसानों की मुश्किलें बढ़ गई है, वहीं कुछ क्षेत्रों में नुकसानी की खबरें भी सामने आई है। भीमपुर विकासखंड के रतनपुर स्थित एक सरकारी स्कूल की छत तेज आंधी के कारण उड़ गई, जिससे वहां पढ़ाई कर रहे पांच बच्चे और एक शिक्षक घायल हो गए, वहीं शासकीय प्राथमिक शाला कुही के प्रांगण में लगा गुलमोहर का पेड़ तेज हवा के कारण गिर गया। इधर घोड़ाडोंगरी ब्लॉक की जुवाड़ी पंचायत के कतिया कोलारी गांव में आकाशीय बिजली गिरने से मकान धराशाई हो गया एवं घर में बंधी बकरियां भी मकान में दब गई, जिससे दो बकरियों की मौत हो गई। ग्रामीणों ने बताया कि आंधी तूफान में गांव के आसपास कई पेड़ उखड़ गए और बारिश ने फसलों को बर्बाद कर दिया है। खेतों में पानी भर गया है, जिससे किसानों को बड़ा नुकसान हुआ है।

दरअसल पिछले तीन दिनों से जिले में रुक-रुककर बारिश हो रही है। बारिश से खेत के खेत, पानी से भर गये है। कटी हुई मक्का में पुनः अंकुरण होने लगा है, वहीं सोयाबीन गीली होने से बीज काले पडने की संभावनाएं बढ़ गई है। किसानों का कहना है कि खरीफ फसल की कटाई कार्य प्रारंभ किया ही था कि, बारिश होने लगी। बारिश से खेतों में खड़ी और काटकर रखी गई फसल भीग गई। बारिश से किसान कटाई नहीं कर पा रहे है। जिसका असर रबी फसल की बुआई पर पड़ेगा। किसानों ने बताया कि अब तेज धूप खिलने और फसल सूखने के बाद ही इसकी कटाई कार्य हो पायेगा। फसल कटाई के बाद खेत बनाने और बुआई में लगभग 15 दिन से अधिक का समय लगेगा। जिससे रबी की बुवाई भी 15 दिन देरी से शुरू हो पाएगी।

खरीफ की कटाई प्रभावित, पिछड़ेगा रबी फसल का बुआई कार्य- प्रदेश भर में जुलाई के बजाय अगस्त में सक्रिय हुए मानसून ने खरीफ की खेती के साथ ही रबी की बुवाई को भी प्रभावित कर दिया है। बारिश में देरी से खरीफ की फसलें 15 दिन देरी से तैयार हुई है। दूसरी तरफ समय पर खेत खाली नहीं होने की स्थिति में रबी की बुवाई भी 15 दिन देरी से शुरू हो पाएगी। कृषि कैलेंडर के मुताबिक खरीफ की फसलों की कटाई के बाद सितंबर से रबी सीजन की फसलों की बुआई शुरू कर दी जाती है। इस बार सितंबर के पहले सप्ताह तक मानसूनी बादल सक्रिय रहने की स्थिति में किसान सितंबर मध्य तक खरीफ की फसलों की कटाई शुरू कर पाए हैं। अब फसलों की कटाई शुरू हुई थी, तो बारिश किसानों के सामने विलेन बनकर खड़ी है। कृषि विभाग के अनुसार खेत खाली नहीं होने की स्थिति में रबी की बुवाई में 15 से 20 दिन तक की देरी हो सकती है।

जिले में 31.7 मिमी और घोड़ाडोंगरी में 4 इंच बारिश दर्ज- पिछले 24 घंटे के दौरान बैतूल जिले में 31.7 मिमी बारिश दर्ज की गई है। इस बारिश के बाद जिले में औसत बारिश का आंकड़ा 1096 मिमी यानि 43.8 इंच पर पहुंच गया है। यह का आंकड़ा पिछले वर्ष की बारिश के समतुल्य है। पिछले साल अक्टूबर तक 1096.1 मिमी बारिश हुई थी। शनिवार रात सबसे ज्यादा बारिश जिले के घोड़ाडोंगरी क्षेत्र में हुई, यहां 19 सुबह 8 बजे से लेकर 20 सुबह 8 बजे तक 101.0 मिमी बारिश यानि 4.0 इंच बारिश दर्ज की गई है। इसके अलावा जिले के बैतूल में 7.9 मिमी, चिचोली 9.2 मिमी, शाहपुर 36.0 मिमी, मुलताई 4.2 मिमी, प्रभातपट्टन 3.2 मिमी, आमला 8.0 मिमी, भैंसदेही 40.0 मिमी, आठनेर 47.3 मिमी, भीमपुर 60.0 मिमी बारिश दर्ज की गई।

स्कूल की उड़ी छत, बच्चे सहित शिक्षक घायल

रतनपुर के एकीकृत विद्यालय में तेज आंधी और बारिश के चलते स्कूल की छत उड़ गई। इस हादसे में पांच बच्चे सहित शिक्षक घायल हो गया। घायलों में से तीन बच्चों को माइनर चोटें आई हैं, जबकि दो बच्चों को अधिक गंभीर चोटें लगी है। घायल हुए बच्चों में आकांक्षी पिता रामकिशोर, काजल पिता शंकर, ओमप्रकाश पिता शिशुपाल, रंजीत पिता रामनाथ और अर्णव पिता धन्नू शामिल है। एक शिक्षक भी इस घटना में घायल हुए हैं। सभी घायलों को पहले चिचोली सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया। चार बच्चों की गंभीर स्थिति को देखते हुए उन्हें बैतूल जिला अस्पताल रेफर किया गया है, जहां उनका उपचार जारी है।

मकान धराशाही, दो बकरियों की मौत

तेज हवा और बारिश से घोड़ाडोंगरी ब्लाक के गांवों में नुकसान की बात सामने आई है। घोड़ाडोंगरी ब्लॉक की जुवाड़ी पंचायत के कतिया कोलारी गांव में बारिश और तेज हवा चलने से मकान धराशाई हो गया। घर में बंधी बकरियां भी मकान में दब गई। जिससे दो बकरियों की मौके पर ही मौत हो गई। ग्रामीण गोलू तुमड़ाम ने बताया कि जिस समय यह घटना घटी, उसे समय घर का मालिक मजदूरी करने के लिए बाहर गया हुआ था। वह उनकी पत्नी भी पड़ोस के घर में गई हुई थी। जिससे बड़ी घटना नही हुई। इधर शासकीय प्राथमिक शाला कुही के प्रांगण में लगा एक गुलमोहर का पेड़ भी तेज हवा के कारण गिर गया। जिससे एक बहुत बड़ा खतरा टल गया, क्योंकि उस समय स्कूल में सभी छात्र-छात्राएं एवं शिक्षक शिक्षिका उपस्थित थे। तभी अचानक तेज हवा के कारण गुलमोहर का पेड़ स्कूल के प्रांगण में एवं कुछ शाखाएं स्कूल की बिल्डिंग पर गिर गई।

इनका कहना है -

जिन किसानों ने बीमा कराया है और बारिश से उनकी फसल, जो कटी हुई है या खेतों में खड़ी है, को नुकसान हो रहा है, ऐसे किसानों को तत्काल 1447 पर शिकायत करनी चाहिए, ताकि मौके पर मुआयना हो सके और उनकी समस्या का समाधान हो सके। वैसे कृषि विभाग द्वारा भी सर्वे किया जा रहा है।

- आनंद बडोनिया, उप संचालक, कृषि विभाग बैतूल

बारिश से क्षतिग्रस्त फसलों के नुकसान के आकलन के लिए होगा सर्वे, बैतूल विधायक ने कलेक्टर से की चर्चा

बैतूल। मानसून की वापसी के दौर मे बीते दिनो से जिले में हो रही बारिश से अनेक ग्रामों मे रबी फसलों विशेषकर सोयाबीन फसल को खासा नुकसान हुआ है। बैतूल जिले सहित बैतूल विधानसभा क्षेत्र के प्रभावित किसानों ने बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल को बारिश से फसलों को हो रहे नुकसान से अवगत करावाकर सर्वे करवाने की मॉग की थी। मामले को गंभीरता से लेकर बैतूल विधायक नें कलेक्टर के अवकाश पर होने के बावजूद उनसे मोबाईल पर चर्चा कर बीते दिनों से हो रही बारिश से अनेक ग्रामों में परिवक्व हो चुकी सोयाबीन सहित अन्य फसलों को हुए नुकसान की विस्तार से जानकारी देकर बारिश से क्षतिग्रस्त फसलों के नुकसान का आकलन के लिए सर्वे करवानें की मांग की। बैतूल कलेक्टर ने श्री खण्डेलवाल को आश्वस्त किया कि बारिश से जिन ग्रामों में ज्यादा नुकसान हुआ है उन ग्रामों में फसलों का सर्वे कार्य तुरंत शुरू करवानें के लिए राजस्व विभाग के अधिकारियों को आदेशित किया जा रहा है। जिससे प्रभावित किसानों को राहत दिलवाई जा सके।

आसमान में बादल छाने से चांद देखने को लेकर बना रहा संशय

पति के हाथों से जल पीकर महिलाओं ने तोड़ा करवा चौथ का व्रत

बैतूल। पति की लंबी उम्र के लिए रविवार को महिलाओं ने पूरे विधि विधान से करवा चौथ का व्रत रखकर पूजा अर्चना की। व्रत रखने वाली महिलाओं ने सुबह से ही करवा चौथ पूजन की तैयारियां शुरु कर दी थी। रात्रि में एक बार फिर दुल्हन की तरह श्रृंगार कर महिलाओं ने चांद दिखने के बाद पूजा अर्चना की और पति के हाथों जल पीकर अपना व्रत खोला। पति की दीर्घायु की कामना के लिए किए जाने वाले इस व्रत को लेकर सुहागन महिलाओं में काफी उत्साह दिखाई दिया। करवा चौथ व्रत के चलते महिलाओं को बाजार में जमकर खरीदी करते हुए देखा गया। कपडों, मिठाईयों के अलावा पूजन सामग्री की दुकानों पर भीड़ रही। व्रत के एक दिन पूर्व व व्रत के दिन तक कई महिलाओं ने अपने हाथों में मेहंदी लगवाई। करवा चौथ व्रत को लेकर नवविवाहितों के चेहरों पर काफी उत्साह दिखाई दिया। पूजा-अर्चना के बाद अपने पति के हाथ से जल पीकर व्रत खोला। वहीं कई महिलाओं ने पूरा चांद देखने के बाद पूजन किया। चांद दिखाई देने के साथ ही महिलाओं ने करवा चौथ माता की पूजा की और छन्नी से अपने पति का चेहरा देखकर उनके हाथों से जल पीकर अपना व्रत पूरा किया। इस अवसर पर पति ने अपनी पत्नियों को गिफ्ट उपहार भी भेंट किये।

चांद पर टिकी रहीं नजरें- दिनभर निर्जला व्रत रखने के साथ ही महिलाओं की आंखों में सुबह से ही रात होने का इंतजार दिखाई दे रहा था। चांद के दर्शनों व उसकी पूजा के लिए महिलाएं बेसब्री से आसमान में निगाहे टिकाए रही। करवा चौथ व्रत रखने वाली महिलाओं को चांद के दर्शनों के लिए छत पर खड़े होकर घंटों इंतजार करते हुए देखा गया। करवा चौथ पूजन के एक दिन पहले शाम के समय बादल छाने और बारिश के चलते महिलाओं में चांद के दिखने का संशय बना था। यही हाल रविवार को भी बना रहा। सुबह बारिश होने और आसमान में बादल छाने की वजह से महिलाओं के चेहरे मायूस भी नजर आये।

गुजरात से आये पंडितों ने बालाजीपुरम मंदिर में जोड़ों से करवाया करवा चौथ का पूजन

बैतूल। भारत के पांचवें धाम श्री रूकमणी बालाजी मंदिर बालाजीपुरम बैतूल में करवा चौथ पर सामूहिक पूजन किया गया। इस बार यहां सामुहिक करवा चौथ पूजा में ..... अधिक जोड़े शामिल हुए। बालाजीपुरम के प्रमुख पुजारी असीम पंडा स्वामी के अनुसार शाम 6 बजे से भगवान बालाजी की संध्या आरती की गई। इसके बाद शाम 7 बजे से बालाजीपुरम मंदिर प्रांगण में बने भक्त निवास के सामने वॉटरप्रुफ टेंट में सामूहिक पूजन का कार्यक्रम संपन्न हुआ। जिसमें सभी महिलाओं को पूजन सामग्री पूर्णत- निशुल्क दी गई। असीम पंडा स्वामी ने बताया कि सामूहिक पूजन गुजरात से पंडितों द्वारा कराया गया। पूजन और सामूहिक भोज की तैयारियां भी की गई थी। चन्द्रमा को अर्घ्य देने के बाद परंपरा अनुसार पति अपनी पत्नी के लिए थाली सजाकर लाये और व्रत के बाद पहला निवाला खिलाया। सभी दंपतियों के सामूहिक भोज के साथ ही शेष श्रद्धालुओं को भी भोजन प्रसादी दी गई।

भारतीय प्रतिभूति बाजार विषय पर निवेशक जागरूकता कार्यक्रम संपन्न

बैतूल। विश्व निवेशक सप्ताह के अंतर्गत रविवार को स्थानीय होटल आईसीइन में इन्वेस्टर अवेयरनेस कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में एनएसई से अभिजीत नंदमेहर द्वारा निवेशकों को बचत एवं निवेश, वित्तीय नियोजन के स्तम्भ, महंगाई दर, पावर आफ कंपाउंडिंग, निवेश के स्तंभ म्युचुअल फंड, सावरेन गोल्ड बॉन्ड एवं सारथी ऐप के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। भारतीय प्रतिभूति बाजार एक परिचय विषय पर आयोजित कार्यक्रम में प्रश्न मंच का भी आयोजन किया गया, जिसमें विजेताओं को गिफ्ट में टीशर्टस, पानी बोतल एवं किताबें प्रदान की गई। कार्यक्रम का संचालन सेबी स्मार्ट ट्रेनर जितेंद्र धुंडे एवं आभार आशीष देशभ्रतार ने व्यक्त किया। इस अवसर पर प्रो.शंकर सातनकर, डॉ.अजय चौबे, प्रो.अनिल सोनी, डॉ.साहेबराव झरबडे, डीके मगरदे, डॉ.लोकेश कुमार, शशिकांत दानी, डॉ.आजाद खातरकर, डॉ.रितु चौबे, डॉ.अभय प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

केन्द्रीय राज्य मंत्री की अध्यक्षता में रोगी कल्याण समिति की बैठक आयोजित

बैतूल। केन्द्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास उईके की अध्यक्षता में रविवार को सीएमएचओ कार्यालय में रोगी कल्याण समिति की बैठक संपन्न हुई। बैठक में जिला अस्पताल की विभिन्न व्यवस्थाओं पर चर्चा की गई। केंद्रीय मंत्री श्री उईके ने बैठक में कहा कि जिला अस्पताल में आने वाले मरीजों को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो। जिला अस्पताल में जिन संसाधनों की अवश्यकता है, उनकी पूर्ति की जाए। अनावश्यक लोग परिसर में एकत्रित न हो और पार्किंग व्यवस्था भी ठीक की जाए। विधायक हेमंत खंडेलवाल ने सीसीटीवी कैमरों के माध्यम से जिला अस्पताल में निगरानी रखे जाने की बात कही। बैठक में आईसीयू में भर्ती बीपीएल कार्ड धारक, आयुष्मान कार्ड धारक और बुजुर्ग मरीजों को छोड़कर एपीएल वर्ग के मरीजों से एक हजार रूपए प्रतिदिन बेड चार्ज लिए जाने का प्रस्ताव अनुमोदित किया गया। बैठक में बताया गया कि आगामी माह में जिला अस्पताल में एंडोस्कोपी मशीन लगाई जाएगी, जिसमें बीपीएल, आयुष्मान कार्ड, वरिष्ठ वर्ग के मरीजों को छोड़कर अन्य मरीजों से एक हजार रुपए शुल्क लिया जाएगा। जिला अस्पताल के सामने स्थित जर्जर जैन धर्मशाला को गिराकर पार्किंग की व्यवस्था बनाई जाएगी। इसके अलावा बेलन वार्ड के पीछे निर्मित भवन में धर्मशाला संचालित की जाएगी, जिसका शुल्क रोगी कल्याण समिति में जमा किया जाएगा। बैठक में विधायक श्री खंडेलवाल ने रोगी कल्याण समिति को चेक के माध्यम से एक लाख रुपए प्रदान किए। इस अवसर पर विधायक हेमंत खंडेलवाल, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ.रविकांत उईके, सिविल सर्जन डॉ.अशोक बारंगा, आरएमओ डॉ.रूपेश पद्माकर महिला व बाल विकास विभाग अधिकारी गौतम अधिकारी, बीएमओ सहित अन्य जनप्रतिनिधि व चिकित्सकीय स्टाफ मौजूद रहे।

हत्या का खुलासा: दो आरोपी गिरफ्तार, एक फरार

पुलिस ने पत्रकारवार्ता में दी जानकारी

बैतूल। पुलिस ने मलियाढाना क्षेत्र में एक अज्ञात व्यक्ति के जले हुए शव की गुत्थी को सुलझा लिया है। इस मामले में पुलिस ने तीन लोगों को आरोपी बनाया है, जिसमें से दो लोगों को गिरफ्तार कर लिया है, वहीं एक फरार आरोपी की तलाश कर रही है। रविवार को पुलिस कंट्रोल रूम में आयोजित पत्रकारवार्ता में पुलिस ने बताया कि 27 अप्रैल को कोतवाली थाना बैतूल को सूचना मिली थी कि मलियाढाना में श्यामा उईके के खेत की बंधिया के नीचे एक अज्ञात व्यक्ति का जला हुआ शव पड़ा है। सूचना मिलते ही पुलिस ने प्रारंभिक जांच शुरू की। कोतवाली पुलिस ने अज्ञात व्यक्तियों के विरुद्ध हत्या और साक्ष्य मिटाने के आरोप में धारा 302 और 201 भादवि के तहत प्रकरण दर्ज कर विस्तृत विवेचना प्रारंभ की। अज्ञात

शव की पहचान के लिए पुलिस ने व्यापक स्तर पर जांच की। आसपास के थाना क्षेत्रों में गुमशुदा व्यक्तियों की जानकारी जुटाई गई और मृतक के हुलिये के आधार पर पहचान के प्रयास किए गए। जांच के दौरान थाना झल्लार क्षेत्र अंतर्गत ग्राम गाडागोहान से 25 अप्रैल को शंकर दाहीकर नामक व्यक्ति के गायब होने की सूचना प्राप्त हुई। उसके परिवार से संपर्क कर शव की तस्वीर दिखाने पर परिवार ने उसकी पहचान से इंकार कर दिया। पुलिस ने जांच को आगे बढ़ाते हुए ऑनलाइन दर्ज गुमशुदगी की तस्वीर का शव से मिलान किया। संदेह के आधार पर मृतक के प्रजर्व किए गए, सैम्पल और शंकर दाहीकर के परिजनों के ब्लड सैम्पल का डीएनए परीक्षण कराया गया, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि मृतक शंकर दाहीकर ही था।

बेल्ट से घोटा गला, पेट्रोल डालकर जलाया- मृतक शंकर दाहीकर का उसकी भाभी मनीता से लगातार विवाद होता था। मनीता ने अपने भाई संदीप दाहीकर को शंकर की हत्या करने के लिए उकसाया। 25 अप्रैल 2024 को संदीप दाहीकर अपने साथी निलेश चौहान के साथ गाडागोहान में एक शादी समारोह में गया था, जहां से उन्होंने शंकर को शराब पीने के बहाने बुलाया। दोनों आरोपियों ने शंकर को साथ ले जाकर उसे अपने बेल्ट से गला घोंटकर मौत के घाट उतार दिया। हत्या के बाद, उन्होंने पेट्रोल खरीदकर शंकर के शव को जलाया और घटना स्थल से फरार हो गए। इस मामले में पुलिस ने आरोपी संदीप दाहीकर और निलेश चौहान दोनों निवासी निवासी बर्रा कास्या थाना झल्लार को महाराष्ट्र से अभिरक्षा में लेकर पूछताछ की, जिसमें उन्होंने अपराध स्वीकार कर लिया। वहीं फरार मनीता पति हीराजी दाहीकर निवासी गाडागोहान थाना झल्लार तलाश कर रही है।

गुत्थी सुलझाने में इनका रहा सराहनीय योगदान- इस अंधी हत्या की गुत्थी सुलझाने में एसडीओपी शालिनी परस्ते के मार्गदर्शन और निरीक्षक देवकरण डेहरिया के नेतृत्व में टीम ने तत्परता से कार्य किया। इस महत्वपूर्ण कार्यवाही में उपनिरीक्षक राकेश सरेयाम, सहायक उपनिरीक्षक प्रवीण पचौरी, सहायक उपनिरीक्षक दिलीप टांडेकर, प्रधान आरक्षक ब्रिजेश रघुवंशी, दीपक कटियार, रोहित नवरेती, ओमकार, सोनी सूर्यवंशी, अभिषेक, मनोज इवने, उज्जवल, दुर्गेश वर्मा, महिला आरक्षक निर्मला, सायबर सेल और एफएसएल टीम का विशेष योगदान रहा। पुलिस अधीक्षक बैतूल निश्चल झारिया ने टीम की इस सराहनीय कार्यवाही की प्रशंसा की है।

रिपोर्ताज

दुर्गेश्वर राय

लेखक शैक्षिक संवाद मंच उप्र के संयोजक हैं।

अब तो मैं भी लिखूंगा

पिछले तीन दिनों से दो कमरों में अलमारी निर्माण का कार्य चल रहा था, जिसके कारण उन दोनों कमरों का भी सामान अन्य कमरों में शिफ्ट किया गया था। मन बेचैन हो उठा कि कैसे इन सारी चीजों को सुव्यस्थित तरीके से रख लूं। सभी वस्तुएं अत्यंत उपयोगी और महत्वपूर्ण थीं, लेकिन उनका इस तरह से बेतरतीब होना सबको निरर्थक होने की संज्ञा प्रदान कर रहा था। इसी उधेड़बुन में था कि बिटिया ने फोन पकड़ाते हुए कहा कि घंटी बज रही है।

'हेलो!'

'नमस्कार! कैसे हैं?'

'जी प्रणाम! ठीक हूं।'

'आज की कार्यशाला के लिए लिंक सभी साथियों को भेज दिया जाये। अन्य साथियों से भी बात कर आवश्यक तैयारी कर ली जाये।' 'जी बिल्कुल, बस चाय पी लूं।'

'दरअसल बात यह है कि शैक्षिक संवाद मंच उत्तर प्रदेश द्वारा शिक्षक साहित्यकार प्रमोद दीक्षित मलय के संपादन में 'मेरी शिक्षकीय यात्रा' नामक आत्मकथा विधा आधारित एक साझा संग्रह शीघ्र प्रकाश्य है। लेखकों को प्रशिक्षित करने के लिए शाम साढ़े चार बजे से एक आनलाइन प्रशिक्षण का आयोजन किया गया था जिसमें डॉ. मुरारी झा (नई दिल्ली) द्वारा 'लेखन की बुनियाद: देखना, समझना और व्यक्त करना' विषय पर शताधिक शिक्षकों से संवाद होना था।

शिक्षक पढ़ाएं या लिखें, शिक्षक क्यों लिखें, शिक्षक क्या लिखें, शिक्षक कैसे लिखें, शिक्षकों के लेख किसको पढ़ना चाहिए, क्या शिक्षकों के लेखों का संज्ञान लिया जाना चाहिए, इन सवालों के तह तक जाना शिक्षा, शैक्षिक व्यवस्था, बच्चे और समाज सबके लिए बहुत आवश्यक है। प्रशिक्षक डॉ. मुरारी झा ने बड़ी शालीनता और सहजता के साथ संवाद का सिलसिला शुरू किया, 'जिस देश में 28 करोड़ से अधिक बच्चे पढ़ रहे हों, एक करोड़ से अधिक शिक्षक पढ़ा रहे हों वहां शिक्षा और शिक्षकों के बारे में शिक्षकों द्वारा लिखी किताबें गिनने पर हाथों की अंगुलियां भी पूरी नहीं होती है। यह शिक्षा व्यस्था का दुर्भाग्य है कि शिक्षा के बारे में ऐसे व्यक्ति लिख रहे हैं जिनका शिक्षा से सीधा सम्बंध नहीं है। और इससे भी अधिक दुर्भाग्य यह है कि इन्हीं पुस्तकों को आधार बनाकर नई नीतियों का निर्धारण किया जा रहा है।'

अरे! शिक्षकों का लेखन इस स्तर तक शिक्षा व्यवस्था को प्रभावित कर सकता है क्या? ऐसा कभी सोचा भी न था। तभी मन ने कहा, 'चलिए, यह बात तो समझ में आई कि शिक्षकों का लिखना जरूरी है। मगर शिक्षक लिखें तो क्या लिखें?' 'सीखना और सिखाना दोनों ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया है। जो व्यक्ति निर्माण की प्रक्रिया से गुजरता है वह निर्माण के पश्चात खुद को सशक्त महसूस करता है। शिक्षक बच्चों की आवाज को सबसे नजदीक से सुनता है। यदि शिक्षक बच्चों की आवाज लिखेगा तो वह सर्वश्रेष्ठ लिखेगा। शिक्षक को अपने अनुभवों को दर्ज करना है क्योंकि उसके अनुभव सबसे शानदार, प्रामाणिक और उपयोगी हैं। यह रिफ्लेक्टिव नोट आगे चलकर बहुत उपयोगी होने वाला है।' 'ये अनुभव तो तमाम अलग-अलग आयामों में होते हैं। दिन भर छोड़िए, एक ही कक्षा में शिक्षक कई सारे अनुभवों से गुजरता है। तो इन अनुभवों के मध्य सामंजस्य कैसे स्थापित करें?'

'लिखते समय शिक्षक को यह विचार दिमाग से निकाल देना चाहिए कि वह जो लिख रहा है बहुत साधारण है। जो चीज आप लिखते हैं वह आपके लिए साधारण हो सकती है लेकिन पढ़ने वाले के लिए वह प्रेरक और उपयोगी हो जाती है। शिक्षक को अपने अनुभवों को नियमित रूप से दर्ज करते रहना चाहिए। कुछ समय पश्चात जब आप उसे पढ़ेंगे तो उसके मध्य स्वयं ही पैटर्न बनते दिखाई देंगे और तब आप उसको एक महत्वपूर्ण पुस्तक के रूप में रि-प्रोड्यूस कर पाएंगे। यदि इन बातों को तारीख के साथ दर्ज करें तो आपके पुस्तक की ऑथेंटिसिटी और अधिक बढ़ जाएगी। लिखने के लिए महत्वपूर्ण चरण हैं-पढ़ना, अवलोकन, समझना, चिंतन और फिर व्यक्त करना।' कमरे में धीरे-धीरे अलमारी के हिस्से तैयार हो रहे थे। कमरा व्यवस्थित होने की राह पर चल पड़ा था। इधर संवाद जारी था। 'शिक्षक तो पढ़ाने के लिए प्राय: पढ़ते ही रहते हैं। फिर लिखने के लिए हमें क्या पढ़ना चाहिए?'

'सर्वप्रथम ऐसी पुस्तकों का चयन करना चाहिए जो शिक्षकों द्वारा लिखी गई हैं। इसमें गिजुभाई बधेका की पुस्तक 'दिवास्वप्न' अत्यधिक महत्वपूर्ण है। तोत्तोचान, बच्चे की भाषा और अध्यापक, टीचर आदि महत्वपूर्ण हैं जिन्हें लेखन शुरू करने से पूर्व अवश्य पढ़ना चाहिए। इसके बाद दूसरा काम है अवलोकन। शिक्षक का सामान्य अवलोकन पढ़ने वाले के लिए बहुत खास होने वाला है। शिक्षक अपने दैनिक जीवन में किए गए अवलोकन के प्रति चिंतन करता ही है। बस जरूरत है इन चीजों को नोट करने की। नोट करने के प्रति शिक्षकों में एक रिजेक्शन सा रहता है। आप नहीं लिखेंगे तो आपके बारे में कोई और लिखेगा और फिर वही नरेटिव समाज में जाएगा जो वास्तविकता से बिल्कुल परे होगा।' पल भर के लिए मन ने कमरे की सैर कर ली और संवाद से पुन: जुड़ गया। 'यदि शिक्षक लिखने लगें तो उनके लिए क्या संभावनाएं हैं और वह शेष समाज को कैसे प्रभावित कर सकता है?'

'एक शिक्षक से पूछें कि वह क्यों लिखता है तो उसका प्राय: यही जवाब होता है कि वह अपने लिए लिख रहा है। यह उचित भी है। पहले स्वयं के लिए लिखिए और धीरे-धीरे आपका लेखन प्रभावी और धारदार होता चला जाएगा। आपका लेखन पाठ्यक्रम डेवलपमेंट के लिए, व्यवस्था निर्माण के लिए, असेसमेंट के तरीकों को डेवलप करने के साथ ही नीति निर्धारण में भी उपयोगी हो सकता है।'

सत्र समाप्ति की ओर था। मैं कमरे के एक कोने में बैठे-बैठे अपने घर को व्यवस्थित होने की खुशी महसूस कर पा रहा था। तभी पड़ोस के मंदिर की सायंकालीन आठ बजे की आरती के मंगल स्वर कानों में घुलने लगे थे।

इन्टर स्कूल बैण्ड प्रतियोगिता का आयोजन

विदिशा (निप्र)। शासकीय एमएलबी विद्यालय में आज जिला स्तरीय इन्टर स्कूल बैण्ड प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था जिसमें पाइप बैंड कैटेगरी में ओलम्पस हाई स्कूल एवं ब्रास बैंड कैटेगरी में वात्सल्य सीनियर सेकेण्डरी स्कूल के बैंड का चयन संभाग स्तरीय प्रतियोगिता के लिए किया गया है। उक्त दोनो बैंड भोपाल में 28 अक्टूबर को आयोजित संभाग स्तरीय प्रतियोगिता में अपने हुनर दिखाएंगे। संस्था की प्राचार्यो दीप्ति शुक्ला ने बताया कि शाला परिसर में आज निर्विघ्न रूप से सम्पन्न हुई प्रतियोगिता में वाद्य यंत्रो से की गई प्रस्तुतियों को विद्यालयीन छात्राओं सहित अन्य के द्वारा एकटक नजर से देखा गया है।

जिला जल उपयोगिता समिति की बैठक 21 अक्टूबर को

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री रौशन कुमार सिंह की अध्यक्षता में जिला स्तरीय जल उपयोगिता समिति की बैठक 21 अक्टूबर को टीएल बैठक के उपरांत दोपहर तीन बजे से कलेक्ट्रेट के बेतवा सभा कक्ष में आयोजित की गई है। बैठक में जिन एजेंडा बिंदुओं पर चर्चा की जाएगी उनमें सिंचाई जलाशयों में उपलब्ध जल की मात्रा के अनुसार रबी सिंचाई हेतु जल उपयोग का निर्धारण। रबी सिंचाई कार्यक्रम वर्ष 2024-25 का निर्धारण। पेयजल एवं औद्यौगिक उपयोग हेतु जल आरक्षण का निर्धारण। पेयजल एवं औद्यौगिक उपयोग में लिये गये जलकर का भुगतान संबंधी चर्चा। कृषि विभाग द्वारा फसलों का चुनाव किया जाना। विद्युत विभाग द्वारा जल संसाधन विभाग की अनुमति के बिना नहर एवं बाँध पर विद्युत कनेक्शन ना देने हेतु चर्चा। लोक निर्माण विभाग अंतर्गत नहरों पर निर्मित सड़कों के संबंध में चर्चा शामिल है।

खाद्य पदार्थों के सैम्पल लिये गये

हरदा (निप्र)। कलेक्टर श्री आदित्य सिंह के निर्देश पर खाद्य सुरक्षा विभाग द्वारा जिले में खाद्य पदार्थों का विक्रय करने वाले प्रतिष्ठानों से सैम्पल लिये जा रहे है। शुक्रवार को खाद्य सुरक्षा अधिकारी सुश्री ज्योति बंसल और श्री आर. के. कांबले की टीम ने हरदा में जलाराम ऑयल पैकिंग से सोया ऑयल के 2 सैंपल लिए और अग्रवाल मिठास से केसर कतली, मलाई बर्फी, गुपचुप मिठाई, खोबरा पाक के सैंपल लिए। श्री कांबले ने बताया कि ये सैंपल खाद्य परीक्षण प्रयोगशाला भोपाल भेजे जायेंगे तथा जांच रिर्पोट के आधार पर कार्यवाही की जायेगी।

बुधनी उप निर्वाचन के लिए मतदान दलों का प्रथम प्रशिक्षण 23 एवं 24 अक्टूबर को

सीहोर (निप्र)। आगामी बुधनी विधानसभा उप निर्वाचन 2024 के लिए मतदान दलों का प्रशिक्षण सीहोर के शासकीय कन्या महाविद्यालय में 23 एवं 24 अक्टूबर को प्रथम बेच प्रातः 10.00 से 1.00 बजे तक तथा द्वितीय बेच दोपहर 2.00 बजे से शाम 5.00 बजे तक आयोजित किया गया है। प्रथम प्रशिक्षण में पीठासीन अधिकारियों एवं मतदान अधिकारी- 01 को प्रशिक्षण के लिए निर्धारित समय पर उपस्थित होने के निर्देश दिए गए हैं।

भगवान हमारे हृदय में है वे हमारी भावनाओं को पहचानते हैं

नर्मदापुरम। कार्तिक मास याने दामोदर मास सभी मासो में दामोदर मास भगवान कृष्ण को सबसे अधिक प्रिय है, पुराणों में वर्णित है कि इस मास में भगवान कृष्ण ने भक्तों के आनंद के लिए उनके साथ सबसे ज्यादा लीलाएं की है। इतना ही नहीं असीमित विराट और किसी की पकड़ में नहीं आने वाले भक्तवत्सल भगवान माता यशोदा के हाथों पकड़ा कर रस्सी से बंधा गये... भगवान हमारे हृदय में है और हमारी भावनाओं को पहचानते हैं यह बात प्रणव दास प्रभु ने आज मंदिर में दामोदर मास के माहत्म्य और भगवान कृष्ण की लीला का की व्याख्या करते हुए कही, प्रभु जी ने बताया कि भगवान को पकड़ पाना वश की बात नहीं, लेकिन निष्ठा भाव से उन्हें पाने का प्रयास करने वाले के लिए कठिन भी नहीं, फिर इसमें भगवान की कृपा भी होनी चाहिए, भगवान को पकड़ पाना आसान नहीं, भगवान षठ ऐश्वर्य पूर्ण हैं उन्हें वश में करने, पकड़ने के पहले बहुत सी देवियां आ जाती, प्रभु जी ने बताया कि ब्रज की बात निराली है ब्रजवासी कृष्ण को भगवान नहीं समझते बल्कि वे कृष्ण को अपना पुत्र, दोस्त, प्रेमी मानते हैं। यही कारण है यशोदा मैया के पूर्ण नियंत्रण में कृष्ण है क्योंकि माता के हृदय में प्रेम है। प्रभु जी ने बताया वे भगवान काल के वश में नहीं है, उन्हें वश में करने के लिए माता हाथों में छड़ी लेकर दौड़ी माता के

हाथ नहीं आते कृष्ण को पकड़ने के लिए परेशान और वे पसीना पसीना होती, भगवान को बांधने के प्रयास में दो अंगुली रस्सी हमेशा कम पड़ जाती, माता की सखियां यह देखकर आश्चर्यचकित हो रही और माता रस्सियों को जोड़ जोड़ कर अस्त-व्यस्त हो गई माता को दशा देख भगवान जो असीमित है उन्हेंने यहां बांधना स्वयं बंधना स्वीकार किया, रस्सियां जोड़कर भगवान को उखल से बांधने के प्रयास में माता यशोदा परेशान और पसीने-पसीने हो गई सब आश्चर्य कर रहे कृष्ण बंध नहीं रहे, माता थककर चूर हो गई तब कृष्ण को माता पर दया आई क्योंकि भगवान भक्त के वश में है। भगवान जो अप्राप्य है ऐसे भगवान को माता ने उखल में रस्सी से बांध दिया प्रभु जी बताते है कि इस लीला से माता ने भगवान श्रीकृष्ण का यश बढ़ा दिया है इसलिए माता का नाम यशोदा है। जिन्होंने भगवान को रस्सी से बांध दिया यह सौभाग्य प्राप्त किया जो किसी दूसरे किसी देवी देवता को प्राप्त नहीं। आख्यान के पश्चात आज दोपहर को मंदिर में दीप-दान किया गया जिसमें बड़ी संख्या में भक्त उपस्थित हुए दामोदर मास में दीप-दान और तुलसी आराधना का विशेष महत्व बताया। जिसका लाभ भक्तों ने सुबह पांच बजे मंगल आरती में शामिल हो कृष्ण आराधना के साथ ही भगवान नरसिंह देव और तुलसी आराधना कर सामूहिक महामंत्र जाप से उठाया। सुबह दर्शन आरती और गुरु पूजा के बाद भक्तों ने प्रसादम ग्रहण कर निकट ग्राम कुलामड़ी पहुंचकर हरिनाम संकीर्तन महायज्ञ करते हुए लोगों को कृष्णभावनाभावित प्रचार प्रसार से जुड़ने को प्रेरित किया।

निर्वाचन व्यय इंफोर्समेंट एजेंसियों की बैठक आयोजित

सीहोर (निप्र)। बुधनी विधानसभा उप निर्वाचन 2024 के तहत निर्वाचन व्यय से संबंधित इंफोर्समेंट एजेंसियों की बैठक कलेक्टर कार्यालय के सभाकक्ष में आयोजित की गई। बैठक में निर्वाचन व्यय की निगरानी करने वाली सभी एजेंसियों को कार्यवाही के

दौरान भारत निर्वाचन आयोग के दिशा निर्देशों का पालन करने निर्देश दिए गए। बैठक में एएसपी श्री गीतेश गर्ग एवं संयुक्त कलेक्टर श्री आनंद सिंह राजावत ने संबंधित एजेंसियों के नोडल अधिकारियों को नगद राशि सहित विभिन्न सामग्रियों की जप्ती की सम्पूर्ण कार्यवाही अत्यंत सावधानी पूर्वक एवं नियमानुसार करने के निर्देश दिए।

बैठक के दौरान बताया गया कि निर्वाचन व्यय निगरानी के अंतर्गत की जाने वाली जप्ती के संबंधी कार्यवाही की जानकारी आयोग द्वारा निर्धारित Anner&ure B| में प्रतिदिन आयोग को प्रेषित करने एवं ESMS Portal पर उस जानकारी को ऑनलाइन अपलोड करने के निर्देश दिए गए हैं। साथ ही प्रतिदिन प्रेषित की जाने वाली सम्पूर्ण जिले की लॉ एण्ड ऑर्डर कि रिपोर्ट नोडल अधिकारी को प्रेषित करने के निर्देश दिए गए हैं। जिला लीड बैंक मेनेजर को निर्देश दिए गए हैं कि वे निर्वाचन प्रकिया के दौरान किसी भी व्यक्ति के बैंक खाते से नकद की प्रतिदिन संदेहास्पद निकासी एवं जमा की जानकारी जिले के लीड बैंक मैनेजर निर्धारित प्रपत्र में सभी बैंकों से प्राप्त एक रिपोर्ट के अनुसार जिला निर्वाचन अधिकारी को प्रेषित करें। जिला आबकारी अधिकारी को विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र में एक दल गठित कर प्रतिदिन अवैध शराब परिवहन, बिक्री पर नियंत्रण रखने के लिए कार्यवाही करने के निर्देश दिए गए हैं।

आयकर विभाग के अधिकारियों को हवाई अड्डों, रेलवे स्टेशन, होटल, फार्म हाऊसो, हवाला एजेंटों, वित्तीय दलालों, कैश कूरियरो आधि-व्यवसायियों और अन्य संदिग्ध एजेंसियों एवं व्यक्तियों पर जो निर्वाचन प्रक्रिया के दौरान अघोषित राशि के संचालन के लिए प्रयोग में लाए जाते है. इन पर कड़ी

एसबीआई ने पेंशनर्स का सम्मान कर दी बैंकिंग सेवाओं की जानकारी

वरिष्ठ पेंशनर्स का शाल-श्रीफल से किया अभिनंदन

बैतूल। सिविल लाइन स्थित भारतीय स्टेट बैंक मुख्य शाखा में पेंशनर्स मिलन एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम श्रीमती श्रेष्ठा मिश्रा, क्षेत्रीय प्रबंधक की अध्यक्षता में और पेंशनर्स एसोसिएशन बैतूल के सम्भागीय अध्यक्ष रामचरण साहू के मुख्य आतिथ्य में आयोजित किया गया। बैंक के मुख्य शाखा प्रबंधक पंकज बर्वे ने इस आयोजन की रूपरेखा तैयार की। समारोह के शुभारंभ में क्षेत्रीय प्रबंधक श्रेष्ठा मिश्रा और सम्भागीय अध्यक्ष रामचरण साहू का शाखा प्रबंधक पंकज बर्वे द्वारा शाल और श्रीफल से स्वागत किया गया। इसके पश्चात, बैंक प्रबंधक और स्टाफ ने वरिष्ठ पेंशनर्स का भी शाल-श्रीफल से भव्य अभिनंदन किया। श्रेष्ठा मिश्रा ने बैंकिंग सेवाओं की विस्तार से जानकारी दी, जबकि रामचरण साहू ने क्षेत्रीय प्रबंधक और शाखा प्रबंधक का आभार व्यक्त किया। पंकज बर्वे ने बताया कि नवम्बर की पहली तारीख से जीवित प्रमाण पत्र जमा करने के लिए सरिता पाटिल द्वारा विशेष काउंटर की व्यवस्था की जाएगी। इसके साथ ही, साइबर क्राइम से सुरक्षा के उपायों पर श्री अरविन्द सिंह ने महत्वपूर्ण जानकारी दी। ऋण वितरण फील्ड ऑफिसर प्रवीण कुमार ने पेंशनर्स को नई जानकारियों से अवगत कराया। इस मौके पर सेवा निवृत्त प्रोफेसर महेश मेहता ने भारतीय स्टेट बैंक का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह बैंक सदैव हमारे सुख-दुःख में साथ खड़ा रहता है। शिवचरण हजारे और गणेशराव महस्की ने भी अपने विचार साझा किए। कार्यक्रम का संचालन राजेन्द्र व्यास ने किया और अंत में प्रबंधक पंकज बर्वे एवं बैंक अधिकारी अलकेश झपाटे ने आभार व्यक्त किया।

सरोकार

डॉ. चन्दर सोनाने

लेखक मप्र जनसंपर्क विभाग के सेवानिवृत्त अधिकारी हैं।

दुष्कर्मियों को कानून का डर है ही नहीं

पहले कानून के डर के कारण अपराध कम होते थे। विशेषकर दुष्कर्मियों की संख्या कम ही होती थी। किन्तु अब ऐसा लगता है कि उन्हें कानून का डर है ही नहीं ! यही नहीं, वे दुष्कर्म करने के बाद पीड़िता पर मामला वापस लेने का इतना दबाव डालते है कि नहीं मानने पर पीड़िता को जिंदा जलाने से भी बाज नहीं आते। पिछले दो सप्ताह के ही वाकिये देखे तो पीड़िता पर दुष्कर्मी द्वारा हमला करने के तीन प्रकरण हो चुके हैं। इन प्रकरणों में दो की तो जान ही चली गई और कुछ गंभीर रूप से घायल हो गए हैं, जो जिंदगी और मौत से जूझ रहे हैं। देशभर में यही हाल है। हम उदाहरण के लिए मध्यप्रदेश के हाल ही के दो सप्ताह के तीन प्रकरण लेते हैं। जबलपुर जिले में दुष्कर्म के प्रकरण में आरोपी ने 17 अक्टूबर की शाम ही एक युवती और उसकी माँ पर चाकू से हमला कर गंभीर रूप से घायल कर दिया। उसके बाद उसने खुद को चाकू मारकर आत्महत्या कर ली। यह घटना जबलपुर जिले के रांझी क्षेत्र की है।

घटना के अनुसार शाम को आरोपी लोकेश राजपूत पीड़िता के घर पहुँचा और प्रकरण वापस लेने के लिए विवाद करने लगा। मना करने पर आरोपी ने युवती और उसकी माँ के पेट और कमर पर चाकू से गंभीर रूप से हमला कर दिया। आरोपी ने खुद को बाथरूम में बंद कर लिया और अपने आप को चाकू मार लिया। युवती की छोटी बहन घर आई तो उसने पिता को सूचना दी। पिता ने पुलिस को बुलाया। आरोपी को बाथरूम का दरवाजा तोड़कर निकाला गया। देर रात आरोपी की इलाज के दौरान मौत हो गई। घायल माँ-बेटी की हालत गंभीर बनी हुई है। आरोपी दूसरी बार जेल से छूटा था। उस पर पीड़िता को धमकाने और दुराचार के तीन प्रकरण दर्ज है।

दूसरा प्रकरण खंडवा जिले का है। दशहरे के दिन यौन शोषण की शिकार युवती पर आरोपी मांगीलाल के बेटे अर्जुन ने घर के बाहर ही पीड़िता पर पेट्रोल डालकर आग लगा दी थी। 6 दिन तक जिंदगी और मौत से लड़ते हुए आखिरकार इन्दौर के एमवाय अस्पताल में उसने दम तोड़ दिया। इस प्रकरण में भी आरोपी युवती और उसके परिजन पर प्रकरण वापस लेने का दबाव डाल रहे थे। कितनी दुखद और आश्चर्यजनक यह घटना है कि दशहरे के दिन बुराईयों के प्रतीक रावण को जलाया जाता है, किन्तु दशहरे को ही आरोपी रावण ने ही पीड़िता को जिंदा जला दिया, जिसकी बाद में मौत हो गई।

तीसरा प्रकरण भी मध्यप्रदेश के छतरपुर का ही है। 7 अक्टूबर को छतरपुर में दुष्कर्म के आरोपी भोला अहिरवार ने नाबालिग पीड़िता के घर में घुसकर फायरिंग कर दी थी। गोली लगने से पीड़िता के दादा की मौके पर ही मौत हो गई थी। पीड़िता और उसके चाचा फायरिंग में गंभीर रूप से घायल हो गए। इस प्रकरण में भी आरोपी पीड़िता पर प्रकरण वापस लेने का दबाव डाल रहा था।

यह अत्यन्त दुखद है कि पिछले दो सप्ताह में ही मध्यप्रदेश के तीन जिलों में कई दुष्कर्म की वारदातों और आरोपियों और उसके परिजनों द्वारा पीड़िता पर प्रकरण वापस लेने का दवाब डाला जा रहा था। पीड़िताओं और उनके परिजनों द्वारा प्रकरण वापस नहीं लेने पर आरोपियों द्वारा जघन्य अपराध कर दिए गए। उक्त तीन उदाहरण हमें यह बता रहे हैं कि अपराधियों और दुष्कर्मियों पर कानून को कोई डर नहीं बचा है। आरोपी द्वारा खुलेआम दुष्कर्म करने के बाद जब पीड़िता पुलिस में प्रकरण दर्ज कर देती है तो आरोपी पीड़िताओं से प्रकरण वापस लेने के लिए हत्या तक कर देने का दुसाहस कर रहे हैं। ये सामान्य प्रकरण नहीं है। सभी प्रकरणों में अपराधियों को सख्त सजा दिए जाने की जरूरत है। और ये सजा फाँसी से कम नहीं हो सकती। जब तक दुष्कर्मियों को फाँसी पर लटकाया नहीं जायेगा, तब तक उनका दुसाहस बढ़ता जायेगा।

वर्तमान में कानून में अनेक खामियाँ हैं। असंख्य गलियाँ हैं। इसका फायदा उठाकर आरोपी को उसके वकील बचा ले जाते हैं या प्रकरणों को वर्षों लंबा खींच देते है। प्रकरण लंबा खींचने पर पीड़िता और उसके परिजनों पर रोज जो मानसिक आघात लगता है, उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती ! दुष्कर्मियों के लिए बने कानून को और सख्त करने की आवश्यकता है। केन्द्र सरकार और राज्य सरकारों को मिलकर कानून में जरूरी परिवर्तन करना समय की माँग है। अन्यथा जो चल रहा है, वह ऐसे ही चलता रहेगा।

वैसे आगाज से... ऐसे अंजाम तक !

प्रकाश पुरोहित

गुलजार के सहायक रहे मेराज ने 'पलकों की छांव में' और 'सितारा' जैसी फिल्में डायरेक्ट की थीं ! 'सितारा' में मिथुन चक्रवर्ती और जरीना वहाब थे ! जब मिथुन को कहीं काम नहीं मिल रहा था, तब बंबई के बांद्रा में पान वाले के यहां मेराज से उनकी मुलाकात होती थी। मेराज भी सहायक थे और मिथुन बेरोजगार ! दोनों यहां आमतौर पर इसलिए मिल लिया करते थे... कि उनकी जेब में सिगरेट फूंकने के पैसे नहीं होते थे और पानवाला इन्हें उधार देने में आनाकानी नहीं करता था। उसकी पारखी आंखों ने यह पहचान लिया था कि ये दोनों आज भले ही खाली जेब हैं, कल तो इनका है।

जब मेराज ने 'सितारा' शुरू की तो मिथुन चक्रवर्ती से किया वादा निभाया और उन्हें साइन किया। 'सितारा' में मिथुन को गांव के युवक की भूमिका मिली थी। कह सकते हैं 'मृगया' के आदिवासी लड़के से थोड़ी आगे की ! 'सितारा' अच्छी बनी थी, गाने भी चले थे, मगर फिल्म नहीं चल सकी ! मेराज ने इस नाकामी को दिल से लगा लिया। काम तो करते रहे, लेकिन बीमार रहने लगे। इलाहाबाद लौट गए और वहीं उनकी खामोश मौत भी हो गई !

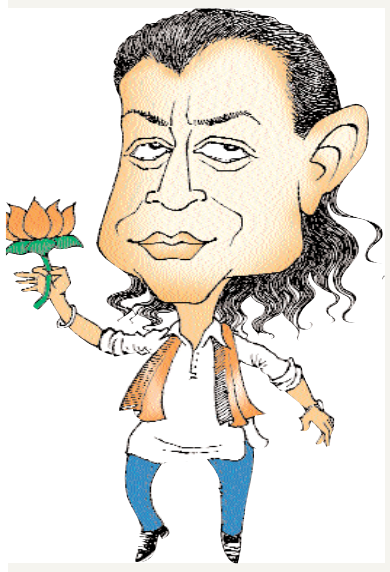

यहां बताना जरूरी है कि मेराज जब तक सहायक रहे, गुलजार की फिल्में अच्छी बनती रहीं, 'मेरे अपने', 'परिचय', 'आंधी', 'मौसम', 'अचानक' जैसी फिल्मों में मेराज न सिर्फ सहायक निर्देशक रहे, लेखन भी किया ! यहां तक कि सीरियल 'गालिब' में भी मेराज को ही श्रेय दिया जाता था कि उन्हें क्राफ्ट की गहरी समझ थी ! मेराज ने अपनी फिल्म शुरू की और गुलजार का साथ और हाथ छूट गया।

ऐसे ही दौर में (यानी 1982) दोस्त के जरिए मेराज से मेरा मिलना मुंबई की एक रात को हुआ। उस दौरान और बातें तो अथाह हुईं, लेकिन सबसे ज्यादा किस्से मिथुन के थे। तभी हम पैदल चलते बांद्रा की सड़क से गुजर रहे थे तो मेराज ने कहा... 'आओ, उस पानवाले से मिलवाता हूं, जिसने हमें बगैर गारंटी खूब उधार दिया है। पान वाले ने मेराज को फौरन पहचान लिया और हालचाल पूछाताछी होने लगी। तभी मेराज ने पूछा- 'मिथुन अब आते हैं या नहीं...? अब तो स्टार हो गए हैं।' पानवाले के चेहरे पर चमक आ गई और बोला- 'नहीं सा'ब... जब भी इधर से गुजरते हैं देर रात को, जरूर रुकते हैं। सिगरेट खरीदते हैं, पुराना पैसा चुकाते हैं और नया लिखवा देते हैं।'

अभी यह बात चल ही रही थी... कि तभी बड़ी-सी मोटरकार रुकी। देखते क्या हैं कि कार में मिथुन हैं। मेराज को देखकर मिथुन झटके से कार के बाहर निकले और गले लग गए। फिर तो बस बातें ही बातें। रात बारह-एक बजे का समय होगा। दिनभर शूटिंग कर लौट रहे थे मिथुन... लेकिन लग ही नहीं रहा था कि थकान का कहीं नाम-ओ-निशान भी है। उनकी बोली और हाव-भाव से कहीं नहीं लग रहा था कि अब 'स्टार' हो गए हैं। आम युवा की तरह ही मिल रहे थे। सिगरेट का पैकेट खरीदा और मिथुन विदा ले रवाना हो गए। थोड़ी देर तो यकीन ही नहीं हुआ कि जो हुआ है, हमारी आंखों के सामने हुआ है। मेराज ने तब कहा था ''यदि इसे स्क्रिप्ट की समझ होती तो यह लड़का कमाल कर सकता था ! सितारा हो गया, एक्टर नहीं ! इसकी सहजता ही इसकी खासियत है और कमजोरी भी।''

आज ये चालीस पुराना किस्सा इसलिए याद आ रहा है कि मिथुन दादा को दादा साहब फाल्के अवॉर्ड मिल रहा है। ऐसा भी वक्त था, जब मिथुन चक्रवर्ती को गरीबों का अमिताभ बच्चन कहा जाता था। रूस में राज कपूर के बाद अगर किसी की दीवानगी आज भी, जी हां, आज भी, है तो मिथुन की ! नई पीढ़ी तो उसे देखने को तरसती है वहां और उनके गाने, गाए-बजाए जाते हैं। जब राजीव गांधी ने रूस के राष्ट्रपति मिखाइल गोर्बाचौफ से अमिताभ बच्चन को मिलवाया था 'ये हैं हमारे सुपर-स्टार।' तब गोर्बाचौफ ने चौंकते हुए कहा था- 'लेकिन मेरी बेटी तो मिथुन चक्रवर्ती का नाम लेती है !' यह भी कमाल ही रहा कि 'मृगया' जैसी समांतर फिल्म से शुरुआत करने के बावजूद मिथुन के नाम पर ढंग की आधा दर्जन फिल्में भी नहीं हैं, जबकि साढ़े तीन सौ से ज्यादा फिल्मों में काम किया है। मिथुन ने आम युवा में यह भरोसा पैदा किया कि हीरो का चाकलेटी चेहरा कतई जरूरी नहीं है।

पहली फिल्म 'मृगया' मिली ही इसलिए थी कि मिथुन बगैर मेकअप के ठेठ आदिवासी लगते थे। 'मृगया' में नाम तो मिला, लेकिन निर्देशक मृणाल सेन इतना बड़ा वट-वृक्ष थे कि ये मिथुन नाम का पौधा न जाने कहां बिला गया। उनकी सहयोगी कलाकार ममता शंकर का तो फिर नाम ही सुनने में नहीं आया। फिर ऐसा वक्त भी आया कि मुंबई में कहा जाने लगा 'यदि बड़ा-सा पत्थर नजर आए... और उसे हटा कर देखें तो मिथुन की ही फिल्म की शूटिंग चल रही होगी।' इसका मतलब यह भी था कि मिथुन ने दोनों हाथ से फिल्में बटोर लीं। फिर यह भी नहीं देखा कि कहानी में दम है या नहीं... या निर्देशक को विषय की समझ भी है। इस नजरिए से देखें तो मिथुन के खाते में सलीके की फिल्म कम ही निकलेंगी।

मुंबई में मिथुन ने काम तो दिन-रात किया, लेकिन कभी भी इसे 'घर' की तरह नहीं ले पाए और बंगाल उन्हें खींचता रहा। समझ की कमी फिल्मों में भी रही और उनकी प्रतिभा का ढंग से दोहन नहीं हो पाया... और अभी ऐसा ही अधकचरापन राजनीति में भी नजर आ रहा है कि जहां मौका मिल रहा है, चले जा रहे हैं, जबकि बंगाल के लोगों के बारे में तो यह कहा जाता है कि राजनीतिक विचार से लबरेज रहते हैं !

और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखक साहित्यकार हैं।

बौद्ध गया : एक आध्यात्मिक यात्रा के अनुभव

बचपन से कोर्स की किताबों में बुद्ध की कथायें पढ़ी, सुनी हैं। जब भी गुस्सा आता तो स्कूल की किताब में तस्वीर देख बात करती अच्छा लगता था। (तब इतनी बुद्ध की मूर्तियां नहीं मिलती थी)। बाद में धीरे-धीरे परिपक्वता के साथ, मेरे हमसफ़र ने मुझे बहुत बताया, पढ़वाया। बच्चे भी शौक से जहां बुद्ध के इतिहास से जुड़ी बातें होती हैं, पढ़ते हैं। हम हर साल बनारस से सारनाथ जाते हैं। फिर जब वियतनामी लेखक 'तिक न्यात हन्ह की पुस्तक 'जहँ-जहँ पैर पड़े गौतम के' (व्हाइट क्लाउड) पढ़ी तब इतने सवाल हल हो गए और जानने की उत्सुकता बढ़ी पर आस्था का तर्क से संबंध नहीं होता। मेरे हृदय में बुद्ध और उनके सिद्धांत से संबंधित बातें थी जो हृदय को छूती थी। मुझे उनके अनुयायियों से धर्म परिवर्तन से कुछ लेना देना नहीं था, ना ही उनकी मूर्तियों से। मुझे ध्यान से लगाव था और जहाँ-जहाँ उनके पैर पड़े, ऐतिहासिक सबूतों को देखना था। इसी सिलसिले में आख़िर मैंने इस धरती पर कदम रखा जिसे बिहार राज्य का दर्जा दिया गया है जो मगध साम्राज्य कहलाता था उस समय का स्वर्ण काल था। उसी स्वर्ण काल के गुप्त साम्राज्य की कल्पना करके वहां पहुंची।

हम लोग बौद्ध गया में ही ठहरे थे, हालांकि निर्वाण प्राप्ति के बाद का पहला संबोधन सारनाथ में हुआ था। वहां हम दो बार पहले ही जा चुके हैं। गया में लोगों की भीड़, संकरी व गंदी गलियां और फल्गु नदी (जो बुद्ध काल में नैरंजना नदी कहलाती थी)। हमने एक गाइड सुधीर, टैक्सी ड्राइवर लालू यादव को साथ लिया। सीधे सरल स्वभाव के दोनों व्यक्तियों ने हमारा खूब साथ दिया। हमने सुविधा के हिसाब से स्थान चुने

1 महाबोधि मंदिर
2 बौधि वृक्ष
3 महान बुद्ध प्रतिमा
4 थाई मठ
5 इंडोसनजापानी मठ
6 सुजाता गढ़
7 वज्रासन
8 मुचलिंडा सरोवर
9 बराबर पहाड़ी गुफायें
10 रॉयल भूटान मठ
11 तिब्बत मठ
12 ढुंगेश्वरी गुफा

सबसे पहले हम बौद्धगया गए जहां बुद्ध का आगमन हुआ था। वो गुफायें जहाँ बुद्ध ने पहाड़ पर 6 साल कठिन तप किया था। चावल का एक दाना खाते थे। 'ढुंगेश्वरी गुफा' जाने के लिये जिस रास्ते से हम बढ़े थोड़ा जी धक्क रह गया। जिस बौद्धगया को विदेशियों की वजह से टूरिज़्म मिला हुआ है उस गांव की दुर्दशा देख सिहर गई। मैंने सारनाथ की तरह चौड़ी सड़कें, पार्क, शांतिपूर्ण शुद्ध साफ सुथरा वातावरण सोचा था। वैसा नहीं था। गंदे पानी के, नाले, सड़क पर खेलते स्कूल ना जाने वाले बच्चे, कच्चे मकान, जिन्होंने बुद्ध के तपोवन पर कब्जा किया हुआ था। हालांकि तराई के पास पहुंचकर दिल को राहत मिली। घना जंगल, खुली हवा, बहुत ऊंची पहाड़ी पर गुफा थी। डोली से जाने का प्रावधान भी था। गुफा में जो बुद्ध की प्रतिमा सुनहरे रंग की लगाई गई थी उसमें उनके कृशकाय होने के चिन्ह बने थे। बगल में ही एक

जैन, एक हिंदू भगवान के प्रतिमा भी लगी थी। वहीं कुछ तिब्बती अपनी भाषा में पाठ कर रहे थे। जगह-जगह उवदा घूमते मिल जाते थे।

हम नीचे उतरे, वहाँ ईंटों का बना स्तूप देखा जिसे सुजाता का घर बताया गया। हमारी जानकारी के अनुसार सुजाता जमींदार की बेटी थी जो भोजन लेकर पेड़ों गायों को देने आ रही थी। तभी उसे भूखे प्यासे मृतप्राय अवस्था में बुद्ध के दर्शन हुए। उसने आग्रह करके उन्हें खीर खिलाई तब उनके शरीर में जान आई। (हालांकि उस समय के अनुयायी उनसे बहुत क्रोधित हुये कि उन्होंने व्रत तोड़ा पर बुद्ध को समझ आ गया था कि भूखे प्यासे रह कर ज्ञान नहीं प्राप्त होता शरीर में प्राण होने चाहिये)। बुद्ध धीरे-धीरे नीचे उतरे। पहाड़ियों से नीचे एक बड़ा सा वृक्ष मिला जिसे आज बोधि वृक्ष कहा जाता है। उसी के नीचे बैठ बुद्ध को निर्वाण प्राप्त हुआ और बाद में वही महाबोधि मंदिर की स्थापना हुई। यूनेस्को ने इसे विश्व धरोहर में शामिल किया है। तब गंगा की सहायक नदी नैरंजना पास ही बहती थी। ये स्थान पटना से 96 किलोमीटर और गया से 15 किलोमीटर दूर है। जो इतनी बहस छिड़ी हुई है कि सनातन धर्म पुराना है या बौद्ध तो एविडेंस बताते हैं कि ब्रिटिश सेवा के इंजीनियर अलेंक्जेंडर कनिधंम ने जब 1878 में खुदाई की ये सब खुदाई 10वीं 12वीं सदी की है जिसमें 4 वी. ई. का पुराना ईंट का मंदिर मिला। सनातन धर्म के बाद बुद्ध के होने के ऐतिहासिक प्रमाण मिले है।

जिसके नीचे बुद्ध को बोध हुआ वहाँ एक बड़ा चार शाखाओं का वृक्ष था। बाद में इसकी इक शाखा अशोक के बच्चों महेंद्र, संघमित्रा ने श्रीलंका में लगाई, परंतु धीरे-धीरे जब ये पेड़ सूखने लगा। दरअसल बात ये हुई कि अशोक की पत्नी को यूं बौद्ध धर्म के लिये अशोक का समर्पित हो जाना अच्छा नहीं लगा सो उन्होंने उसको कटवा दिया। फिर पनपने पर राजा शशांक जो बौद्ध धर्म की बढ़ती लोकप्रियता से क्रोधित थे उन्होंने भी इसे कटवाया। बाद में जो पौधा श्रीलंका में रोपे गए इस पेड़ के एक भाग की एक शाखा लाकर यहां लगाई गई। आज यह वृक्ष काफी घना है। 12वीं शताब्दी के दौरान दिल्ली के कुतुबुद्दीन ऐबक और बखियार खिलजी के नेतृत्व में मुस्लिम तुर्क सेनाओं ने इस मंदिर पर आक्रमण कर इसे जीर्ण शीर्ण कर दिया। अब ये मंदिर अच्छी अवस्था में है। हालांकि यहाँ जगह-जगह लिखा गया है कि प्रतिमा को सुनहरे रंग से रंगना मना है तब भी एक जापानी पत्थर की मूर्ति को छोड़ सभी गोल्डन रंग की है। मंदिर में बुद्ध धर्म के हिसाब से फूलों से सजावट थी। वहीं रतनयान एक जगह थी जहां बुद्ध भूखे बैठे थे। वहाँ दो व्यापारियों ने उन्हें भोजन कराया था। बीच की भूमियों में बुद्ध अनुयायी ने ध्यान के लिए जगह बना रखी थी। बुद्ध के मंदिर से सटा हुआ जगन्नाथ मंदिर और दूसरी तरफ मस्ज़िद थी।

अभी 10 साल पहले असामाजिक तत्वों ने बौद्धि मंदिर और गया में बम रख दिया था। मंदिर का थोड़ा हिस्सा ही क्षतिग्रस्त हो पाया जिसे सुधार दिया गया है। इसलिए मोबाइल संबंधित सुरक्षा बढ़ा दी। हालांकि उतनी सुरक्षा व्यवस्था, पुलिस नहीं नज़र आई। एक बात बहुत अजीब लगी कि गया नदी, मंदिरों को छोड़ बहुत सारे लोग बोधि मंदिर में पंडितों के साथ पितृ तर्पण कर रहे थे और काफी गंदगी फैला रहे थे। हालांकि मैंने बुद्ध स्थान पर शांति और सफाई देखी है। ध्यान के लिए हालांकि एक वृक्ष के नीचे मुझे एक स्थान मिला वहाँ एक वियतनामी बुद्ध अनुयायी से मुलाकात हुई। वहां माइक पर बुद्ध के सिद्धांत सुनाये जा रहे थे वे सब यात्रा पर निकले लोग थे।

हाँ बीच की एक बात बताना भूल गई। बुद्ध बंदरों की वजह से ध्यान नहीं कर पाते थे। तब वो नीचे उतर कर आये और एक जगह ध्यान करने लगे तब ही अचानक आंधी आ गई ये बुद्ध का ध्यान का छठवाँ सप्ताह था। नागराज मुचलिंडा ने अपने फन फैलाकर उनको छाया दी। उसी नाम से राजा मुचलिंडा व बुद्ध की प्रतिमा सरोवर में स्थित है जिसे मुचलिंडा सरोवर कहते हैं। अब हम महान बुद्ध प्रतिमा देखने गए जो 80 फीट की हैं इन्हें जापानियों ने बनवाया है जिसमें बुद्ध कमल पर बैठे हैं। ये बलुआ पत्थर और ग्रेनाइट की है। इसे 12,000 पत्थरबाजों ने 7 साल में बनाया था। मंदिर के अंदर एक खोखली सीढ़ी है जो छाती तक जाती है इसी के साथ 16,300 कांस्य प्रतिमायें हैं

अब विदेशियों की मठों की छटां देखते हैं। महाबोधि मंदिर से 650 मीटर की दूरी पर थाई मठ है। यहाँ 25 मीटर ऊंची कांस्य प्रतिमा है। यहाँ सुनहरे टाइल लगे हैं। यहाँ सुबह शाम ध्यान होता है जगह भी साफ सुथरी है। फिर इंडोसन निप्पौन जापानी मंदिर देखा। यहाँ पूरी दीवारों पे जापानी पेंटिंग है जैसे कि मैंने सारनाथ में भी देखी है। जापानियों का नेक इरादा बुद्ध धर्म को संरक्षित करने का था। वहाँ उनके द्वारा गरीब बच्चों के लिए स्कूल चलाये जा रहे हैं। भारत सरकार से अतिक्रमण हटा कर बुद्ध के समय जैसा वन हुआ करता था वैसा वो लोग बनवाना चाहते हैं। यहाँ चिड़ियाँ बहुत है हमने कुछ चिड़िया को आज़ाद कर पुण्य कमाना चाहा, तो भीड़ लग गई। सारनाथ में बुद्ध के प्रिय हिरण अभी भी मिलते हैं। फिर रॉयल भूटान मंदिर बाहर से देखा इसे महान जागृति मंदिर भी कहते हैं। वज्रासन हम नहीं जा पाये। 43.1 किलोमीटर स्थित बराबर पहाड़ी गुफाएं जहाँ चट्टान कट वास्तुकला है जहाँ चार पहाड़ियाँ करण चैपड़ सुदामा विश्वकर्मा, लोमस ऋषि गुफायें हैं यहाँ जैन हिंदू मूर्तियाँ भी हैं।

बौद्धगया पुरातत्व संग्रहालय 11 शताब्दी ई.पू. की मूर्तियों कलाकृतियों से सुसज्जित हैं। बहुत विशाल संग्रहालय है जहाँ दलाई लामा, बुद्ध मैत्रयी की छवियों की कलाकृति है एक दलाई लामा टैम्पल है जहाँ दलाई लामा आकर ठहरते हैं। संग्रहालय में ही बहुत बड़ा कॉन्फ्रेंस हाल है जहाँ देश-विदेश से लोग आते हैं।

बड़े कार्यक्रम होते हैं। ऐसे ही एक रॉयल भूटान मठ जिसमें आयामी मिट्टी की नक्काशी की गई है। कुल मिलाकर मन प्रफुल्लित हुआ परंतु जाने क्यों लगा कि हम बहुत जल्दी इन्हें लुप्त होता देखेंगे कि किवदंतियां इतिहास में आती ही हैं। नालंदा का जला हुआ भाग देखने को मन नहीं हुआ क्योंकि उसकी लाइब्रेरी की भव्यता के बारे में पढ़ चुकी हूँ। गंदगी और धर्म की लड़ाई, सरकार की उदासीनता एक पवित्र शांति स्थल की शांति भंग कर रही है।

सेहत

❐ डॉ. सत्यकांत त्रिवेदी

कंसल्टेंट साइकियाट्रिस्ट एंड साइकोलॉजिकल एनालिस्ट

एडीएचडी : बहादुर आलिया आपका धन्यवाद

हाल ही में, आलिया ने एक प्राइवेट चैनल पर अपनी कंडीशन–एडिटेंशन डेफिसिट हाइपर एक्टिविटी डिसऑर्डर (एडीएचडी) का जिक्र किया। ये कदम बहुत साहस वाला था, और मैं उनकी तारीफ करता हूं कि वो खुलकर मेंटल हेल्थ पर बात कर रही हैं। मेंटल हेल्थ से जुड़े इश्यूज पर बात करना बहुत ज़रूरी है, ताकि लोग बिना किसी हिचक के अपनी परेशानियां शेयर कर सकें और सही इलाज पा सकें। आइए, इस आर्टिकल में हम एडल्ट एडीएचडी को समझने की कोशिश करते हैं।

एडीएचडी क्या है

एडीएचडी का अक्सर बच्चों में ही डायग्नोसिस होता है, लेकिन ये एडल्ट्स में भी हो सकता है। ये एक माइंड का डेवलपमेंटल डिसऑर्डर है, जिसमें किसी को फोकस करने, ऑर्गनाइज़ रहने, टाइम मैनेजमेंट, और सेल्फ-कंट्रोल में दिक्कत होती है। अगर बचपन में इसका पता नहीं चला तो ये एडीएचडी एडल्ट लाइफ में भी चलता रहता है और किसी के कामकाज और पर्सनल लाइफ पर बुरा असर डाल सकता है।

लक्षण और चुनौतियां

एडल्ट एडीएचडी के लक्षणों में ध्यान की कमी, इम्पल्सिविटी, टाइम मैनेजमेंट में प्रॉब्लम्स, और मल्टीटास्किंग में कठिनाई शामिल हैं। ये लक्षण किसी के लाइफ के अलग-अलग पहलुओं–जैसे काम, रिश्ते, और सोशल सिचुएशंस–पर असर डाल सकते हैं।

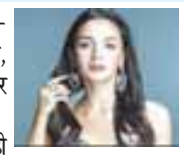

फोकस करने में दिक्कत- एडीएचडी से जूझ रहे लोग काम के दौरान छोटी-छोटी चीज़ों से डिस्ट्रैक्ट हो जाते हैं। इससे उनकी प्रोडक्टिविटी कम हो जाती है और करियर में आगे बढ़ने में प्रॉब्लम्स आती हैं।

टाइम मैनेजमेंट और देरी- कई एडल्ट्स जिन्हें एडीएचडी है, वो टाइम पर काम पूरा नहीं कर पाते। वो चीज़ों में देरी करते हैं या डेडलाइंस का पालन नहीं कर पाते।

इम्पल्सिविटी-कई बार बिना सोचे-समझे रिएक्ट करना या फैसला लेना एडीएचडी के कारण होता है। इससे उनके रिश्तों में प्रॉब्लम्स आ सकती हैं।

असंगठन- एडीएचडी वाले एडल्ट्स अक्सर चीज़ें भूल जाते हैं या उन्हें ऑर्गनाइज़ रखने में दिक्कत महसूस करते हैं। इससे पर्सनल और प्रोफेशनल लाइफ में चैलेंजेस आ सकते हैं।

समाज में एडीएचडी की समझ की कमी

हमारे समाज में एडीएचडी की समझ अभी भी कम है। एडल्ट्स में इस कंडीशन से जूझ रहे लोगों को अक्सर 'आलसी', 'अनुशासनहीन', या 'बेपरवाह' समझा जाता है। असल में, ये एक न्यूरोलॉजिकल कंडीशन है, और इसे इग्नोर करना या 'आलस्य' का नाम देना गलत है। एडीएचडी किसी के ब्रेन की फंक्शनिंग को प्रभावित करता है, जिससे उनके लिए फोकस करना और काम को ऑर्गनाइज़ करना मुश्किल हो जाता है।

इलाज और समाधान

एडीएचडी के इलाज में सबसे जरूरी है इसका सही डायग्नोसिस। अगर एडल्ट एडीएचडी का पता न चले तो लोग अपनी लाइफ में लगातार स्ट्रेस, कम आत्म-सम्मान, और असफलता का अनुभव कर सकते हैं। लेकिन सही ट्रीटमेंट और सपोर्ट से एडीएचडी वाले लोग अपनी लाइफ में बैलेंस और सक्सेस पा सकते हैं।

मेडिकल ट्रीटमेंट और काउंसलिंग

एडल्ट एडीएचडी का इलाज आमतौर पर मेडिसिन और कॉग्निटिव-बिहेवियरल थेरेपी (CBT) के कॉम्बिनेशन से किया जाता है। दवाइयां ब्रेन की केमिकल प्रोसेस को सुधारने में हेल्प कर सकती हैं, जिससे फोकस करना आसान हो जाता है। थेरेपी से लोग अपने नेगेटिव थॉट्स और बिहेवियर पर काम कर सकते हैं।

लाइफस्टाइल में बदलाव

टाइम मैनेजमेंट और ऑर्गनाइज़ रहने के लिए कुछ टूल्स और टेक्नीक का यूज करके भी एडीएचडी के लक्षणों को कंट्रोल किया जा सकता है। जैसे, एक प्लान बनाना, अलार्म सेट करना, प्रायोरिटी वाले काम पहले करना आदि। रेगुलर एक्सरसाइज, मेडिटेशन, और बैलेंस्ड डाइट भी मेंटल हेल्थ में सुधार ला सकते हैं।

मेंटल हेल्थ के प्रति जागरूकता

आलिया जैसे पब्लिक फिगर जब अपने एक्सपीरियंस शेयर करते हैं, तो इससे मेंटल हेल्थ से जुड़े इश्यूज को समझने में हेल्प मिलती है। उनकी ये ईमानदारी उन लाखों लोगों के लिए इंस्पिरेशन बन सकती है जो एडीएचडी जैसी कंडीशन से जूझ रहे हैं। उनके इस खुलासे से ये मैसेज मिलता है कि मेंटल हेल्थ कोई शर्म की बात नहीं है और इसे छुपाने की बजाय खुलकर मदद मांगनी चाहिए।

निष्कर्ष

वयस्क एडीएचडी एक रियल और चैलेंजिंग कंडीशन है, लेकिन सही सपोर्ट और ट्रीटमेंट से इसे कंट्रोल किया जा सकता है। मेंटल हेल्थ पर खुलकर बात करने से समाज में अवेयरनेस बढ़ती है और ये समाज को मेंटल हेल्थ के प्रति ज्यादा संवेदनशील बनाती है। आलिया ने अपने एक्सपीरियंस को शेयर करके मेंटल हेल्थ से जुड़ी चुप्पी को तोड़ने की कोशिश की है। ये हमें सिखाता है कि मेंटल हेल्थ के इश्यूज को छुपाने की बजाय खुलकर मदद मांगने और अपनी कंडीशन को एक्सेप्ट करने में ही सच्चा साहस है। मेंटल हेल्थ का महत्व समझें, अपनी फीलिंग्स शेयर करें, और अपनी कंडीशन को एक्सेप्ट करने से न हिचकें-यही पहला कदम है बेटर मेंटल हेल्थ की ओर।

कही-सुनी

रवि भोई

(लेखक पत्रिका समवेत सृजन के प्रबंध संपादक और स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

रायपुर दक्षिण विधानसभा में चली बृजमोहन अग्रवाल की

सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने रायपुर दक्षिण विधानसभा सीट में पूर्व सांसद सुनील सोनी को भाजपा प्रत्याशी बनवाकर अपनी ताकत दिखा दी। बताते हैं रायपुर दक्षिण विधानसभा सीट के लिए प्रत्याशी चयन में पूरी तरह बृजमोहन अग्रवाल की ही चली। रायपुर दक्षिण विधानसभा सीट से टिकट के लिए सुनील सोनी के अलावा दो दर्जन से अधिक भाजपा नेता दावेदार थे। सुनील सोनी रायपुर से निर्वाचित महापौर रह चुके हैं। चर्चा है कि बृजमोहन ने सुनील सोनी को टिकट देने की जिद पर अड़े रहे। बृजमोहन अग्रवाल रायपुर दक्षिण विधानसभा से आठ बार विधायक रहे हैं। बृजमोहन अग्रवाल की क्षेत्र में मजबूत पकड़ मानी जाती है। 2023 के लोकसभा चुनाव में पार्टी हाईकमान ने सुनील सोनी की टिकट काटकर बृजमोहन को सांसद का चुनाव लड़वाया था। अब कहा जा रहा है कि सुनील सोनी को चुनाव जितवाने की जिम्मेदारी भी बृजमोहन की ही होगी। कांग्रेस ने अभी रायपुर दक्षिण विधानसभा सीट के लिए उम्मीदवार घोषित नहीं किया है, पर हल्ला है कि कांग्रेस प्रत्याशी भी बृजमोहन की पसंद का ही होगा। कांग्रेस कह रही है कि रायशुमारी के बाद वह प्रत्याशी तय करेगी। कांग्रेस से प्रमोद दुबे, राजीव वोरा,पारस चोपड़ा समेत कई लोगों का नाम चर्चा में है। खबर है कि कांग्रेस नेता प्रमोद दुबे नामांकन फार्म भी खरीद चुके हैं।

कई आईएएस अफसरों की उड़ी नींद

कहते हैं डीएमएफ घोटाले में ट्राइबल डिपार्टमेंट की अफसर माया वारियर की गिरफ्तारी से कई आईएएस अफसरों की नींद उड़ गई है। चर्चा है कि माया की गिरफ्तारी के बाद ईडी के टारगेट में कोरबा में कलेक्टर रहे आईएएस अफसर आ सकते हैं। ईडी ने पिछले दिनों माया वारियर के साथ कोरबा कलेक्टर रही रानू साहू को भी गिरफ्तार किया। बताते हैं डीएमएफ मामले में गिरफ्तारी से आईएएस अफसरों में खलबली मची है। खबर है कि ईडी डीएमएफ मामले में दंतेवाड़ा, रायगढ़ और जांजगीर समेत कुछ अन्य जिलों के दस्तावेजों को खंगाल रही है और जानकारियां मंगा रही है। भूपेश बघेल के राज में डीएमएफ घोटाले का जिक्र केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने किया था। इस कारण माना जा रहा है कि ईडी डीएमएफ घोटाले की तह तक जाएगी।

कबीरधाम के नए एसपी के छुट्टी पर ?

कबीरधाम ज़िले के लोहारडीह गांव में पिछले महीने घटी घटना के बाद पदस्थ एसपी राजेश कुमार अग्रवाल की लंबी छुट्टी पर जाने की खबर है। डीएस छवाई को प्रभारी एसपी बनाया गया है। सरकार ने सितंबर में डॉ अभिषेक पल्लव को हटाकर राजेश कुमार अग्रवाल को कमान सौंपी है। दो महीने पूरे नहीं हुए हैं और नए एसपी के छुट्टी पर जाने बात सामने आ रही है। कबीरधाम गृहमंत्री विजय शर्मा का गृह जिला है और वे वहां से विधायक भी हैं। लोहारडीह गांव की घटना को लेकर कांग्रेस ने सरकार और गृहमंत्री पर जबरदस्त दबाव बनाया था। इस मामले में कई लोग अभी जेल में हैं, तो एक व्यक्ति की पुलिस कस्टडी में मौत भी हो गई। इस घटना के बाद पुलिस पिटाई को लेकर कई वीडियो वायरल भी हुए।

सिंचाई विभाग में अजब-गजब खेल

बताते हैं छत्तीसगढ़ के महाधिवक्ता ने सिंचाई विभाग के दो कार्यपालन अभियंताओं को दंडित करने के लिए मुख्य सचिव और विभाग के सचिव को पत्र लिखा, उनमें से एक कार्यपालन अभियंता को सिंचाई विभाग ने पुरस्कृत कर दिया। उन्हें कार्यपालन अभियंता से प्रभारी अधीक्षण अभियंता बना दिया। चर्चा है कि प्रभारी अधीक्षण अभियंता बनने वाले साहब पिछली सरकार में भी खूब मलाई काटी। तब कांग्रेस राज में उन्हें तत्कालीन सिंचाई मंत्री का करीबी बताया जाता था। कहा जा रहा है कि महाधिवक्ता ने मुख्य सचिव और सचिव को पत्र लिखकर दोनों कार्यपालन अभियंताओं पर चिटिंग का आरोप लगाया है। जानकारी के अनुसार महाधिवक्ता ने दोनों कार्यपालन अभियंता पर कार्रवाई के लिए 27 सितंबर को पत्र लिखा और जल संसाधन विभाग ने 14 अक्टूबर को उनमें से एक को नया ताज पहना दिया। है न सिंचाई विभाग का अजब-गजब खेल।

बच गए सूरजपुर एसपी

बताते हैं सूरजपुर कांड में एसपी एमआर अहिरे जाते-जाते बच गए। चर्चा है कि गृहमंत्री विजय शर्मा सूरजपुर में हेड कांस्टेबल की पत्नी और बेटी की निर्मम हत्या के बाद एसपी को हटाने के पक्ष में थे। कहते हैं इसके लिए मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय सहमत नहीं हुए। मुख्यमंत्री ने आनन-फानन में अब कोई कदम उठाने से साफ़ मना कर दिया। सरकार ने बलौदाबाजार की घटना के बाद एसपी सदानंद कुमार और कवर्धा कांड के बाद एसपी डॉ अभिषेक पल्लव को जिले से हटा दिया था। बलौदाबाजार की घटना के बाद एसपी को हटाने पर कहा गया कि सरकार दबाव में आ गई, वहीं कवर्धा कांड में एसपी पर कार्रवाई का श्रेय कांग्रेस ले गई। सरकार अब किसी मामले में कांग्रेस को फायदा लेने नहीं देना चाहती। इस कारण रणनीतिक रूप से सरकार ने सूरजपुर एसपी पर कार्रवाई टाल दी। माना जा रहा है कि आगे नियमित ट्रांसफर में वहां का एसपी बदल दिया जाएगा।

क्या रमेश बैस भाजपा कार्यालय में बैठेंगे ?

हल्ला है कि पूर्व सांसद और पूर्व राज्यपाल रमेश बैस जल्द ही प्रदेश भाजपा कार्यालय में नियमित बैठेंगे, उन्हें कुशाभाऊ ठाकरे परिसर में कमरा दिया जाएगा। कहा जा रहा है कि कमरे का निर्धारण संगठन महामंत्री पवन साय करेंगे। रमेश बैस पिछले दिनों भाजपा के सक्रिय सदस्य भी बन गए। रमेश बैस के सक्रिय राजनीति में उतरने और रायपुर दक्षिण से चुनाव लड़ने की अटकलें भी थी। माना जा रहा है कि पिछले दिनों भाजपा के कुछ नेताओं की बैस से मुलाक़ात के बाद अटकलें चल पड़ी। कहा जा रहा है कि बैस के भाजपा दफ्तर में बैठने से पार्टी के नेता और कार्यकर्ता उनके अनुभव का लाभ ले सकेंगे।